केरल ज्योति

अप्रैल 2026

ISSN 2320-9976
Reference Resource Journal

ISO 9001: 2015

केरल हिंदी प्रचार सभा

आचार्य (बी.एड) प्रशिक्षण विद्यालय के वार्षिक समारोह का उद्घाटन केरल राज्य के उच्चशिक्षा परिषद के सदस्य सचिव डॉ.राजन वर्गीस दीप जलाकर कर रहे हैं।

डॉ.राजन वर्गीस उद्घाटन भाषण दे रहे हैं।

सभा के मंत्री अधिवक्ता (डॉ) मधु बी स्वागत भाषण दे रहे हैं।

सभागार में उपस्थित शिक्षक गण एवं छात्र-छात्राएँ।

केरलज्योति
केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

केरल हिंदी प्रचार सभा के संस्थापक
स्व. के वासुदेवन पिल्लै
पूर्व समीक्षा समिति
प्रो (डॉ) एन रवींद्रनाथ
डॉ के एम मालती
प्रो(डॉ) आर जयचन्द्रन
प्रो (डॉ) जयश्री एस आर
परामर्श मंडल
डॉ तंकमणि अम्मा एस
डॉ लता पी
डॉ रामचन्द्रन नायर जे
प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)
मुख्य संपादक
डॉ एम एस विनयचंद्रन
संपादक
डॉ रंजीत रविशैलम
संपादकीय मंडल
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)
सदानन्दन जी
मुरलीधरन पी पी
प्रो रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
डॉ नेलसन डी
प्रकाशन संयोजिका
अर्चना एस

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 63 दल : 1 अंक: **अप्रैल 2026**

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

तरंग - 2026 - **अधिवक्ता (डॉ) बी मधु** 6

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य – **प्रो.डी.तंकप्पन नायर** 7

दर्शन माला - **डॉ नेलसन डी** 9

नियति, कोयल की लड़की (कविताएँ) - **परवूर सोमनाथन** 10

महागुरु चट्टंबी स्वामिकळ् - मूल : **डॉ (प्रोफ़) ए एम उण्णिकृष्णन** / अनुवाद : **डॉ प्रिया राणी पी एस** 11

'तट की खोज और रानी नागफनी की कहानी': वर्तमान संदर्भ में **शरफुन्निसा के ई / डॉ नीरजा वी एस** 13

स्त्री स्वतंत्रता और सुरक्षा का प्रश्न आज भी क्यों? - **बिद्या छेत्री** 17

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत विषय सीखने वाले छात्रों के सामने आने वाली समस्याएँ - **जादव राकेष कुमार हसमुखलाल / प्रोफ सतीष पी पतक** 21

उपन्यासों में पुरुष विमर्श - एक अवलोकन - **राजलक्ष्मी जी** 25

किन्नर जीवन की दास्तानः 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा'- **डॉ जयश्री एस टी** 27

डिजिटल शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य और भविष्य - **रतिराम गढ़ेवाल** 31

पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच का द्वन्द्व - **अच्चाम्मा अब्राहम** 38

भाषागत विशेषताएँ : कामतानाथ के कथा साहित्य के विशेष संदर्भ में **लक्ष्मी एस** 41

सोशल मीडिया पर हिंदी की संपर्क भाषा के रूप में भूमिका - **रषीदा एन** 44

भारतीय नाटक और रंगमंच के लिए समर्पित एक व्यक्तित्व : प्रशांत नारायण - **डॉ पी जे शिवकुमार** 47

मानस कैलास - **मूलः मंजु वेल्लायणि**
अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर , डॉ.रंजीत रविशैलम 49

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 51

ज़िंदगी : एक लोलक – **मूल : श्रीकुमारन तंपी, अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार** 52

प्रश्नोत्तरी - **डॉ. रंजीत रविशैलम** 54

मुखचित्र : 2025 वर्ष के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता तमिल भाषी यशस्वी कवि फ़िल्मी गीतकार एवं लोकप्रिय उपन्यासकार श्री वैरमुत्तु

लेखकों से निवेदनः

• हिंदी और इतर भारतीय भाषाएँ, साहित्य, संस्कृति आदि पर लिखी गई उच्च स्तरीय मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ आमंत्रित हैं। • भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि पर आयोजित समारोहों, चर्चाओं, संगोष्ठियों के समाचारों का भी स्वागत है। इन समाचारों को प्रस्तुत करने वाले का नाम और पूरा पता भी लिख भेजें। • भारतीय भाषाओं से अनूदित कविता, कहानी भी भेजें। उनके साथ मूल लेखक से प्राप्त अधिकार पत्र भी प्रेषित करें। • प्राकाशनार्थ रचनाएँ **डी.टी.पी.** करके भेजें। कृपया कार्बन प्रति न भेजें। • स्वीकृत रचनाएँ यथासमय पत्रिका में प्रकाशित की जाएँगी। • आप ई-मेल द्वारा भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं। ई-मेल में Microsoft Word or Pagemaker फाइल में भेजिए। ई-मेल आईडी :khpsabha12@gmail.com • अपनी रचना के साथ पूरा पता (जिला, राज्य और पिनकोड सहित), लघु परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक, 'केरल ज्योति'
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम-695 014

सभा का मुख्यालय और उसकी गतिविधियाँ

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के वषुतक्काड में सभा का मुख्यालय स्थित है। सभा के मुख्य परिसर में सभा के संस्थापक मंत्री की पावन स्मृति में श्री वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिंदी ग्रंथालय, स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केंद्र, साहित्याचार्य महाविद्यालय, केंद्रीय हिंदी महाविद्यालय, टंकण और आशुलिपि संस्थान, परीक्षा भवन, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, राष्ट्रज्योति पब्लिशेर्स के प्रकाशन अधिकारी का कार्यालय, हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.एड) और केरल विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त शोध केंद्र हैं।

विज्ञापन दर (साधारण अंक)

	मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4 (रंगीन)	रु.2500.00	25,000.00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 (रंगीन)	रु.2000.00	20,000.00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.1000.00	10,000.00
साधारण पृष्ठ 1/2	रु.600.00	6,000.00
साधारण पृष्ठ 1/4	रु.350.00	3,500.00

एक प्रति का मूल्य रु. 40/- आजीवन चंदा : रु. 4000/- वार्षिक चंदा : रु. 400/-

A /c No. 57022786007 IFS Code : SBIN0070033
State Bank of India, Vazhuthacaud Branch

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, वषुतक्काडु, तिरुवनन्तपुरम-695 014.
दूरभाष:0471-2321378, 2329200, 2329459. फैक्स:0471-2329200 ई-मेल : khpsabha12@gmail.com

दूरभाष : 0471-2321378, 2329200, 2329459
फैक्स : 0471-2329459
मोबाईल: संपादक : 7898515222/ 9447657301

khpsabha12@gmail.com
www.keralahindipracharsabha.in

केरलज्योति
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
अप्रैल 2026

संपादकीय

60-वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार वैरमुत्तु को

वर्ष 2025 का ज्ञानपीठ पुरस्कार तमिळ् भाषा के कवि, गीतकार, उपन्यासकार श्री वैरमुत्तु रामस्वामी को प्रदान किया गया है। अकिलन (1975) और जयकांतन (2002) के पश्चात् 'ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले तमिल भाषा के तीसरे साहित्यकार हैं वैरमुत्तु। गीत एवं काव्य को समान अधिकार से वाग्देवता को समर्पित करनेवाले वैरमुत्तु की काव्य-संवेदना अधिकतर प्रकृति और श्रमशील नागरिक की अनुभूतियों को तीक्ष्ण करती नज़र आती है। 'लोकधर्मी चेतना' को मद्देनज़र रखते हुए आपने जो भी लिखा वह इतिहास बन प्रस्तुत है। सन् 1960 में हुए द्रवीडियन मूवमेंट का हिस्सा बनकर भाषा के दिग्गज सेवियों - पेरियार ई वी रामस्वामी, अन्नादुरै, करुणानिधि, सुब्रह्मण्य भारती, भारतीदासन एवं कण्णदासन के अनुयायी बने। शनैः-शनैः कविता रचना की ओर आकृष्ट हुए। उनकी कविता सहज कविता है, जीवन के बीच निःसृत और जीवन राग में निबद्ध।

तमिल सिनेमा इंडेस्ट्री के आप प्राण हैं। विख्यात् सिनेमा निदेशक भारतिराजा के निषलकल (1980) से आप इंडस्ट्री का हिस्सा बने। तबसे लेकर 40 वर्षों की निरंतर साधना रही और 7,500 से अधिक गीतों का प्रणयन किया जो अमूमन 'हिट' रहा। कल्लिक्काट्टु इतिहासम, करुवाच्चि काव्यम्, मूणराम उलगपोर, तमिषत्रुप्पाटै आदि 37 पुस्तकों के रचयिता वैरमुत्तु को उनकी विशिष्ट प्रदेयताओं के कारण अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हैं। उत्कृष्ट गीतकार (Lyricist) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार उन्हें सात बार प्रदान किए गए। छह बार तमिलनाटु सरकार का पुरस्कार, दस बार फिल्म फेअर अवार्ड, SIIMA अवार्ड छः बार, सात बार विजय अवार्ड आदि अनेक पुरस्कार उन्हें फिल्मी गीतकार के रूप में प्राप्त हैं। उत्कृष्ट साहित्य सेवी के रूप में एस पी अडित्तनार लिटेररी अवार्ड (तनीर देसम - उपन्यास), कल्लिक्काट्टु इतिहासम के लिए 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2009 में साधना सम्मान, 2013 में 'मूनराम उलगपोट' (उपन्यास) के लिए इलक्किय सिन्तनै अवार्ड, 2013 में तनश्री के आर सोमसुंदरम लिटरेचर फाउन्टेशन अवार्ड आदि उन्हें प्राप्त प्रमुख पुरस्कार हैं। इसके अलावा कलैमामणि अवार्ड (1990), पावेंदर अवार्ड (1990) आदि अन्य पुरस्कार भी उन्हें प्राप्त हैं। आपकी उत्कृष्ट साहित्यसेवा और मानव सेवा (वैरमुत्तु एड्युकेशनल ट्रस्ट, वेट्रि तमिषर पेरावै आदि के द्वारा) के लिए वर्ष 2003 में पद्मश्री और 2014 में पद्मभूषण अलंकरणों से राष्ट्र ने आपका समुचित आदर किया है। आपको प्राप्त पुरस्कारों की सूची बहुत लंबी हैं। साहित्य के प्रति आपकी निष्ठा एवं निस्वार्थ सेवा हेतु 60 वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार भी आपको प्रदान किया गया है।

पुण्यकृति श्री वैरमुत्तु का साहित्य विश्व साहित्य के संदर्भ में भारतीय वाङ्मय का अनूठा उपहार है। 'मनुष्य जीवन' उनके साहित्य के केंद्र में सदा ही रहा। वह जीवन की अर्थवत्ता और चारुता की खोज है। गद्य हो या पद्य, दोनों में आपकी उपस्थिति सरल रूप से होती है, जो पाठकों को उनके साहित्य से रूबरू कराने में सफल सिद्ध कराता है। एतदर्थ उनकी नवीनतम श्रेष्ठ उपलब्धि पर समूचे केरल हिंदी प्रचार सभा परिवार का स्नेहिल अभिनंदन।

डॉ. रंजीत रविशैलम
(संपादक)

तरंग - 2026

अधिवक्ता (डॉ) बी मधु

केरल हिंदी प्रचार सभा के अधीनस्थ कार्यरत आचार्य कॉलेज ऑफ टीचर एज्यूकेशन के (बी एड प्रशिक्षण महाविद्यालय) वर्ष 2024-26 बाच का वीर्षिक दिवस समारोह 27.03.2026 को सभा के एम के वेलायुधन नायर सभागार में शानदार तरीके से संपन्न हुआ। एक दिवसीय उत्सवधर्मी कार्यक्रम को 'तरंग-2026' (A day to celebrate joy and togetherness) नाम से छात्र-अध्यापक गण द्वारा अभिहित किया गया।

केरल राज्य के उच्च शिक्षा परिषद (Kerala State Higher Education Council) के सदस्य-सचिव (Member Secretary) डॉ राजन वर्गीस ने भद्रदीप जलाकर सम्मेलन का भव्य उद्घाटन किया।

शिक्षा की बुनियादी समस्याओं का संक्षिप्त संकेत कर उन्होंने अपने भाषण में बताया कि आधुनिक शिक्षा-तकनीकी संप्रदायों ने संपूर्ण विश्व में एक नवीन क्रांति-चेतना उत्पन्न की है। अध्यापन विधियों में एवं पाठ्यक्रमों में संगत परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य का बारीक विश्लेषण भी किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी 2020), 4 वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई टी ई पी), एन सी टी ई, एन सी ई आर टी, राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एन आई आर एफ़), शैक्षिक पात्रता परीक्षा (टी ई टी) आदि के लक्ष्यों को ध्यान में रखकर; सरकारी नीति के अनुकूल शैक्षिक-क्रियाविधियाँ कार्यान्वित करने के संबंध में (सकारात्मक व नकारात्मक मुद्दों पर विवेचना) बड़ी महत्वाकांक्षा प्रकट की गई। शिक्षा-प्रशिक्षण के क्षेत्र में सराहनीय रूप से क्रियारत केरल हिंदी प्रचार सभा के प्रति साधुवाद भी दिया गया।

सभा के मंत्री होने के नाते इसी संदर्भ में अपने भाषण में इस बात का समर्थन किया गया कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से छात्र-शिक्षक की समग्र उन्नति ही सभा का मकसद है। SGOU के साथ केरल हिंदी प्रचार सभा का गठबंधन ऐतिहासिक महत्व का है। यह सहसंबंधित कार्यान्वयन समग्र शैक्षिक विकास-पथ पर मील का पत्थर बनेगा। खेद की बात तो यह हुई कि हाल ही में आचार्य कोर्स की मान्यता एवं पात्रता के संबंध में फैल-उड़ी अफ़वाह से सभा के अधिकारीगण एवं विद्यार्थियों को बहुत बड़ा अफ़सोस से गुज़रना पड़ा। हमें दोषी ठहराने का खूब प्रयत्न किया गया। लेकिन हमारे आवेदन-निवेदन - प्रतिवेदन के ठोस कारण राज्य शिक्षा मंत्रालय से एवं संबद्ध सरकारी विभाग से सभा की द्विवर्षिय बी एड् कोर्स की मान्यता तथा पात्रता संबंधी सरकारी आदेश पुनः प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई। केरल हिंदी प्रचार सभा के सकारात्मक शैक्षिक अभियान में यह बड़ी उपलब्धि है।

बी एड प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्या डॉ मधुबाला जयचंद्रन ने अंग्रेज़ी और हिंदी में प्रौढ़ वार्षिक रिपर्ट विस्तार से प्रस्तुत की। 'केरल ज्योति' के मुख्य संपादक डॉ एम एस विनयचंद्रन, कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री आर राजेंद्रन आदि मंच पर उपस्थित रहे।

'पुरस्कार वितरण' एवं 'रंगारंग कार्यक्रम' का भव्य आयोजन भी रहा।

मंत्री, केरल हिंदी प्रचार सभा

राजा रविवर्माचरित महाकाव्य

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

नवम सर्ग

रामस्वामी नायिकर और आरुमुखं पिल्लै

1. सामंत एवं राजा लोग समझते थे महत्तर पाश्चात्य
चित्रकारों से चित्र खिंचवाकर रखना और भारतीय चित्रकार
खींचने लगे इनसे मिलकर पाश्चात्य शैली के तैलचित्र और उस
समय के प्रसिद्धिप्राप्त चित्रकार थे सेवकराम, ईश्वरीप्रसाद आदि।

2. उस समय भारत में होनेवाला परिवर्तन हुआ प्रतिफलित
केरल में भी और उस वक्त अंग्रेज़ी शासन के प्रभाव में
टाल दिया गया हमारी संस्कृति की अस्मिता की रचनाओं को
और तैल चित्र रचना को शामिल नहीं किया गया पाठ्यक्रम में।

3. रविवर्मा ने महाराज आयिल्यम् तिरुनाळ् को जतायी
तैलचित्र रचना सीखने की अभिलाषा और इस संबंध में
बात की महाराज ने राजराजवर्मा से और तिरुवनन्तपुरम में
अन्वेषण जारी रहा अन्दर और बाहर के चित्रकारों का ।

4. अन्त में खोज निकाले गये तिरुवितांकूर से तैलचित्र
रचना में विख्यात मदुरै निवासी रामस्वामी नायिकर और
वे थे आश्रित युवराजा विशाखं तिरुनाळ् के और उन दिनों
बिगड़ा हुआ था युवराज और महाराज के बीच का संबंध ।

5. इसलिए तैयार नहीं हुए नायिकर रविवर्मा को तैल
चित्रकला सिखाने को और तैयार भी नहीं हुए रविवर्मा की
चित्र रचना प्रतिभा का अंगीकार करने के लिए भी और उन्होंने
असल में प्रकट किया था अंतःपुर की आपसी होड़ को ही।

6. उस समय तिरुवनन्तपुरम में तैल चित्र रचना के जानकार
दूसरे चित्रकार थे रामस्वामी नायिकर के शिष्य आरुमुखम
पिल्लै और वे हुए तैयार रविवर्मा को तैल चित्र संप्रदाय सिखाने
के लिए बिना सूचना दिये विशाखं तिरुनाळ् और नायिकर को ।

7. रातों रात पहुँचते थे आरुमुखमपिल्लै महल में और
देते थे विधिवत् शिक्षा रविवर्मा को ओर वे तैलचित्र
रचना रीति सीख गये जल्दी ही और वे तत्पर थे शुरू से ही
रांगों को घोलकर नये रंग तैयार करने की रीति में।

8. तैलचित्र का अध्ययन ले गया रविवर्मा को नये रंगों की
दुनिया में शायद इसका कारण बना होगा एक सीमा तक
पाश्चात्य रचनाओं की शैली पद्धतियों को सीखने को मिला
अवसर राजमहल के पुस्तकालयों से विदेशी चित्रकारों के चित्र।

9. इसके अतिरिक्त सीखी उन्होंने आरुमुखं पिल्लै से तेलचित्र
रचनाओं के विभिन्न रंगों के मिश्रण और मिश्रितों की
निर्माण-रीतियों की जानकारी और यों वे सीमित ज्ञान से
विशाल वर्णों की दुनिया से होकर करने लगे विचरण ।

10. उन दिनों कहने लगा रविवर्मा का मन कि मेरे अनुकूल है
जलरंग चित्रों से अधिक तैल चित्र रचना और प्रारंभ किया तैलचित्र
रचना प्रतिकृतियों से और पहले भी हुई उनसे मनुष्य के रूपों को
प्रधानता देनेवाली रचनायें और निमग्न हुए तैलचित्र रचना में।

11. अपने गुरु आरुमुखं पिल्लै से रखते थे रविवर्मा आदर का भाव
जिन्होंने समझाया था तैलचित्रों की तकनीकों के बारे में और
मिली थीं उन्हें रविवर्मा से बड़ी सहायतायें और पिल्लै को संभालना
पड़ा था जीवन के अन्त तक दरिद्र एक बड़े परिवार को।

12. इस बात पर इतिहासकार भी नहीं देंगे ध्यान लेकिन राजा रविवर्मा
इसे देते थे महत्व और उन्होंने मुम्बई में स्थापना करते समय
चित्रों का मुद्रण करनेवाले छापाखानों की एक बड़ी रकम भेज दी थी
पिताजी को और बाद में मैंने पिताजी की मृत्यु का समाचार दिया उन्हें।

13. समाचार पाकर हुए अत्यन्त दुःखी और तुरन्त ही दाह संस्कार का
जल लेने के लिए चाँदी का कलश और गुडुवे के साथ दिये उन्होंने
पचास रुपये और फिर एक दिन बुला लिया हमें और भरपेट खिलाया
और मुझे चारों भाइयों व माताजी को दी एक-एक सोने की अशरफी।

14. उस समय उनकी शंकाओं को दूर करनेवाला न था कोई और
विशाखं तिरुनाल के आश्रित रामस्वामी नायिकर नहीं थे कुछ भी
सिखानेवाले और तिरुवनन्तपुरम में थे आरुमुखं पिल्लै जो सिखा सकते थे
किन्तु नायिकर और अन्य लोग क्रुद्ध होंगे दिन में भाई के पास जाएं तो।

15. इस भय से मूडत्तमठ में जाया करते थे रात में ही और
कहती है रविवर्मा की बहन मंगलाबाई कि मैंने आरुमुखं
पिल्लै को देखा था किलिमानूर राजमहल में और आरुमुखं
पिल्लै से प्राप्त ज्ञान न था पर्याप्त उनके शंका निवारण में।

16. फिर भी अद्‌भुत थे रविवर्मा के आदिकालीन चित्र और
अभ्यास करके ही कठिन परिश्रम एवं आत्मविश्वास के साथ
रविवर्मा ने पायी सफलता और उल्लेखनीय हैं विशेष रूप से कि
उनके द्वारा खींचे गए सारे चित्र पसंद आए सब आस्वादकों को। (क्रमशः)

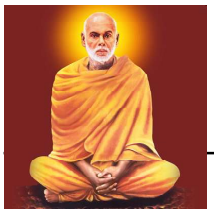

दर्शन माला

डॉ नेलसन डी

अध्यारोप दर्शन

(केरल के महान संत, ऋषि-कवि, समाज सुधारक श्रीनारायणगुरु द्वारा संस्कृत में रची गई वेदांत-संबंधी रचना है 'दर्शनमाला।' दस-दस श्लोकों के दस भाग इसमें समाहित हैं। मुनि नारायण प्रसाद की मलयालम-व्याख्या का हिंदी भाषांतरण डॉ नेलसन डी ने तैयार किया है। - संपादक)

2

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

प्रकृति कृति के साथ होने के कारण उससे हमेशा एक-एक प्रकट होता जा रहा है। यह अण्डकटाह-कोटि इस प्रकार प्रकट होने वाली है। कैसे प्रकट होती है? योगियों के सिद्धिजाल की तरह। योगी का दिखाया हुआ सिद्धजाल कहाँ बैठा? कैसे बैठा? उनमें ही था योग-वैभव के रूप में। विभव से सम्बन्ध वाला है वैभव। विशेष रूप में, एक से दूसरे अलग होने की तरह, एक-एक जन्म लेकर आने वाली प्रकृति है वैभव। उसकी जो साध्यता भीतर मौजूद होती है वही वैभव है। यह साधारण वैभव नहीं, योग वैभव है। मतलब है कि अलग न कर सकने की तरह जोड़ा हुआ, अनन्य होने वाला वैभव। योगी से अनन्य होने वाला वैभव केवल एक-एक होने की साध्यता का ही नहीं, सिद्धिजाल के रूप में जो प्रकट होने वाला है वह भी योगी को अपने से अन्य नहीं है। वह प्रकृति की सहज क्रियात्मकता मात्र है। किन्तु योगी के सहज प्रकृति के स्वभाव और स्वरूप से अपरिचित उसे एक अद्भुत की तरह देखेगा। योगी सिद्धिजाल दिखाने का दावा करेगा और आध्यात्मिक सिद्धि के लक्षण की तरह उसे दिखाएगा। लेकिन योगी तो अपनी प्रकृति में, उसकी विकृतियों के साथ रहता है और कोई सिद्धिजाल नहीं दिखाता। अन्य जन योगी में सिद्धिजाल देखता है। योगी के और जन सामान्य के ज्ञान दो तरह के हैं। योगी के ज्ञान का स्तर जनसामान्य समझ नहीं सकेगा। योगी का ज्ञान-मार्ग जनसाधारण की दृष्टि में अद्भुत है। दूसरे श्लोक में कहा गया है कि मायावी का इन्द्रजाल प्रकटन और यहाँ कही हुई योगी की सिद्धि दोनों में परस्पर अन्तर होता है।

मायावी के दिखाते हुए इन्द्रजाल के प्रकटन उसके स्वाभाविक जीवन का भाग नहीं है, वासना के रूप में वे उसी में ही रहने पर भी केवल दूसरों को आस्वादित करने का सन्दर्भ आते समय वह उसे बाहर दिखाता है। दूसरे लोग देखते हैं कि योगी सिद्धियाँ दिखाता है। वास्तव में दूसरों को दिखाने के लिए वे कुछ नहीं करते। उनकी सहज प्रकृति प्रत्यक्ष रूप स्वीकार करने से दूसरों को इसे केवल सिद्धि लगेगी। योगी सबको अपने से अनन्य होकर ही देखता है। दूसरों से दिखाई देने वाली सिद्धियाँ योगी से भिन्न नहीं हैं। यहाँ इस प्रकार नहीं कहा गया है कि जगत्पिता इश्वर ने प्रपञ्च की सृष्टि अपने में की। कहा है कि ईश्वर अपने आप को ही विस्तार करके स्वयं प्रपञ्च बन गया। अर्थात् जिसे हम इश्वर की सृष्टि कहते हैं वह विश्व वास्तव में ईश्वर से अन्य नहीं है।

उन सिद्धिजालों के योग-वैभव देखकर अद्भुत प्रकटने वाले हम भी इश्वर से अन्य नहीं हैं। एक ही इश्वर स्वयं विस्तृत होकर विविध रूप में दिखाई देता है। यह विश्व और इसके हम और हमारे अनुभववेद्य अद्भुत भी जब तक इश्वर होगा तब तक ईश्वर की प्रकृति के रूप में रहेंगे। जादूगर का मायादृश्य ऐसा नहीं है।

इस प्रकार स्रष्टा-ईश्वर से हम वास्तव में अलग नहीं हैं। फिर क्यों इसके जाने बिना, हम अलग-अलग होकर देखते हैं और उसके फलस्वरूप जीवन दुख से भरा हुआ भी होता है। अगले श्लोक में यह एक नए उदाहरण के साथ व्यक्तकिया जाता है।

7. यदाऽत्मविद्यासंकोचस्तदाऽविद्या भयंकरम् ।
नामरूपात्मनाऽत्यर्थ विभातीह पिशाचवत् ।।

यदा - जिस समय; आत्मविद्या संकोचः - आत्मविद्या (अपने का स्वयं के बारे में होने वाला ज्ञान) बिल्कुल संकुचित होने वाला; तदा - उस समय; नामरूपात्मना - नाम और रूप होकर; पिशाचवत् - पिशाच की तरह; अत्यर्थ भयंकरम् - सबसे अधिक भय बनाने योग्य; अविद्या - बिना विद्या का; इह विभाति - यहाँ प्रकट रूप होता है।

प्रत्येक का स्वयं के बारे में होने वाला ज्ञान जब बिल्कुल संकोच होता है तब यहाँ नाम रूपों का आकार लेकर पिशाच की तरह सबसे बड़ा भय होने वाली अविद्या प्रकट रूप धारण करती है।

जब लगने लगता है कि प्रत्यक्ष में दिखाई देने वाला यह संसार इसी प्रकार सच्चाई ही है तब इसकी प्रसक्तिहोती है कि यह संसार और इसका जीवन भय उत्पन्न करने वाले हैं। यदि संसार न होने वाला मानता तो वहाँ भय होने का अवसर न होता। न होने वाला संसार कैसे भय कर सकता है? अतः जीवन में दुख का कारण क्या है, यह अन्वेषण भी अध्यारोप के सन्दर्भ में आता है। (क्रमशः)

दो लघु कविताएँ

परवूर सोमनाथन

नियति

नियति, तू इक देवी है,
धरती तेरा बगीचा
सभी मानव उसमें
विविध वर्णों के सुमन हैं।
कितने मानव-सुमन,
नाश नष्ट करता है तू
विकसित होने के पहले
भूतल पर उन्हें सुलाता है।
मानव-जीवन तेरा
खिलौना है क्या,
कई तेरी प्रशंसा करते हैं।
कई तुझे शाप देते हैं।
तू देता है कभी पतन,
तू देता है कभी उन्नति
तू देता है कभी अर्थ,
तू देता है कभी अनर्थ।
विपत्ति के आने पर
तुझपर सौंपता है उसे
भले ही, शाँति पाते हैं मानव
आकुल-बिना कर्म रत होते हैं।

कोयल की लड़की

हे कोयल की लड़की
तू ऊँचे तरु पर
घोंसला बनाकर
रहती है अधिक दिनों से
इच्छा है मेरे मन में,
तेरा गीत सुनने की
तेरे गीत का अर्थ
मुझ से कह दे।
मैं उसमें लीनकर
एक हो जाऊँ तेरे साथ
कब सीखा, तूने गान?
किसने सिखाया गान?
मुझसे कहता
तो मैं भी आऊँ।

हिंदी प्रचारक,
उदया हिंदी कॉलेज
दः परवूर, कोल्लम,
मो : 9142204086

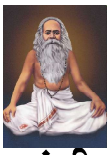

महागुरु चट्टंबी स्वामिकळ्

अनुवाद : डॉ प्रिया राणी पी एस

मूल : डॉ (प्रोफ़) ए एम उण्णिकृष्णन

(डॉ ए एम उण्णिकृष्णन मलयालम साहित्य के शीर्षस्थ आलोचक एवं भाषाविद हैं। आप केरल विश्वविद्यालय के मलयालम विभाग के दूरस्थ शिक्षा विभाग में प्रोफेसर व डीन के पद से सेव निवृत्त हो माँ भारती की सेवा में संलग्न हैं। अब केरल अध्ययन विभाग में एमिरेट्स-प्रोफसर के पद पर विराजमान हैं।)

3. कौन रहे थे चट्टम्पिस्वामीकळ् ?

तिरुवनन्तपुरम कण्णम्मूला के उल्लूरकोट्टु भवन में जन्मे श्री चट्टम्पिस्वामीजी औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके थे। हालाँकि माता-पिता, जो अत्यधिक गरीबी में थे, अपने बेटे की ट्यूशन फीस का भुगतान नहीं कर सकते थे, (अय्यप्पन उनका वास्तविक नाम था। लेकिन माता-पिता ने उन्हें 'कुञ्जन' नाम से पुकारा था।) फिर भी कुञ्जन ज्ञानी बन गये।

कुञ्जन के घर के पास के एक स्कूल में दाखिला लेने की कहानी सुनकर किसी को भी आश्चर्य होगा (1863), जहाँ कोल्लूर शास्त्री ब्राह्मण लडकों को पढ़ाते थे। शास्त्री बच्चों से एक दिन पूर्व पढाए गए पाठ से प्रश्न पूछ रहे थे। लेकिन उनके सवाल का किसी ने जवाब नहीं दिया। तब कहीं से सही उत्तर सुनाई देता है। शास्त्री को लगा कि वह एक निराकार ध्वनि है। उन्होंने बाहर आकर देखा । तब पाठशाला के बाहर एक लड़का नम्रता पूर्वक खडा है। वह कुञ्जन था। चूंकि उसे स्कूल में प्रवेश पाने की अनुमति नहीं थी, इसलिए वहीं छिपा हुआ था और पढा रहा था। शास्त्री ने उसे जिज्ञासापूर्व देखा। पढने की उनकी रुचि ने उन्हें प्रसन्न किया था। उन्होंने उसमें बुद्धि और ग्रहण शीलता की शक्तिदेखी जो उनके सामने रहने वाले अन्य बच्चों में नहीं थी। शास्त्री जी की उदारता से कुञ्जन को पाठशाला में भर्ती करा दी गई। बिना फीस दिये पढ़ाई करने की अनुमति मिली।

बाद में कुञ्जन पेटटा में रामन पिल्लै नामक शिक्षक की पाठशाला में (1866) शामिल हो गये और जल्दी ही खुद को कक्षा में सबसे चतुर छात्र साबित कर दिया। जब अध्यापक जी कक्षा में नहीं होता है तब बच्चों को पढाने और कक्षा संचालन की जिम्मेदारी उनपर आ गयी। बाद में उन्हें इस 'चट्टम्पि' उपाधि के नाम से जाना जाने लगा। मलयालम और गणित के अलावा कुञ्जन पिल्लै ने शास्त्र, तर्क और वेदांत का भी अध्ययन किया। तमिल और संस्कृत में भी अभिरुचि रखी गयी थी। उन्होंने दिन में पढाई करने और रात में पास के देवी मंदिर में ध्यान लगाने में बिताया। बाद में वे रामन पिल्लै द्वारा संचालित एक मंडली ज्ञानप्रज्ञागरम '(1872) में भी प्रमुख हो गये। इसी बीच एक अज्ञात तपस्वी का शिष्य होकर 'षणमुखदास' नाम (1867) स्वीकार किया।

घर की आर्थिक समस्याओं के कारण कुञ्जन पिल्लै को कम उम्र में ही कई काम करने पड़े। इसमें कोल्लूर मठ में लेखा-जोखा करना(1861), हजूर कच्चेरी (सरकारी सचिवालय) के निर्माण के लिए मिट्टी ले जाना (1868), और सचिवालय में लेखाकार का काम (1871) भी करते थे। ज्ञानप्रज्ञागरम में उनकी मुलाकात स्वामीजीनाथ

देशिकर से हुई , जिनसे तत्त्वज्ञान(1875) और तैक्काड अय्यागुरु से हठयोग की (1874) दीक्षा भी मिली। यूनिवेर्सिटी कॉलेज के अध्यापक सुन्दरम् पिल्लै से पाश्चात्य दर्शन भी प्राप्त किए। इसके साथ, संगीत, चित्रकला, शिल्प विद्या का अध्ययन भी किया तथा अक्षरश्लोक और समस्यापूरण में भी उनकी विशेष रुचि थी।

खुशी की बात तो यह है कि नवरात्री उत्सव के एक दिन उनकी मुलाकात कल्लडकुरिच्ची के सुब्बाजटापाठी से हुई। कुञ्जनपिल्लै के व्यक्तित्त्व में आकृष्ट होकर उस पंडित ने वापस जाते समय उन्हें भी साथ लिया। तमिल प्रांत में आये कुञ्जन पिल्लै उस गुरु और गुरु पत्नी को उनके अपना बेटा जैसा बन गया। दिन भर उस ब्राह्मण ने अपने अब्राह्मण शिष्य को कई तरह के अभ्यास व विद्या सिखायी। रात में कुञ्जन ने ग्रन्थों को पढ़कर खुद ही अन्य विद्याओं को अर्जित किया। तमिलनाडू में रहते समय उन्होनें अडितडा, (मारना और रोकना), वडिप्पयट्ट, मर्म चिकित्सा, ढोल - अवनद्ध वाद्य, देशी चिकित्सा आयुर्वेद आदि विद्याओं को विभिन्न गुरुओं से प्राप्त किए। एक मुसलमान पंडित को संस्कृत का अभ्यास कराया, उसके बदले उनसे अरबी और कुरान सीखा (1880)। बाइबिल में भी ज्ञान प्राप्त (1879) किया। लगभग चार साल तक के पठन की पूर्ति के बाद अपने देश में आते वक्त उन्होंने मरुत्वामला की एक गुफा में तपस्या की (1876-1879)। वहाँ से वापस आते समय एक अज्ञात योगी से उन्होंने अगस्त्य योग मार्ग और आंतरिक अंगों को बाहर निकालकर साफ करने की विद्या और जल स्तंभ, वायु स्तंभ आदि कई अन्य असाधारण अभ्यासों को भी प्राप्त किया। अपने देश में वापस आने के पहले ही राजयोग में भी कुञ्जन पिल्लै अग्रणी बन गये।

नागरकोविल के पास वडवीश्वर नामक एक गाँव के एक विवाह-पंडाल के समीप के जूठन के ढ़ेर के पास दीखे एक अपरिष्कृत मनुष्य ने कुञ्जन पिल्लै के जीवन को बदल दिया। कुञ्जन पिल्लै को देखकर उस आदमी ने वहाँ से भागने का प्रयास किया। कुञ्जन पिल्लै ने उसका पीछा किया। अंत में एक निर्जन स्थान पहुँचते ही उस आदमी ने कुञ्जन पिल्लै की छाती में हाथ रखा उनके कानों में एक दिव्य मंत्र(1881) सुनाया था। तभी कुञ्जन पिल्लै ने जो सुनना चाहते थे वह सुन लिया। तदुपरांत अखण्ड सच्चिदानंद अनुभूति में मग्न हो गये। उनके सामने एक मानव के रूप में आने वाला साक्षात् श्री परमेश्वर थे।

उसके बाद से कुञ्जन पिल्लै चट्टम्पिस्वामीजी नाम से जाना जाने लगे। वे अपना देश वापस आए। वह शंकराचार्य के वापसी यात्रा के समान था। मृत्यु शय्या में पडी अपनी माँ की देखभाल के लिए ही दोनों आए थे ।माँ की मृत्यु के बाद सभी लौकिक बंधनों से मुक्तचट्टम्पिस्वामीजी स्वतंत्र हो गये। 1099 मेडम 23(1924 मई 5) को महासमाधि में जाने के समय तक के 43 वर्ष एक परमात्मा की तरह वे अपनी अद्‌भुत लीलाओं से केरल का उद्धार करते रहे। बच्चों के सामने एक अच्छा साथी, गृहस्थ स्त्रियों को खाना पकाने का तकनीक और गृह चिकित्सा की विद्या भी सिखायी। वे घरवालों के लिए बुजुर्ग पंडितों के बीच महा पंडित और संन्यासी गण के बीच महा तपस्वी बने। लोग जिस रूप में उनको देखना चाहते हैं उसी रूप में वे उनके सामने खड़े हो जाते हैं। वे प्रेम के प्रतीक, ज्ञान के अवतार, अहिंसा का प्रतीक और सभी कलाओं के निपुण भी है। (क्रमशः)

'तट की खोज और रानी नागफनी की कहानी': वर्तमान संदर्भ में

शरफुन्निसा के ई / डॉ नीरजा वी एस

सारांश : 'व्यंग्य' साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। इसमें हास्य या उपहास का उपयोग मानव या समाज के दोषों की आलोचना करने के लिए किया जाता है। हरिशंकर परसाई जी ने व्यंग्य का उपयोग सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के लिए, इंसान की मुक्तिऔर सामाजिक परिवर्तन के लिए किया है। 'तट की खोज' उपन्यास में बहुत उम्र होते हुए भी शादी नहीं होनेवाली लड़कियों की पीड़ा, मानसिक संघर्ष, उनके पिता की मनोवैज्ञानिक स्थिति, माँ के बिना ज़िंदगी बितानेवाली लड़की की हालत, एक गरीब परिवार की आर्थिक समस्याएँ आदि अंकित है। शादी नहीं होने के बावजूद लड़कियाँ हताश या निराश न रहकर कॉलेजों में पढ़ती हैं और कोई अच्छी नौकरी करके अपनी ज़िंदगी आगे बढ़ाती हैं। परसाई जी का व्यंग्य उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी' हास्य से भरपूर है। सामंती वातावरण में लिखा गया इस उपन्यास में शिक्षा के प्रति धनिक वर्ग की अरुचि एवं प्रेम के खोखलेपन पर व्यंग्य है।

मूलशब्द : तट की खोज , सामाजिक समस्या, मानवीय संवेदना, रानी नागफनी की कहानी, भ्रष्टाचार

हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रमुख लेखक और व्यंग्यकार थे। नई पीढ़ी के प्रिय लेखक परसाई जी को उपन्यासकार के रूप में भी महत्वपूर्ण स्थान है। परसाई जी जन सामान्य के प्रवक्ता है। समाज के विभिन्न मुद्दों को लेकर उन्होंने व्यंग्यात्मक तरीके से साहित्यिक सृजन किया था। इससे जनता की समस्याओं को उजागर करने में मदद मिला। उनके लेखन का एक मिला-जुला ताना- बाना कहानी, रिपोतार्ज, उपन्यास, रेखाचित्र सब में प्रायः व्यंग्य किसी न किसी रूप में मौजूद हैं। अपनी रचना के संदर्भ में उन्होंने मुक्तिबोध की तरह फेंटेसी,बिंब आदि का प्रयोग किया है। वे अपने लेखन में समाज और राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार,शोषण,पाखंड और दोमुंहेपन पर तीखी आलोचना करते हैं। मानवीय मूल्यों की रक्षा करना भी उनकी रचनाओं की विशेषता है। 'रानी नागफनी की कहानी' में वे कहते हैं "मैं सशक्त साहित्य का संकल्प करके लिखने नहीं बैठता जो युग के प्रति ईमानदार नहीं होता, वह अनंत काल के प्रति कैसे हो लेता है,मेरी समझ से परे है।"[1] इस दृष्टि से वे हिंदी के सचेत लेखकों में है जिनकी दृष्टि अपने समय के यथार्थ पर है। उनके प्रमुख उपन्यास हैं- 'तट की खोज', 'रानी नागफनी की कहानी','ज्वाला और जल'। इनमें 'तट की खोज' और 'रानी नागफनी की कहानी' आदि उपन्यासों के वर्तमान संदर्भ की प्रासंगिकता व्यक्तकरना मेरा उद्देश्य है।

'तट की खोज' एक लघु उपन्यास है। इसको उन्होंने अपने कवि मित्र द्वारा बताए गए एक सत्य घटना पर आधार बनाकर लिखा है। शीला, महेन्द्रनाथ, विमल,और शीला के पिता आदि के इर्द-गिर्द घूमनेवाला उपन्यास है यह। शीला इसकी नायिका है। शीला के पड़ोसी महेन्द्रनाथ शीला से प्यार करता है। विमला शीला की सहेली है और मनोहर विमला का बडा भाई। शीला की शादी नहीं हो रही है। इसके पीछे का कारण यह है कि उनके पिता का आर्थिक रूप से कमज़ोर होना। बेटी के सर्वगुण संपन्न होने के पश्चात भी वह उसके लिए योग्य वर तलाश करने में नाकाम हो रहे हैं और उनकी परेशानी शीला से बर्दाश्त नहीं हो रही है। इसी दौरान उसे प्रेम भी होता है। पिताजी सरकारी रिटायर्ड नौकर थे और थोड़ी सी पेंशन पाते थे। वे ईमानदार थे। इसका सबसे बडा सबूत उनके गरीबी थी। माँ की मृत्यु पहले हो गई थी। जवान भाई एक दिन उन्हें छोड़ गया। पिता ने शीला के प्रति माँ, भाई, पिता तीनों के कर्तव्य निभाया था। शीला बी.ए. पढ रही थी। पर यथार्थ में किसी छोटे स्टेशन के मुसाफिर की तरह किसी गाड़ी का इंतज़ार कर

रही थी, जो उसको उठाकर ले जाए। इसका मतलब होता है शादी के इंतज़ार में बैठना। लेकिन छोटे स्टेशनों पर बड़ी गाड़ियाँ तो रुकती नहीं। इस अवसर पर मुसाफिरखाने में जाकर इंतजार करते है यानी कॉलेज में दाखिला लेते है।

उपन्यास की नायिका शीला ये मानने से इंकार कर देती है कि लड़की की जीवन रूपी कश्ती के लिए ससुराल ही एक तट है। वह अपने लिए एक तट की खोज में निकल पड़ती है। इस उपन्यास की नायिका शीला एक सशक्त नारी है। वह दुख सहती है, टूटती है लेकिन उसके बाद जुडने का प्रयास भी करती है। ऐसी नारी हम अपने समाज में देख सकते हैं। दहेज के कारण अपनी बेटी की शादी नहीं होने पर परेशान होनेवाले एक पिता को भी इसमें चित्रित किया गया है, जो आज भी हमारे सामने मौजूद है। उपन्यास के सभी पात्र सामाजिक यथार्थ से मिले-जुले हैं।

'रानी नागफनी की कहानी' एक फेंटसी उपन्यास है जिसका उद्देश्य समाज की विभिन्न विसंगतियों का उद्‌घाटन करना है। इसी उपन्यास को लिखने की प्रेरणा उन्हें इंशा अल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' को पढ़कर मिली। किसी राजा का बेटा था 'अस्तभान'। उनका एक मित्र था मुफतलाल। वे दोनों बचपन के साथी थे। दोनों एक साथ स्कूल जाते और एक ही बेंच पर बैठते थे। दोनों पुस्तकें बेचकर मैटनी सिनेमा देखते थे। परीक्षा में दोनों ही फेल जाते थे। इस प्रकार दोनों की शिक्षा-दीक्षा एक सी अच्छी हुई थी। मई का महीना है, यह परीक्षाओं का रिसल्ट खुलने का मौसम है। दोनों मित्र इस वर्ष बी ए की परीक्षा में बैठे हैं। प्रभात का समय है। अस्तभान अपने कमरे में बैठा है और पास ही मुफतलाल है। अस्तभान की गोद में चार - पाँच अखबार पडे हैं। वह सब अखबार पढ लेता है और तनावग्रस्त होकर खिड़की के बाहर देखता है। कमरे में बड़ी भयानक शांति है। उसको भंग करते हुए मुफतलाल की ओर नज़र करके अस्तभान ने कहने लगा - "मित्र, तुम पास हो गए और मैं इस बार भी फैल हो गया।" मुफतलाल रोने लगा और कहा- "कुमार , मैं पास हो गया। इस ग्लानि से मैं मरा जा रहा हूँ। आपके फेल होते मेरे पास हो जाना इतना बड़ा अपराध है कि इसके लिए मेरा सिर भी काटा जा सकता है।"[2] मित्र के सच्चे पश्चाताप से अस्तभान का मन पिघल गया। वह अपना दुख भूल गया और उसे समझाने लगा। मुफतलाल कुछ स्वस्थ हुआ। अस्तभान ने सारे अखबारों को फाड़ दिया। क्योंकि किसी अखबारों में उनका नाम नहीं छपा। अस्तभान विचार में पड़ गया और एकाएक निश्चय के स्वर में बोला-"सखा,हम आत्महत्या करेंगे। चार बार हम बी ए में फेल हो चुके। फेल होने के बाद आत्महत्या करना वीरों का कार्य है। हम वीर कुल के हैं, हम क्षत्रिय है। हमें तो पहली बार फेल होने पर ही आत्महत्या कर लेनी थी। पर हमने तो विश्वविद्यालय को तीन मौके और दिए। जाओ, आत्महत्या करने का प्रबंध करो।"[3] मुफ़तलाल अस्तभान को समझाने लगा। वे लोग चर्चा करने लगे, विचार करने लगे। अंत में आत्महत्या करने को तय करता है। लेकिन मुफतलाल कुमार अस्तभान से कुछ कहना चाहता था। वह भी उसके साथ चलना चाहता था। उसके बिना यहाँ रहने की कठिनाई बताकर वह रो पड़ा। कुमार ने उसको गले लगाया और समझाया।

अस्तभान ने आत्महत्या की चिटिठयाँ लिखना शुरू किया। पहली चिट्ठी उसने अपनी पिताजी को लिखी। इसके बाद उसने अखबारों के लिए एक बयान लिखा जिसमें अपनी मृत्यू के कारणों पर प्रकाश डाला है। उस युग की सामाजिक परिस्थितियों पर इस वक्तव्य से अच्छा प्रकाश पड़ता है- "मैं उस दुनिया से बहुत दूर चला गया हूँ, जहाँ यह दुनियावालो, तुम्हारा अन्याय मुझे नहीं छू सकता। पर मैं पूछता हूँ कि क्या तुमने मेरे साथ अच्छा सुलूल किया? मैं चाहे जितना पैसा खर्च कर सकता था और बदले में एक छोटी सी चीज़ चाहता था, बी ए की डिग्री। जो लाखों को हर साल मुफ्त मिल जाती हैं। विश्वविद्यालयों से पूछता हूँ कि यह कहाँ का न्याय है? जिन्हें दो जून खाने को नहीं मिलता उन्हें तो डिग्री मिल जाती है और हम फेल हो जाते हैं। हमें बिना परीक्षा के ही डिग्री देनी चाहिए था। मैं इस अन्याय के विरुद्ध आत्महत्या कर रहा हूँ। मेरे बलिदान से लोगों की आँखें खुलें और वे आगामी पीढ़ियों के लिए न्यायोचित व्यवस्था करें।"[4] तब वह थककर लेट गया। तब वहाँ मुफतलाल आया और कुमार से कहा कि आपको

पानी में डूबकर आत्महत्या करनी चाहिए । परीक्षा और प्रेम में फेल होनेवाले जल समाधि लेते हैं। आप जैसे महान व्यक्ति को भेड़ा घाट के जल प्रभाव से कूदकर प्राण त्यागना चाहिए। कल सुबह हम लोग वहाँ चलें और तीसरे पहर आप आत्महत्या कर लें। अस्तभान को योजना पसंद आयी। वह तैयारी के संबंध में बात करने लगा। फिर सोने के लिए गया।

पड़ोसी राज्य के राजा राखड़ सिंह की बेटी राजकुमारी नागफनी पलंग पर हताश पड़ी है। उनकी आँखों से आँसू निकल रहे हैं। राजकुमारी का सिर गोद में लिए उसकी सखी करेलामुखी बैठी है। उसका नाम निरर्थक नहीं है - बचपन में जब उसकी बोली पहली बार फूटी तो पहला शब्द उसके मुँह से गाली का निकला। इस कारण से उसके माता-पिता ने उसका नाम करेलामुखी रख दिया। वह राजकुमारी को समझा रही है कि धीरज रखो। क्योंकि आज पाँचवीं बार राजकुमारी का प्रेम टूटा हुआ है। इसलिए वह आत्महत्या करने के लिए सोच रही है। उस समय करेलामुखी उससे बताती है कि " प्रेम का पथ काँटों से भरा ही है। इसमें क्या घबराना? हर घाव का मरहम होता है। यह प्रेम का घाव भी दूसरे प्रेम के मरहम से भर आता है।"[5] और उससे नए प्रेम करने के बारे में बता रही है। राजकुमारी वह मानने को तैयार नहीं होती है। आगे करेलामुखी को आत्महत्या के सारे प्रबंध करने को भेज देती है। बाद में राजकुमारी ने अपने अंतिम खत लिखना शुरू किया। फिर उसने अखबारों के लिए एक वक्तव्य तैयार किया जो प्रेमियों के नाम खुली चिटिठयों के रूप में था। आगे उसने एक मशहूर लेखक को भी एक चिट्ठी लिखी और अपने प्रेमियों की चिट्ठियाँ उसके साथ भेजने की तैयारी की। करेलामुखी व्यस्त से आकर आत्महत्या की बातें करने लगती है। जल समाधि करने के बारे में, भेड़ा घाट के जल प्रभाव से कूदकर आत्महत्या करना चाहिए। कल प्रातःकाल वहाँ जाकर तीसरे पहर में करनी चाहिए। राजकुमारी ने चिटिठयों को करेलामुखी को सौंप दिया और आगे के सारे प्रबंध करने का आदेश दिया।

भेड़ाघाट आत्महत्या करने को बड़ा सुंदर स्थान है। सरकार के आत्महत्या विभाग ने इस स्थान को तीन प्रकार की आत्महत्याओं के लिए निश्चित किया है - परीक्षा में फेल होना, प्रेम में विफल होना, और बेकारी। इस प्रकार आत्महत्या का अच्छा प्रबंध किया गया है। घाट पर अस्तभान को टिकट मिल गया है और वह अपने नंबर बुलाने की इंतज़ार में बैठे हैं। राजकुमारी भी उसके सौ गज की दूरी में बैठ रही थी । वह मैकप पूरा करके बाहर आकर चारों ओर देखने लगी। तब आत्महत्या करने के लिए आए हुए सैकड़ों युवक उसकी ओर लालसा से देखने लगे। कुछ लोग उसके निकट सिमट आयी। नागफनी अपनी रूप का प्रभाव देखकर बहुत प्रसन्न हुई। इसी समय अस्तभान भी सजकर आया और चारों तरफ देखने लगा। चलते-चलते उसकी नज़र नागफनी पर पड़ी। नागफनी ने भी अनायास उसपर नज़र डाली। दोनों की आँखें मिल गयी। नागफनी सुध बुध खो बैठी और अस्तभान भी पुलकित हो गया। बड़ी देर उन दोनों इस प्रकार खड़े रहे। अस्तभान ने मुफतलाल से उसके बारे में पूछता है। तब वह कहता है - वह राजकुमारी है। राजा राखड़ सिंह की बेटी नागफनी देवी । तब वे दोनों उसके रूप के बारे में कहने लगे और ये कौन सी परीक्षा में फेल हुई? तब मुफ तलाल बताता है कि वह प्रेम में विफल गयी है। अस्तभान को लगा कि मन से मन का मेल हुआ है। वह उसे मिलना चाहता है। वह मुफतलाल को उसकी ओर भेजा। तब करेलामुखी कुमार अस्तभान के बारे में राजकुमारी से बात कर रही थी। और कुमारी भी उनके साथ जो प्रेम उत्पन्न हुआ वह उनसे बताने के लिए करेलामुखी से बताती है। करेलामुखी और मुफतलाल की मुलाकात होती है। दोनों राजकुमार और राजकुमारी की बातें करने लगे। बाद में अस्तभान रानी नागफनी के रूप और गुणों पर मोहित होकर उसके पास चल पड़ा। नागफनी ने उसे प्रेम से पास बिठाया और कहा- स्वागत है। दोनों आपस में बातें करने लगे और आत्महत्या नहीं करने का निर्णय लेते हैं। तब करेलामुखी अपने पिताजी से शादी के बारे में कहने को रानी से कहती है। अस्तभान और नागफनी एक साथ वापस लौटते देखकर वहाँ शोर मच गयी। अखबार वालों को निराशा हुई कि उनकी प्रतीक्षा की घटना या खबर वहाँ नहीं हुई। मुफतलाल उनसे कुछ नयी

कहानी तैयार करने को कहता है। इस प्रकार वे लोग वहाँ से चले जाते हैं। रानी नागफनी की कहानी सभी प्रकार की सामाजिक विसंगतियों के बहुआयामी चरित्र का उद्घाटन करता है। यहाँ वर्तमान जीवन की अनेक विडंबनाओं का व्यंग्यात्मक वर्णन हुआ है। यह एक फेंटसी उपन्यास होते हुए भी अपने समय के समाज के हर गतिविधि का रूपायन करता है।

निष्कर्षतः 'तट की खोज' एक लघु उपन्यास है। इसमें हमारे समाज की कई समस्याओं को उजागर किया गया हैं। बहुत उम्र होते हुए भी शादी नहीं होनेवाली लड़कियों की पीड़ा, मानसिक संघर्ष, उनके पिता की मनोवैज्ञानिक स्थिति, माँ के बिना ज़िंदगी बितानेवाली लड़की की हालत, एक गरीब परिवार की आर्थिक समस्या आदि इसमें प्रमुख हैं। बिना माँ की जवान लड़की ऐसी फसल होती है जिसका रखवाला नहीं है और जिसे वासना के उजाडू पशु चरने को स्वतंत्र हैं। इसमें बेटी की शादी नहीं होने के कारण पिता बहुत दुखी और चिंतित थे। इसके कारण उन्हें ठीक रूप से नींद भी नहीं आती थी। ऐसी स्थिति हमारे समाज में आज भी मौजूद है। ऐसी स्थिति में पिता ऐसा भी हो सकता है कि वे अपनी बेटी से बोलना धीरे- धीरे कम करते जाते। घंटों बरामदे में बैठ शून्य आँखों से आसमान को देखते रहते। वे लोगों से मिलने-जुलने में बहुत हिचकते थे। वह आत्म ग्लानि और आत्म पीड़न का शिकार हो जाता है। शादी नहीं होने के बावजूद लड़कियाँ हताश या निराश न रहकर वे कॉलेजों में पढ़ती हैं और कोई अच्छी नौकरी करके अपनी ज़िंदगी आगे बढ़ाती हैं। इन सभी दृष्टियों से हरिशंकर परसाई जी के 'तट की खोज' लघु उपन्यास आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

फेंटसी के माध्यम से लिखा गया उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी' हास्य से भरपूर है और यह राजकुमार अस्तभान और राजकुमारी नागफनी की प्रेम कहानी पर आधारित हैं। इसमें एक असफल प्रेमी जन और परीक्षा में हार गए विद्यार्थी और बेरोजगारी से त्रस्त युव जन भेड़ाघाट पर आकर आत्महत्या किया करते थे। उस वक्तकी सरकार ने वहाँ पर बाकायदा एक आत्महत्या विभाग बनाया हुआ था, जो ऐसे लोगों की पूरी सहायता करता था। लगातार पाँचवें प्रेम में असफल राजकुमारी नागफनी और लगातार तीसरी बार बी. ए की परीक्षा में हार गए राजकुमार अस्तभान दोनों की निगाहें भेड़ाघाट की घाट पर लग जाती हैं। जहाँ पर वे आत्महत्या करने के लिए आए होते हैं और यहीं से उनकी प्रेम कहानी शुरू होती हैं। परसाई जी ने इस प्रेम कहानी के समानांतर समाज और सरकार में फैले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है। शिक्षा व्यवस्था और सरकारी नौकरी के इम्तिहानों में व्याप्त भाई-भतीजा वाद पर परसाई जी का व्यंग्य महत्वपूर्ण है। प्रेम विवाह में दहेज वसूलने वालों पर भी उन्होंने व्यंग्य बाण चलाया है। इस उपन्यास में आधुनिक जीवन में प्रेम के कृत्रिम स्वरूप भी उद्घाटित है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रेमशंकर,2001,रचना और राजनीति (निराला,प्रेमचंद,मुक्तिबोध,नागार्जुन,हरिशंकर परसाई),वाणी प्रकाशन,पृ.127
2. कमला प्रसाद, 1985,परसाई रचनावली-2 (रानी नागफनी की कहानी),राजकमल प्रकाशन, पृ. 13, 14
3. वही, पृ. 14
4. वही, पृ. 18
5. वही, पृ. 20
6. वही, पृ. 93

शरफुन्निसा.के.ई
शोध छात्रा
हिंदी विभाग, सरकारी आर्ट्स व साइंस कॉलेज, कालिकट

डॉ. नीरजा. वी.एस, co-author,
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग- सरकारी कॉलेज, कोड़नचेरी, शोध केंद्र, हिंदी विभाग, सरकारी आर्ट्स व साइंस कॉलेज, कालिकट

स्त्री स्वतंत्रता और सुरक्षा का प्रश्न आज भी क्यों?

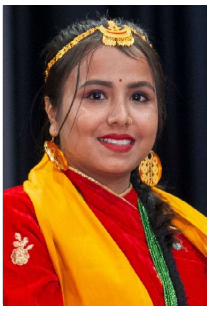

बिद्या छेत्री

मानव सभ्यता का इतिहास ही स्त्री के शोषण और पराधीनता का इतिहास है। प्राचीन काल में स्त्री को देवी माना जाता था। उनकी पूजा होती थी। ऐसे कई किस्से हमने सुने हैं। लेकिन उनकी स्थिति के अध्ययन के लिए हमें इन पूर्वाग्रहों से मुक्त होना होगा। प्राचीन काल से ही नारी को महिमामयी रूप में स्थापित करने से उसकी महानता सिद्ध नहीं होती। बल्कि यह स्पष्ट होता है कि स्त्री समाज की आवश्यकता पूर्ति के महत्त्वपूर्ण साधनों में से एक थी। वैदिक ऋषिकाओं के जीवन प्रसंगों को पढ़ने से यह प्रमाणित होता है कि वैदिक काल से ही स्त्री को दोयम दर्जे का पात्र समझा जाता था। इस संदर्भ में लोपामुद्रा, आपला, घोषा, मुद्गलानी आदि ऋषिकाओं के जीवन प्रसंग काफी प्रसिद्ध है। लोपामुद्रा ने अपने पिता को श्राप मुक्त करने के लिए ऋषि अगस्त्य से विवाह किया था। आपला और घोषा का विवाह उसके कुष्ट रोग के कारण नहीं हो पा रहा था। मुद्गलानी का नाम ही उसके पति मुद्गल के नाम से पड़ा है। जिसकी वीरता की चर्चा तो होती है लेकिन वह अपने पति के नाम से ही जानी जाती है। स्त्री का यह त्याग उसे ऊँचे दर्जे पर खड़ा नहीं करता वरन् तथाकथित पुरुषवादी समाज उसे त्याग का नाम देकर उसका हर तरह से शोषण करता है।

स्त्री की स्थिति हरेक युग में शोचनीय ही रही है। कहा जाता है कि वैदिक काल की ऋषिका रोमशा से स्त्री विमर्श का प्रथम स्वर सुनाई देता है। तब से अब तक स्त्रियाँ अपने स्तर से प्रयास कर रही हैं। स्त्रियाँ अपने हक के लिए स्वयं सामने आई हैं। रोमशा के सम्पूर्ण शरीर में रोएँ थे जिससे वह पति की उपेक्षा की शिकार बनती है। रोमशा अपने बौद्धिक शक्तियों का विकास कर अपने पति को उत्तर देती है, 'हे पति राजन ! जैसे पृथ्वी राज्यधारण एवं रक्षा करने वाली होती है,, वैसे ही मैं प्रशंसित रोमों वाली हूँ। मेरे सभी गुणों को विचारो। मेरे कामों को अपने सामने छोटा न मानें।' (राजे, 2022, पृ. 68) यही स्त्री विमर्श का प्रस्थान बिन्दु माना जाता है। अपनी बुद्धिमता से रोमशा अपने नाम के औचित्य को ही बदल देती है। ऐसा माना जाता है कि उसकी रोएँ ही वेद और शास्त्रों की शाखाएँ हैं। इस तरह वैदिक काल से ही स्त्री को उसके अधिकार स्वतः नहीं मिले हैं बल्कि अपने अस्तित्त्व की रक्षा के लिए वह सदैव तत्पर रही है। स्त्रियों ने अपने अधिकारों के लिए सवाल बार-बार उठाया है। स्त्रियों का अस्तित्त्व बोध केवल पुस्तकीय नहीं बल्कि उसके स्वयं के अनुभव हैं। भारतीय समाज में स्त्रियाँ हर जगह पीड़ित हैं। उनके शोषण के तरीकों में अवश्य भिन्नता है, मगर स्त्रियाँ हर युग में किसी न किसी रूप में पुरुषों द्वारा छली गई हैं। आज स्त्रियों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है स्त्री-पुरुष के बीच बढ़ती असमानता और दूरी को खत्म करना।

तथाकथित पुरुष वर्ग स्त्री साहित्य को हाशिए का साहित्य कहता है। हालाँकि उन्हें यह समझने की आवश्यकता है कि वे हाशिए के नहीं मुख्य धारा के साहित्य है। जो आलोचक स्त्री साहित्य को मुख्य धारा से अलग मानते हैं। उनसे मेरा प्रश्न यह है कि आप किस प्रकार के साहित्य को मुख्य धारा का साहित्य समझते हैं? पुरुष वर्ग द्वारा लिखे जा रहे साहित्य को? या उस साहित्य को जिससे आपकी अपनी धारणाएँ पुष्ट होती हैं? आप यह कैसे भूल रहे हैं कि आपका अस्तित्त्व एक स्त्री यानि आपकी माँ से है। स्त्रियों को दृश्यपरक और वस्तुपरक समझना हमारे समाज के लिए नई बात नहीं है। स्त्री विमर्श की शुरुआती जड़ें यहीं से निर्मित हुई है। कुसुम अंसल अपनी कविता में नारी-मुक्ति को अपना लक्ष्य मानती हैं। लेकिन नारीपन से ही मुक्त होने

की बात करती हैं- "मैंने रिश्ते तोड़ दिए हैं/ताकि नारीपन की ग्रंथि से मुक्ति पा सकूँ/इंसान बन सकूँ"(गुप्ता, 2010)।

स्त्रियों की जद्दोजहद आज भी उसे मनुष्य रूप में स्वीकारे जाने की है। कई आलोचक तो स्त्रियों की रचनाओं पर आरोप भी लगाते हैं कि स्त्रियाँ केवल देह मुक्ति की बात करती हैं। लेकिन वे यह कैसे भूल जाते हैं कि स्त्री का वही देह ही है जो प्रताड़ित होता है, मार खाता है, पुरुष की हैवानियत सहता है, दहेज के लालच में जलाया और मार दिया जाता है, उसकी मर्जी के खिलाफ उसपर हक जताया जाता है। जब तक उसकी देह मुक्त नहीं होगी उसके देह पर उसका पूर्ण अधिकार नहीं होगा। वह अपने अस्तित्त्व को बनाए रखने में कभी सक्षम नहीं होगी। इस संदर्भ में आलोचक सुजाता तथाकथित पुरुष वर्ग पर प्रश्न करती हुई लिखती हैं, जिन्हें स्त्रीवादियों के देह-मुक्ति के प्रश्न पर बात करने से तकलीफ है उनसे पूछा जाना चाहिए कि स्त्री के शोषण की कहानी उसकी देह पर नहीं लिखी गई तो कहाँ लिखी गई है? (सुजाता, आलोचना का स्त्री पक्ष, 2021, पृ.13) जिस देश में कई स्त्रियाँ रोज यौन शोषण का शिकार हो रही हो, वहाँ रहकर आपका स्त्रियों को अपनी देह तक ही सीमित बताना आपकी सीमित सोच को दर्शाता है, न कि स्त्रियों की। पिछले साल लेडी डॉक्टर के साथ कलकत्ता में घटी घटना से आप सभी अवगत हैं। जिसने पूरी मानव जाति को शर्मसार किया। ऐसी न जाने कितनी घटनाएँ रोज ही घटती हैं। 19 मार्च 2025 को दैनिक जागरण पढ़ते हुए मेरी नजर अचानक उसमें छपी बंगाल की एक घटना पर गई जिसका शीर्षक था 'नौकरी के नाम पर दुष्कर्म में तृणमूल नेता गिरफ्तार' और उसी के नीचे उस घटना की प्रतिक्रिया पर लिखा गया शीर्षक था 'भाजपा ने कहा बार-बार हो रही है ऐसी घटनाएँ' इस लेख पर लिखा गया था कि 'आरोपित को पुलिस ने पकड़ा है, लेकिन उसके खिलाफ सख्त कारवाई होगी, यह पक्का नहीं है। भाजपा इस मुद्दे पर आंदोलन करेगी' (दैनिक जागरण, 2025,पृ.1) यहाँ दुष्कर्मी को सजा न मिलने की संभावना व्यक्तकी गई है। यह स्त्री देह पर हो रहे राजनीति का ज्वलंत उदाहरण है। कलकते की घटना पर आए दिन न्यूज पेपर पर खबरें अब भी छपती है क्योंकि वह अब महज स्त्री सुरक्षा का प्रश्न नहीं खड़ा कर रहा बल्कि वह टीआरपी बटोरने और राजनीतिक मसाला प्रदान करने का जरिया बन गया है। आज प्रतिनिधि पार्टियाँ किसी भी घटना पर एक-दूसरे पर दोषारोपण करते हैं। नौकरी के नाम पर ठगी और दुष्कर्म का मामला तो रोज ही सामने आता है। ऐसी घटनाओं से यह सिद्ध होता है कि देश के लोकतान्त्रिक मूल्य संविधान तक ही सीमित हैं। विडंबना यह है कि आज दोषी को सजा मिलेगी भी या नहीं उसकी निश्चित जानकारी प्रशासन भी नहीं दे सकती है। वर्षों से स्त्रियाँ जिस बराबरी की बात कर रही हैं, उसमें बराबरी तो मिलने से रही बल्कि वे महफूज भी नहीं हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों की बात करते हुए 'अनामिका' अपने एक साक्षात्कार में कहती हैं, किसी भी अस्मितावादी आन्दोलन की मांग यही होती है कि लोकतांत्रिक मूल्यों का सही विकास हो। ये मूल्य हैं- स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा। (राय, 2017, पृ.105) अगर हमारा समाज स्त्रियों की समस्याओं को केवल स्त्रियों से न जोड़कर पूरे मानव समुदाय के विस्तृत अर्थ में ग्रहण करे तो शायद कुछ हद तक स्त्रियाँ स्वतंत्र हो सकती हैं। जब तक पुरुष वर्ग स्त्रियों के लिए खड़ा नहीं होगा हमारा समाज और साथ ही स्त्रियों का भविष्य भी खतरे में होगा।

स्त्री मुक्ति का आशय स्त्री की पुरुष संबंधों या पुरुष वर्गों से मुक्तिनहीं है बल्कि पुरुष मानस की विकृत सोच से सम्पूर्ण समाज की मुक्ति से है। हमारा समाज आज भी आतंकित और असुरक्षित है। इन सबके पीछे कौन जिम्मेदार है? यह सवाल अनुत्तरित है। वीरेन डंगवाल के शब्द उधार ले तो 'पर हमने यह कैसा समाज रच डाला है' (डंगवाल, 2015, पृ.14) यह हमारे ही द्वारा रचा गया समाज है। जिस समाज में हम स्वयं सुरक्षित नहीं है। हमें सदैव सतर्कता बरतने की जरूरत है। न जाने कितनी स्त्रियाँ रोज प्रताड़ित होती हैं, उन सबको न्याय दिलाने और

उनकी सुरक्षा का ध्यान रखने की बजाय हमारी न्याय व्यवस्था भी चुप्पी साधे बैठी है। हम आज जिस समाज में रह रहे हैं वहाँ अब स्त्रियों को सावधान रहने के अलावा खुश और सुरक्षित रहने का कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखाई पड़ता। कुछ अमानवीय और घृणित सोच रखने वाले पुरुषों के कारण हम पूरे पुरुष वर्ग को भी दोषी नहीं ठहरा सकते। फर्क है तो सिर्फ सहानुभूति और स्वानुभूति का। कवि कुँवर नारायण ने 'एक यात्रा के दौरान' कविता में भीड़ में अपने पति के साथ होते हुए भी असुरक्षित महसूस करती स्त्री का चित्र खींचा है- 'मेरी एक ओर बैठा वह /विक्षिप्त-सा युवक, /मेरी दूसरी ओर वह चिंतित स्त्री, /अपने बच्चे को छाती से चिपकाए /दोनों के बीच मैं कौन हूँ- /केवल एक आरक्षित जगह का दावेदार? /वह स्त्री और वह बच्चा/क्यों नहीं दो मनुष्य के बीच/एक पूर्णतः सुरक्षित संसार?' (कुँवर नारायण, 2019 , पृ. 134-135)

समकालीन समाज में आज जिस प्रकार का माहौल है, आए दिन जिस तरह की घटनाएँ घट रही है, उससे अपने ही लोगों से विश्वास उठता जा रहा है। कई बार लंबी सफर में साथ बैठे मुसाफिर भी आपस में बात करने से कतराते और एक दूसरे को शक की निगाह से देखते हैं। कुँवर नारायण ने अपनी कविता में आज के समाज की इसी विडम्बना पर प्रश्न किया है। जब स्त्री अपने ही लोगों के बीच सुरक्षित नहीं तो कहाँ है? पिछले साल महाराष्ट्र में दो छोटी बच्चियों के साथ स्कूल में हुए दुष्कर्म से भी आप अनभिज्ञ नहीं होंगे। पिता द्वारा अपनी ही बेटी पर दुष्कर्म की भी कई घटनाएँ सामने आई हैं। आज बच्चे स्कूलों में ही नहीं अपने ही घरों में भी सुरक्षित नहीं है। विडम्बना ऐसी है कि आज एक माँ अपनी बेटी को अपने पति यानि बच्ची के पिता के साथ भी अकेले छोड़ने से पहले कई बार सोचती है।

आज स्त्री लेखिकाएँ अपने लेखन के माध्यम से स्त्री चेतना, स्त्री अस्मिता, स्त्री स्वतंत्रता को एक व्यापक अर्थ में प्रस्तुत कर रही हैं। लेकिन उनमें कुछ ही स्त्रियाँ शामिल है। स्त्रियों का एक वृहद हिस्सा अपनी प्राथमिक आवश्यताओं और सुविधाओं से भी बेखबर है। कई स्त्रियाँ तो अपनी पराधीनता को स्वीकार भी कर चुकी हैं। स्त्री लेखन में सबसे बड़ा प्रश्न है- स्त्री पाठकों की उपस्थिति का। स्त्री पाठक का न होना स्त्री लेखन के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। जिस तरह समाज, संस्कृति, पुरुष-वर्चस्व, लोक मान्यता, लोक-जीवन आदि के मायने, परिभाषाएँ सबके लिए अलग-अलग हैं। इसी तरह स्त्री चेतना और स्त्री शोषण के मायने सबके लिए अलग-अलग है। स्त्री का पूरा जीवन परिवार की खुशी के लिए दुख झेलते और संघर्ष करते निकल जाता है। दुखों को झेलते हुए वह और सहनशील हो जाती है और उसे अपनी ताकत मान बैठती है। लेकिन स्त्री को दोयम दर्जे का समझने वाला पुरुष वर्चस्ववादी समाज उसे उसकी कमजोरी समझ बैठता है। इतिहास में ऐसी कई गुमनाम स्त्रियाँ हैं जिसने आत्महत्या की हैं। जिसमें उर्दू शायर सारा शगुफ़ता का नाम भी आता है। जिसने 29 की उम्र में आत्महत्या कर ली। वह अपनी एक कविता में लिखती हैं, 'तुझे जब भी कोई दुख दे उस दुख का नाम बेटी रखना।' (सुजाता, दुनिया में औरत, 2022, पृ. 135) हर बार एक स्त्री के सपने उसकी ख़्वाहिशों में ही रह जाते हैं। उसकी स्थिति तब तक ठीक रहती है जब तक वह पिता की राजकुमारी, भाई की लाडली और पति की प्यारी बनी रहे। जब वह अपने सपनों की उड़ान भरने को तत्पर हो उठती है तो सबसे पहले इनके ही द्वारा उसके पर काट दिए जाते हैं। उसे हर बार जख्मों के साथ रिश्तों को पीछे छोड़ आगे बढ़ना पड़ता है।

सबका मानना है कि अब स्त्रियों की स्थिति पहले से बेहतर हुई है। महादेवी वर्मा तत्कालीन समय में स्त्रियों की बदलती स्थिति पर अपने निबंध में लिखती हैं, "आज की हमारी सामाजिक परिस्थिति कुछ और ही है। स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है, न देवता की मूर्ति बनकर प्राण-प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह समझ गई है...आज उसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष को चुनौती देकर अपनी शक्ति की परीक्षा देने का प्रण किया

है और उसी में उत्तीर्ण होने को जीवन की चरम सफलता समझती है।" (वर्मा, 2015) लेकिन आज स्त्रियाँ भले ही चार दिवारी, चूल्हा-चक्की, घर-गृहस्थी और बच्चों की देखभाल तक ही सीमित नहीं है फिर भी वह स्वतंत्र नहीं है। आज स्त्रियाँ आर्थिक रूप से सबल होते हुए भी कई तरह से पीड़ित हैं। आज उसका दोहरा शोषण हो रहा है। न वह घर में सुरक्षित है और न ही अपने कार्यक्षेत्र में। स्त्री के साथ अन्याय और दुष्कर्म के मामले दिन-ब-दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। कलकता में लेडी डॉक्टर के साथ हुए दुष्कर्म की घटना ने आज सरकार और न्याय व्यवस्था को ही कटघरे में खड़ा किया है। जब एक सरकारी अस्पताल में एक डॉक्टर ही सुरक्षित नहीं है तो आम जनता कहाँ सुरक्षित है? आज का सबसे बड़ा प्रश्न है 'स्त्री सुरक्षा' का जिसके कारण स्त्री अस्मिता संकट में है। इस संदर्भ में मधु शर्मा की कविता 'शकुन्तला के परीलोक में' पढ़ी जानी चाहिए- "औरत / उजाले में है हालाँकि अब भी/स्याह होती हुई" (संपा.), 2012 , पृ. 149)

इन पंक्तियों की पुष्टि निम्न उदाहरण द्वारा की जा सकती है- हाल ही के वर्षों में मुस्लिम समाज में प्रचलित तीन तलाक पर प्रतिबंध से देश भर की स्त्रियों द्वारा जीत का जश्न मानते देखा गया। अगर इस मामले में आर्थिक सबलता प्राप्ति के प्रश्न को नजर अंदाज करें तो यह जश्न था- पुरुष की अधीनता और गुलामी स्वीकारने का। वह उस पुरुष के साथ रहने को अपनी जीत समझ बैठी जो उसके साथ रहना ही नहीं चाहता। प्राचीन काल से ही स्त्री की यही भूल स्त्री-स्वतन्त्रता में बाधक बनी है। स्त्री लेखन में इस ओर भी ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है।

इस तरह स्त्री वैदिक काल से कई तरह के बंधनों से मुक्ति के प्रयास तो करती है पर समाज द्वारा निर्मित दीवार को लाँघ पाने में सक्षम नहीं हो पाती। उसकी स्वतन्त्रता आज भी छलावा है। एक स्वप्न है। स्त्री विमर्श की शुरूआत रोमशा के देह से शुरू हुई थी और आज भी उसकी देह को स्त्री अस्मिता के केंद्र में रखा जाता है। पुरुष का दोहरा नजरिया और स्त्री विमर्श में अंतर्विरोध आज भी स्त्री अस्मिता के सबसे बड़े संकटों में से एक है। आज भी पुरुषों को उसके रिश्तों और संबंधों से बाहर की स्त्रियों की स्वतन्त्रता ही रास आती है। स्त्री अपनी ही मुक्तिके राह में कई बार भटक जाती है। कई बार वे अपनी ही हार का जश्न मानती नजर आती है। इस तरह स्त्री आज भी अपने ही अंतर के बंधनों से मुक्त नहीं हो सकी है। जो उसके सर्वांगीण विकास में बाधा उत्पन्न करने के साथ ही स्त्री मुक्ति की राह में समस्याओं का सृजन करता है। आज स्त्री देह राजनीति का भी प्रमुख मुद्दा बना हुआ है। कई अमानवीय घटनाएँ रोज घटती हैं और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप आग में घी डालकर राजनीतिक पार्टियाँ अपना हाथ सेंकती हैं। आज स्त्रियों की स्वतंत्रता और सुरक्षा एक राजनीतिक मुद्दा भर बना कर रह गया है। आज भी इन प्रश्नों का हल नीतियों द्वारा नहीं बल्कि नियत द्वारा तय होती है।

Bibliography

(संपा.), र. ग. (2012). आधुनिक महिला लेखन(कविता). दिल्ली : शिल्पायन .

गुप्ता, र. (2010). स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने . दिल्ली : शिल्पायन प्रकाशन .

डंगवाल, व. (2015). दुश्चक्र में स्रष्टा. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

दैनिक जागरण. (2025, 03 19) नौकरी के नाम पर दुष्कर्म में तृणमूल नेता गिरफ्तार, द्र.1

नारायण, क. (2019). प्रतिनिधि कविताएँ, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन

राजे, स. (2022) हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास . नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन

राय, अ. ((2017) सन्नाटे में चमकती आवाजें. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन

वर्मा, म. (2015) शृंखला की कड़ियाँ . इलाहबाद : लोकभारती

सुजाता. (2021) आलोचना का स्त्री पक्ष, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

सुजाता. (2022) दुनिया में औरत दिल्ली:राजपाल एंड संज

शोधार्थी, हिन्दी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, 6 माइल, ताडोंग
737102, सिक्किम, गंगटोक

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत विषय सीखने वाले छात्रों के सामने आने वाली समस्याएँ

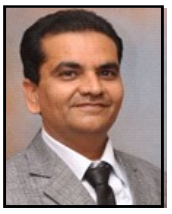

जादव राकेष कुमार हसमुखलाल / प्रोफ सतीष पी पतक

प्रस्तावनाः शिक्षा हर किसी के जीवन में एक महान भूमिका निभाती है। यह एक व्यक्ति को उसके मन, शरीर और आत्मा की स्थिति को बेहतर बनाने में मदद करती है। यह हमें कई क्षेत्रों में ज्ञान का भंडार देकर हमें बहुत आत्मविश्वास प्रदान करती है। यह सफलता के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास का एकमात्र और महत्वपूर्ण मार्ग है। शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है जो व्यक्ति को आंतरिक और बाहरी शक्तिप्रदान करती है। शिक्षा सभी का मौलिक अधिकार है और मानव मन और समाज में कोई भी वांछित परिवर्तन और उत्थान लाने में सक्षम है। छात्र स्कूल में विभिन्न विषयों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। सभी विषय स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पढ़ाए जाते हैं। पाठ्यक्रम आमतौर पर गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, भाषा कला, संगीत, कला और पढ़ने के मूलभूत विषयों के आसपास संरचित होता है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान के लेन-देन के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (2000), भाषा शिक्षा में विभिन्न चरणों के माध्यम से उत्तरोत्तर दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करने के साधन के रूप में अधिक क्षमता है और उपयुक्त विषयों को शामिल करके और उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों को अपनाकर सभी मुख्य घटकों से संबंधित है। NCFSE (2000) के अनुसार, पहली भाषा में माध्यमिक स्तर पर भाषा के लागू रूप पर पूर्ण महारत और साहित्यिक भाषा के साथ अच्छी जानकारी वांछनीय दृष्टिकोण और मूल्य को ध्यान से चयनित भाषा सामग्री के माध्यम से विकसित करने के उद्देश्य से होगी। इस प्रकार स्कूल पाठ्यक्रम भाषा सीखने, क्षमताओं, संचार कौशल में विकास को बढ़ावा देने में मदद करता है जो सामाजिक जीवन और आगे की शिक्षा के लिए आवश्यक हैं।

अपनी उत्पत्ति के बाद से ही भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति और भावनाओं तथा सांसारिक वस्तुओं को अर्थ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। यह भाषा ही है जिसने मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को अपने में समाहित कर लिया है तथा उसके प्रत्येक पहलू को अपने में समाहित कर लिया है। हम भाषा के बिना समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते। चूंकि भाषा को मानव प्रगति का आधार तथा संस्कृति के संरक्षण, उन्नति और संचरण का साधन माना जाता है, इसलिए मनुष्य के जीवन में भाषा के महत्व को कोई नकार नहीं सकता।

भाषा का महत्वः भाषा का महत्व हमारे दैनिक जीवन के हर पहलू और बातचीत के लिए आवश्यक है। हम अपने आस-पास के लोगों को यह बताने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं कि हम क्या महसूस करते हैं, हम क्या चाहते हैं, और अपने आस-पास की दुनिया को समझने/सवाल करने के लिए। हम कई स्थितियों में अपने शब्दों, हाव-भाव और आवाज़ के लहजे से प्रभावी ढंग से संवाद करते हैं। क्या आप एक छोटे बच्चे से उन्हीं शब्दों में बात करेंगे जो आप किसी व्यावसायिक मीटिंग में करते हैं। एक-दूसरे से संवाद करने, बंधन बनाने, टीम वर्क करने में सक्षम होना, और यही वह चीज़ है जो मनुष्यों को अन्य जानवरों की प्रजातियों से अलग करती है। संचार हमारे जीवन को आगे बढ़ाता है और हमें बेहतर बनाता है। संचार के महत्व को अक्सर अनदेखा किया जा सकता है। एक-दूसरे से संवाद करने की क्षमता के साथ भी। लोगों ने भाषा को विचार और संचार को आगे बढ़ाने के एक शक्तिशाली साधन के रूप में और सामाजिक संस्कृति के उत्पाद के रूप में इस्तेमाल किया है, जिसे किसी भी समाज में कम करके नहीं आंका जा सकता है। भाषा ने मानव सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मनुष्य का सारा बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास इस बात पर निर्भर करता है कि वह भाषा और उसके साहित्य को अपने उपकरण के रूप में किस हद तक उपयोग करता है। भाषा में शिक्षा व्यक्तित्व के विकास में मदद करती है। यह रचनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर

प्रदान करती है। तथा व्यक्तित्व की गतिशीलता का सौन्दर्यात्मक अनुभव प्रदान करती है, जिसका भाषा के प्रभावी उपयोग से बहुत सम्बन्ध है। 'उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट है कि शिक्षा में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का उद्देश्य जीवन में समायोजन करना है और भाषा इसे प्राप्त करने के लिए सबसे उपयोगी है। यह सही कहा गया है कि भाषा मनुष्य की आत्मकथा है। प्रत्येक व्यवसाय में मनुष्य को मौखिक और लिखित भाषा की अत्यधिक आवश्यकता महसूस होती है। किसी भी विषय का अध्ययन करने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रगति संचार के पर्याप्त और प्रभावी साधन पर निर्भर करती है। स्कूली पाठ्यक्रम में भी भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य विचार और भावना, मनोदशा, आकांक्षा से इच्छा और कार्य करता है, तथा मानव समाज की अंतिम और गहनतम नींव रखता है। इस प्रकार, सामंजस्यपूर्ण और सुखी जीवन के लिए भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सभी भाषाओं में प्राचीन भाषाएँ किसी भी राष्ट्र के विकास में अद्वितीय स्थान रखती हैं क्योंकि वे अपने भीतर परंपरा, संस्कृति, समारोह, अनुष्ठान के बीज को समाहित करती हैं जो राष्ट्र को उसके गौरवशाली अतीत को संरक्षित करने में मदद करती हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ कई बोलियाँ और भाषाएँ हैं। इन सभी में संस्कृत भारत की सबसे प्रमुख और प्राचीन भाषाओं में से एक है।

संस्कृत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : संस्कृत एक शास्त्रीय भारतीय भाषा है। संस्कृत नाम का अर्थ है 'परिष्कृत', 'पवित्र' और 'पवित्र'। इसलिए, संस्कृत को एक विशिष्ट भाषा नहीं बल्कि परिष्कृत और पूर्ण पवित्र भाषा के रूप में माना जाता था। यह हमेशा उच्च सम्मान में रखी जाने वाली भाषा है और हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म में धार्मिक और वैज्ञानिक प्रवचनों के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है। माना जाता है कि संस्कृत भाषा लगभग 2000 से 1000 ईसा पूर्व (आम युग से पहले) के आसपास उभरी थी। इसे सबसे पुरानी मौजूदा भाषाओं में से एक होने का श्रेय दिया जाता है। हालाँकि भाषा की उत्पत्ति को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया जा सका है, लेकिन माना जाता है कि यह सिंधु घाटी, वर्तमान पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत से आई है। इसे फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी जैसी इंडो-यूरोपीय भाषाओं के साथ समूहीकृत किया गया है, जिन्हें एक सामान्य पूर्वज भाषा माना जाता है। प्राचीन भारत में, संस्कृत का ज्ञान एक कुलीन वर्ग का प्रतीक और शैक्षिक उपलब्धि का स्रोत था। यह भाषा अभी भी मुख्य रूप से शिक्षित पुरुषों, उच्च वर्ग के लोगों और धार्मिक विद्वानों के बीच उपयोग में है।

संस्कृत का महत्व : संस्कृत का महत्व निर्विवाद है। यह व्यक्तिके सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी है, जो शिक्षा का उद्देश्य है। वेदान्त और उपनिषद अध्ययन हमारी सोचने की शक्तिको विकसित करता है और जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलता है। संस्कृत का अध्ययन हमें पंचतंत्र, हितोपदेश जैसी नैतिक और धर्मनिरपेक्ष पुस्तकों की शिक्षा देता है।

संस्कृत का अध्ययन विनम्रता, उदारता, निर्भीकता, भेदभाव अस्वीकार, प्रेम आदि अनेक अच्छे गुणों का निर्माण और पालन करता है जो व्यक्ति के अच्छे और नैतिक चरित्र का निर्माण में सहायक होते हैं। संस्कृत भाषा का शास्त्रीय साहित्य अभी भी विश्व भाषाओं के क्षेत्र में बहुत सम्मानजनक और सर्वोच्च स्थान रखता है और उसे बरकरार रखता है। संस्कृत के जर्मन विद्वान पाणिनि के प्रति बहुत सम्मान रखते हैं जो भारत के सबसे महान विद्वान और व्याकरण विद थे। संस्कृत भाषा का दार्शनिक महत्व है क्योंकि अधिकांश भारतीय भाषाएँ इसी से उत्पन्न हुई हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 35 में उल्लेख किया गया है कि जब भी आवश्यक हो, शब्दावली मुख्य रूप से संस्कृत से ली जानी चाहिए। मराठी, हिंदी, गुजराती आदि आधुनिक भाषाओं के विकास में संस्कृत पौराणिक कथाओं, दर्शन, नाटक आदि का बहुत बड़ा योगदान है और अब यह साबित हो चुका है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि क्षेत्रीय भाषाओं में पाए जाने वाले अधिकांश शब्द, वाक्यांश, व्याकरण संबंधी शब्द प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत भाषा से ही लिए गए हैं।

कक्षा में छात्रों के सामने आने वाली समस्याएँ : अभ्यास के दौरान लेखक को कई समस्याएं मिलीं जिनका सामना संस्कृत सीखने के दौरान शिक्षार्थियों को करना पड़ता है और वे समस्याएँ नीचे सूचीबद्ध हैं:

- **विषय की पसंद और नापसंद:** अभ्यास शिक्षण में

संस्कृत पढ़ाने के दौरान लेखक ने पाया कि कुछ छात्रों को संस्कृत सीखने में समस्याओं का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्हें संस्कृत विषय भी ज्यादा पसंद नहीं था, जिससे वे ध्यान नहीं दे रहे थे या संस्कृत को ठीक से सीखने के लिए प्रेरित नहीं थे और इसलिए उन्हें संस्कृत भाषा सीखने में समस्या का सामना करना पड़ा।

• **पढ़ने के अवसर की कमीः** प्रॉक्सी कक्षाएँ लेते समय लेखक ने छात्रों से संस्कृत विषय से संबंधित उनके विचारों के बारे में बातचीत की और पाया कि कुछ छात्रों ने कहा कि उन्हें संस्कृत सीखने में रुचि है, लेकिन उन्हें कक्षा में पढ़ने के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिल रहे थे, जिससे वे पढ़ने, उच्चारण, श्लोक उच्चारण आदि में खुद को सुधारने में असफल रहे, इसलिए कक्षा के दौरान अवसरों की कमी के कारण वे सूची से प्रेरित थे। और उच्च छात्र-शिक्षक अनुपात के कारण भले ही शिक्षक चाहते हों, वे समय की कमी के कारण सभी छात्रों को मौका नहीं दे पाते हैं।

• **लंबे वाक्य पढ़नाः** कुछ छात्रों के अनुसार, वे लंबे वाक्य या समास पद ठीक से नहीं बोल पा रहे थे क्योंकि उन्हें संधि-विग्रह और उसका सही उच्चारण करने का ज्ञान नहीं था, जिससे उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था।

• **नैतिक पठनः** कुछ छात्रों के अनुसार उनके शिक्षक आदर्श पठन नहीं कर रहे थे और यहां तक कि वे पाठ्य-पुस्तक पढ़ते समय गलतियाँ कर रहे थे, जिससे छात्रों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था और वे संस्कृत भाषा पढ़ने में गलतियाँ कर रहे थे।

• **उचित उच्चारण के लिए उचित मार्गदर्शनः** माध्यमिक छात्रों को उचित उच्चारण के लिए उचित मार्गदर्शन नहीं मिल रहा था, यहाँ तक कि उनका संस्कृत के बारे में आधार स्पष्ट नहीं था, जिससे उन्हें संस्कृत सीखने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था।

• **संचारः** सभी जानते हैं कि संस्कृत दुनिया की सबसे पुरानी और प्राचीन भाषाओं में से एक है। कई भाषाओं के कई शब्द सीधे संस्कृत से निकले हैं। प्राचीन समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी, लेकिन आजकल यह संभव नहीं है, क्योंकि यह अब कुछ कक्षाओं तक ही सीमित है, इसलिए यह आम लोगों के लिए नहीं है। इसलिए माहौल ऐसा है कि संस्कृत को संस्कृत में नहीं पढ़ाया जा सकता। इसलिए संचार अंतराल हुआ और यह मृत भाषा बन गई। इसलिए इसे हर कोई आसानी से नहीं बोल पाता है, इसलिए छात्रों को संचार में समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

• **विषय-वस्तु में महारतः** यह सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है कि शिक्षक को विषय-वस्तु में महारत हासिल होनी चाहिए। यह सामान्य दृष्टिकोण है कि भाषाएँ कोई भी सिखा सकता है। इसलिए शारीरिक शिक्षा शिक्षकों या अन्य भाषा शिक्षकों को भी उस विषय में किसी विशिष्ट डिग्री के बिना संस्कृत विषय पढ़ाने की ज़िम्मेदारी दी जाती है। इसलिए जब शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता है, तब भी शिक्षक को उस विषय के बारे में पता नहीं होता है, तो छात्रों से उस विषय में बेहतर सीखने और हासिल करने की उम्मीद कैसे की जा सकती है! इसलिए शिक्षक के लिए विषय-वस्तु में महारत होना बुनियादी आवश्यकता है क्योंकि अगर शिक्षक विषय-वस्तु में महारत नहीं है, तो छात्र उस क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता नहीं दिखा पाएँगे।

• **व्याकरणः** यह किसी भी भाषा में सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। व्याकरण किसी भी भाषा का आधार है। खासकर संस्कृत व्याकरण दुनिया का सबसे उत्तम व्याकरण है। इसे समझना भी आसान नहीं है क्योंकि इसमें बहुत सारे नियम हैं और कई व्याकरणिक रूपों और श्लोकों को याद रखना पड़ता है। छात्रों के दृष्टिकोण के अनुसार संस्कृत में संधि को समझना भी मुश्किल है। छात्र आसानी से समझ नहीं पाते और इसलिए उन्हें संस्कृत में समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

• **शब्दावलीः** संस्कृत में शब्दावली का भी बहुत महत्व है। अगर किसी को संस्कृत की शब्दावली का उचित ज्ञान नहीं है तो उसे संस्कृत पढ़ाना काफी मुश्किल है। ज़्यादातर छात्र संस्कृत के शब्दों के बारे में नहीं जानते थे। वे संस्कृत के आसान शब्दों को भी समझने में असफल रहे, जिससे वे संस्कृत को ठीक से समझने में असफल रहे।

• **अनुवादः** जब छात्रों को शब्दावली का उचित ज्ञान नहीं होगा तो वे अपनी मातृभाषा में उसका अनुवाद कैसे कर पाएँगे। संस्कृत में अनुवाद की अहम भूमिका है। इसके बिना संस्कृत को सही तरीके से नहीं समझा जा सकता। अनुवाद के ज़रिए गद्य और पद्य का अंदाजा आसानी से

लगाया जा सकता है कि उसमें क्या सामग्री दी गई है। ऐसे कई छात्र थे जो संस्कृत गद्य और पद्य का सही तरीके से अनुवाद नहीं कर पाए थे, जिससे उन्हें संस्कृत सीखने में दिक्कत आ रही थी।

• **शिक्षण पद्धतियाँ:** कभी-कभी शिक्षकों की पद्धतियाँ छात्रों के लिए उपयुक्त नहीं होती थीं। संस्कृत पढ़ाने के लिए केवल पद्य और गद्य का अनुवाद ही पर्याप्त नहीं है। अच्छे उदाहरणों का संग्रह, शिक्षण सहायक सामग्री का उचित उपयोग, उचित व्याख्या, स्वर में उतार-चढ़ाव, सही उच्चारण के साथ श्लोकों का पाठ, शब्दों की सही वर्तनी आदि भी संस्कृत में महत्वपूर्ण हैं। इसलिए यह शिक्षक पर निर्भर करता है कि वे संस्कृत पढ़ाने के लिए कौन सी शिक्षण पद्धति अपनाते हैं। इसका सीधा असर छात्रों की पढ़ाई पर पड़ता है।

• **पाठ्य-पुस्तक:** छात्रों के बेहतर सीखने के लिए यह महत्वपूर्ण पहलू है। संस्कृत में कुछ वर्तनी और व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ हैं और साथ ही पाठ्य-पुस्तक में कुछ शब्द ठीक से नहीं लिखे गए हैं, इसलिए यह शिक्षार्थी को गुमराह करता है और छात्रों को हतोत्साहित करता है। पाठ्य-पुस्तक वर्तनी, व्याकरण, शब्दों की संरचनाआदि के संबंध में सटीक और सही होनी चाहिए। यदि पाठ्य-पुस्तक में कोई गलती नहीं है, तो छात्र निश्चित रूप से बेहतर सीखने के लिए प्रेरित होंगे।

निष्कर्ष : यदि कोई व्यक्ति रुचि पूर्वक इसे सीखने का प्रयास करें तो संस्कृत सबसे उत्तम और सरल भाषा है। इसमें अच्छे संस्कार, नैतिकता और आचार-विचार समाहित हैं। यह सबसे प्राचीन और वैज्ञानिक भाषा है। विद्यार्थी ही शिक्षकों के सच्चे अनुयायी होते हैं। यदि शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में गलतियाँ करता है तो विद्यार्थी भी अवश्य ही गलतियाँ करेंगे। शिक्षकों को अच्छी तरह से तैयार रहना चाहिए और पूरे उत्साह के साथ पढ़ाना चाहिए। शिक्षक ही विद्यार्थियों के प्रेरक होते हैं। शिक्षक को इस शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान वास्तविक कक्षा की समस्याओं को पहचानना चाहिए और उन्हें सही करना चाहिए। संस्कृत शिक्षण और अधिगम में कुछ मुद्दे और समस्याएँ हैं लेकिन शिक्षकों और विद्यार्थियों - दोनों के प्रयासों से इसका समाधान किया जा सकता है। यदि समस्याएँ हैं तो उनके समाधान भी हैं।

संदर्भ सूची:

Apte, D.D. & Dongre, P.K. (1960). Teaching of Sanskrit in Secondary Schools. Baroda: Acharya Book Depot.

Apte, V. S. (1960). The student's guide to Sanskrit composition: A treatise on Sanskrit syntax for the use of schools and colleges.

Budhadev, V.P. (1989). A study of the attitudes of secondary school. Students towards various school subjects [Unpublished doctoral dissertation]. Saurastra University, Rajkot.

Chaudhari, P., & Chaudhari, S. (2020). A study of problems faced by secondary school students in Sanskrit language. International Journal of Sanskrit Research, 6(5), 279-282.

Deota, N. P. (1985). A linguistic analysis of Sanskrit selections of the XIth standard of the Gujarat state. (Unpublished Master's thesis). CASE, the Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara.

Deota, N.P. (1997). Development of the skilled-based teacher centered instructional material for the teaching of Sanskrit. CASE, the Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara.

Deota, N.P. (2000). Developing instructional materials for the teaching of Sanskrit grammar at the secondary school level in standard VIII. CASE, the Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara.

Jadav Rakeshkumar Hasmukhlal
Research Scholar UGC-NET
Department of Education
Faculty of Education & Psychology
The Maharaja Sayajirao University of Baroda
Vadodara, Gujarat 39002

Prof. Satish P. Pathak
Professor
Department of Education
Faculty of Education & Psychology
The Maharaja Sayajirao
University of Baroda
Vadodara, Gujarat 39002

उपन्यासों में पुरुष विमर्श - एक अवलोकन

राजलक्ष्मी जी

प्रस्तावना: इक्कीसवीं सदी में पुरुष विमर्श एक स्वतंत्र एवं विकसित साहित्यिक आंदोलन है । हर विमर्श का कोई न कोई अर्थ होना स्वाभाविक है । इसी तरह पुरुष विमर्श का अर्थ है - पुरुष संबंधी जैसे अनुभव, भूमिकाएँ, अधिकार, और समाज में उनकी स्थिति का अध्ययन करना। समाज के प्रत्येक व्यक्तिको समझना किसी भी व्यक्ति के लिए आसान नहीं होता है। यदि कोई समझने का प्रयास भी करे तो वह केवल सामान्य या ऊपरी बातों से ही अवगत हो सकता है। मानव जीवन की विविधताओं का चित्रण अधिक से अधिक साहित्य में किया जा सकता है। हिंदी साहित्य में पुरुष विमर्श अभी-अभी उभरता हुआ क्षेत्र लगता है। कुछ लेखकों और आलोचकों ने पुरुषों के अनुभवों और उनकी स्थिति को समझने और समझाने के लिए इसपर लेखन करना आरंभ कर दिया है।

बीज शब्द : पुरुष, पुरुष विमर्श, परिवार, नर, पुरुष शक्ति, जिम्मेदार व्यक्ति, उपन्यास

पुरुष विमर्श : पुरुष की चारित्रिक विशेषताएँ और उनके सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के विश्लेषण को 'पुरुष विमर्श' कह सकते हैं। पुरुष समाज का केन्द्र बिंदु है। वह सदियों से समाज के सभी गतिविधियों में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से क्रियाशील रहा है। परिवार,सामाजिक व्यवस्था का मूल रूप एवं प्राथमिक संस्था है और पुरुष इस संस्था का प्रमुख आधार स्तंभ है। जो परिवार के सभी कार्य विधानों में प्रमुख पात्र का निर्वाह करता है। इस प्रकार वह परिवार का संरक्षक और संचालक भी है।

मानव सभ्यता के आरंभिक काल में पुरुष शब्द का प्रयोग 'नर' के अर्थ में हुआ करता था। जैसे-जैसे उसके पारस्परिक सम्बन्ध बढते गए, वैसे-वैसे पुरुष की पहचान अलग- अलग ढंग से होने लगी। उदाहरण के लिए-पिता, भाई, काका, चाचा आदि अनेक रूपों में पुरुष शक्ति है। वह वंश परम्परा को बनाए रखने में कारणीभूत है। परिवार पर धीरे-धीरे पुरुष का नियंत्रण बढ़ता गया, धीरे-धीरे यह प्रभाव समाज में परिवर्तित हुआ, फिर राजनीति, धर्म और जीवन के सभी क्षेत्रों पर पुरुष ने अपना वर्चस्व थोपना शुरू किया। इससे पुरुष प्रधान संस्कृति का उदय हुआ। कुल मिलाकर पुरुष का स्वरूप वैविध्यपूर्ण है। एक ओर वह मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में है, तो दूसरी ओर वह खलनायक के रूप में भी दिखता है। वह अपने परिवार के लिए आजीवन संघर्ष करनेवाला एक जिम्मेदार व्यक्तिहै, तो दूसरी ओर नकारात्मक कार्यों में लिप्त भी दिखाई देता है। आज भी परिवार की अधिकतर जिम्मेदारी उसी पर थोप दी गई है। कुछ अपवादों को छोडकर परिवार के भरण-पोषण की सारी जिम्मेदारी उसी पर डाल दी गयी है। इस प्रकार देख सकते हैं कि पुरुष का स्वरूप अलग-अलग दृष्टियों से विश्लेषण करने पर वैविध्य रूप से पुरुष विमर्श परिलक्षित होता है। पुरुष अपने इस दायित्व के निर्वाह में पथ पर आनेवाले अनेक समस्याओं, सवालों तथा जटिलताओं का सामना करते हुए किस प्रकार अपने लक्ष्य में अग्रसर होता है इसकी ओर प्रकाश डालने की प्रक्रिया 'पुरुष विमर्श' कहलाता है।

विश्लेषण : हिन्दी साहित्य के इतिहास को देखा जाए तो मूलतः पुरुष-रचित साहित्य ही ज़्यादा पाया जाता है। साहित्य के लगभग सभी विधा में पुरुषों ने अपनी कलम चलाई है। हिन्दी उपन्यास साहित्य आधुनिक युग की देन है। भारतेन्दु युग में ही उपन्यास लेखन की नींव रखी जा चुकी थी, पर उसे प्रेमचन्द युग में ही सही रूपाकार और व्यापकता मिली। प्रेमचन्द ऐसे पहले उपन्यासकार हैं, जिन्होंने भारतीय जन-जीवन की समस्याओं को गहराई से समझा। प्रेमचन्द ने आरम्भ में आदर्शवादी उपन्यासों की रचना की। कालांतर में उनका झुकाव यथार्थवाद की ओर हो गया। इस तरह उनके लेखन के लिए एक नया पद 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' बना। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में मध्यम तथा निम्नवर्ग के पुरुष जीवन का यथार्थ तथा मार्मिक चित्रण किया। प्रेमचन्द के लेखन के सम्बन्ध में हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है - 'अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा,

दुख और सूझ-बूझ जानना चाहते हैं, तो प्रेमचन्द से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।'। प्रेमचन्द के उपन्यासों में 'गोदान' उपन्यास के होरी एवं गोबर, 'गबन' के रामनाथ, सेवासदन के सुमन, 'कर्मभूमि' के अमरकांत जैसे पात्र आज भी प्रासंगिक हैं।

प्रेमचन्दोत्तर काल के उपन्यासकारों में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, अमृतलाल नागर, भैरवप्रसाद गुप्त, रांगेय राघव आदि प्रमुख हैं । प्रगतिवादी उपन्यासकार निराला के उपन्यास 'कुल्लीभाट' में पुरुष के प्रगतिवादी तथा क्रांतिकारी मानसिकता का चित्रण अछूत कुल्लीभाट के जीवन संघर्ष के माध्यम से किया है। इसके बारे में डॉ. बदरी प्रसाद का कहना है कि - ' कुल्ली भी निराला की तरह ही संघर्षशील पुरुष है जो समाज की रूढिगत पुरानी मान्यताओं से जूझते हैं और गरीबों की सेवा में अपने को अर्पित करते हैं। कुल्ली सामाजिक क्रांति के अगुआ है।.... कुल्ली को किसी राजनीतिक नेना की सहायता नहीं प्राप्त होती, वे अकेले ही सामाजिक मैदान में संघर्षरत रहते हैं।'[2]

समकालीन उपन्यासकारों में कमलेश्वर, सुरेंद्र वर्मा, काशीनाथ सिंह, विद्यासागर नौटियाल जैसे लेखकों ने जीवन की सच्चाइयों को अपने पात्रों के द्वारा प्रस्तुत किया है। विद्यासागर नौटियाल का उपन्यास 'झुण्ड से बिछुडा' का केंद्रीय पात्र दुश्मन है। उसे गाँववाले 'शतरू' बुलाते थे। दुश्मन का बाप, गोबरसिंह, जो गाँव के साहसी तोपची थे, बेटे के जन्म लेते ही उनका निधन हो गया था। जन्म से ही बाप की मौत को आमंत्रित कर देनेवाले नन्हे बेटे को माँ दुश्मन कहकर बुलाने लगी थी और उसका वही नाम चल निकला। दुश्मन पल्टन में भर्ती न होने से उसकी माँ उदास होती है, लेकिन बेटे के तोपची बनकर जब गाँव की रक्षा करता है तो उनके नज़रों में बेटा बहुत उँचा हो जाता है।

कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में 'अदीब' मुख्य किरदार के रूप में उभरता है, कई पड़ावों से होते हुए उपन्यास की पृष्ठभूमि पर कभी एक सम्पादक के रूप में दस्तक देता है तो कभी न्यायाधीश के रूप में। कभी प्रेमी के रूप में तो कभी एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में। प्रस्तुत उपन्यास में मानवता के लिए खडा एकमात्र मध्यस्त एक जिम्मेदार साहित्यकार अदीब है। उसे अपनी जिम्मेदारियों का अहसास है और उसे लगता है कि जनता को अनेक वर्गों में बाँटकर उनका फायदा उठाया जा रहा है। वे अपने काल्पनिक अदालत में गवाहों की बात सुनता है, और कुरुक्षेत्र, कारगिल, हिरोशिमा और नागासाकी, नाजी जर्मनी, पूर्वी तिमोर, मजेक सभ्यता और पौराणिक ग्रीस से लेकर बोस्निया तक के हताहतों पर विचार करता है। 'कबीर' भी इस उपन्यास में एक मुख्य किरदार निभाता हुआ नजर आता है। काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' के नायक रघुनाथ पढे-लिखे लेकिन ग्रामीण व्यक्तिहैं। गाँव में पुरखों की जमीन और पुश्तैनी मकान है, जो रघुनाथ के लिए अमूल्य है, उनकी रक्षा और रख-रखाव को अपना कर्तव्य समझते हैं। वह अपने बच्चों से भी उम्मीद करते हैं कि वह गाँव की जमीन-जायदाद की देखभाल करें, परंतु उनके लड़के उनसे सहमत नहीं होते। रघुनाथ के बेटे हैं , बहु है, और बेटी भी है लेकिन जो सुख या संतोष एक संस्कारी पिता को मिलना चाहिए वह उन्हें नहीं मिला। खेत तो पहले से ही रेहन पर दिया हुआ था और अंत में वे खुद रेहन पर चले जाते हैं।

निष्कर्ष : 'पुरुष विमर्श' एक साहित्यिक आंदोलन और विचारधारा है जो पुरुषों की भूमिका, उनकी सामाजिक स्थिति, और पुरुषत्व के विभिन्न पहलुओं पर विचार करती है। कमलेश्वर, सुरेंद्र वर्मा, काशीनाथ सिंह जैसे लेखकों के साथ-साथ प्रभा खेतान, अलका सरावगी, ममता कालिया जैसे कई लेखिकाएँ भी अब पुरुष के जीवन को आधार बनाकर लेखन कार्य करने लगी हैं। स्त्री-विमर्श की तरह ही यह भी पुरुष और महिला दोनों के लिए एक अधिक न्यायसंगत और समान समाज बनाने में योगदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ

(1) हजारीप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, पृ. सं 212
(2) डॉ. बदरी प्रसाद : प्रगतिवादी हिंदी उपन्यास, पृ. 135
(3) डॉ. नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास
(4) विद्यासागर नौटियाल : झुंड से बिछुडा (उपन्यास)
(5) कमलेश्वर : किनने पाकिस्तान (उपन्यास)
(6) काशीनाथ सिंह : रेहन पर रग्घू (उपन्यास)

शोधार्थी, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
एरणाकुलम केन्द्र (केरल)
शोध निर्देशक : **प्रो. संजय एल. मादार**

किन्नर जीवन की दास्तानः 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा'

डॉ जयश्री एस टी

नयी सदी के साहित्य में हाशिए के असंख्य लोगों तथा विशेष उपेक्षित समुदायों को केंद्रित करना नयी पहल है। इक्कीसवीं सदी का यह दुर्भाग्य है कि आज भी मनुष्य को मनुष्य रूप में परिभाषित नहीं किया जाता, बल्कि उसको रंगभेद, जातिभेद, धर्मभेद, वर्णभेद, लिंगभेद, लिंगदोषी, सम-विषम लैंगिक भेद का शिकार होना पड़ता है। भारत और भारतेतर देशों में एक बड़ी आबादी ऐसे लोगों की है, जो लिंग दोषी या ट्रांसजेंडर के रूप में पैदा हुए। यह वर्ग हमेशा से समाज में विद्यमान रहा, किंतु दुर्भाग्य यह है कि सदैव इसकी उपेक्षा की गयी और उसे हिकारत से देखा गया है। तब से अब तक इनके संघर्ष का कोई अंत नहीं रहा है। यह वह वर्ग है जो न स्त्री है और न ही पुरुष है, जिसे समाज में हिजडा, किन्नर, थर्ड जेंडर आदि नामों से पहचाना जाता है। जन्म से लेकर पूरा जीवन यह समाज में रहते हुए भी समाज से बहिष्कृत होकर जीवनयापन करते हैं। मूलभूत सुविधाओं व आवश्यकताओं के लिए भी इन्हें भीषण संघर्ष करना पड़ता है। इनकी उपेक्षा और बदहाली को देखते हुए भारतीय संविधान ने 'हिजड़ों' और 'ट्रान्सजेंडरों' को तीसरे लिंग अथवा थर्ड जेंडर के रूप में मान्यता प्रदान की है। इस फैसले से समाज में उनकी भी एक पहचान सुनिश्चित हो गयी है। यह देखा गया है कि सामाजिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक-आर्थिक आदि के चर्चित मुद्दे या आंदोलन साहित्य में आकर विमर्श का रूप ले लिया करते हैं। यह विषय भी वर्तमान समय में साहित्य का मुख्य विमर्श बना हुआ है।

दशकों पूर्व से दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श से आच्छादित हिंदी साहित्य का फलक आज तीसरी सत्ता पर कलम उठाने के लिए बाध्य हो गया है। हिंदी साहित्य में हिजड़ों की संवेदना को बहुत कम चित्रित किया गया है। हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श की बात करें तो इन्हें स्थान मिला है - नीरजा माधव का 'यमदीप', प्रदीप सौरभ का 'तीसरी ताली', निर्मला भुराडिया का 'गुलाम मंडी', अनुसूया त्यागी का 'मैं भी औरत हूँ', पारू मदन नाइक का 'मैं क्यों नहीं' आदि उल्लेखनीय है। इनमें से अधिकांश उपन्यासों का मूल कथ्य किन्नरों को समाज में सम्मानित स्थान दिलाने के साथ ही उनकी योग्यता के आधार पर इन्हें पहचान दिलाना है और सामान्य मनुष्य की ही भाँति उनके स्वाभिमान को बनाए रखने में सहायक हो।

चित्रा मुद्गल एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर भी निरंतर काम करती रही हैं तो जाहिर है ऐसे अनेक चेहरों से जिसे हम किन्नर कहते हैं उनका साबका होता रहा होगा। चित्रा मुद्गल ने 'नाला सोपारा' में सिर्फ इस वर्ग की समस्या इनके साथ होनेवाले अत्याचार आदि विषयों को ही नहीं उठाया, बल्कि इस वर्ग को एक नए दृष्टिकोण से सोचने का एक अवसर दिया है। अपनी पहचान को स्थापित करने की एक अलग दृष्टि दी है।

पत्राचार शैली में रचित चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' परिवार एवं समाज द्वारा बहिष्कृत किन्नरों के जीवन की व्यथा-कथा है, जिन्हें मात्र एक शारीरिक कमी जिसमें उनका कोई दोष नहीं होने के कारण समाज द्वारा अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश कर दिया जाता है। यह उपन्यास मुंबई अभिजात्य परिवार में जन्मे विनोद के जीवन पर आधारित कहानी है। विनोद के माध्यम से उपन्यासकार ने हिजड़ा जीवन के भयावह, दर्दनाक एवं निर्मम चित्र प्रस्तुत किया है। विनोद बचपन में अन्य बच्चे के समान सामान्य, स्वाभाविक था। लेकिन धीरे-धीरे विनोद की शारीरिक संरचना में बदलाव दिखाई देता है, जो सामान्य बच्चे की भांति नहीं था। विनोद की असलियत का पता, हिजड़ा समुदाय को मालुम पड़ जाता है। हिजड़ों की टोली चंपाबाई सहित सभी विनोद को अपने साथ ले जाने आती है। अपमान से बचाने के लिए बिन्नी को उन्हें सौंप देती है। चंपाबाई उसे दिल्ली की एक किन्नर बिरादरी के सरदार तितलीबाई को दे दिया जाता है। जहाँ उसे भीषण यंत्रणा में बिरादरी के नियम व कानून सिखाये जाते है। हिजड़ा समाज में आकर रहने पर भी वह पारंपरिक रीति रिवाज़ गाना, नाचना, ताली बजाना जैसे काम करने को तैयार नहीं होता है। इसके लिए तितलीबाई के डेरे में यातनाएँ भी सहता है। यह भी एक कटु सत्य है कि माता-पिता असामान्य जन्में बच्चे के प्रति अथाह स्नेह रखने के बाद भी उसे अपने साथ

नहीं रख पाते। महेंद्र भीष्म ने भी लिखा है कि "संतान कैसी भी हो, उसमें कैसी भी शारीरिक कमी क्यों न हो, माता-पिता को अपनी संतान हर हाल में भली लगती है, प्यारी होती है, फिर भले ही वह संतान हिजडा ही क्यों न हो। फिर भी सामाजिक परिस्थितियों, खानदान की इज्जत-मर्यादा, झूठी शान के सामने अपने हिजडे बच्चे से उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहते है।"[1]

इस घटना से विनोद पूरी तरह से बदल जाता है। वह आंतरिक उहापोह में तो बचपन से ही था, इस घटना के बाद का जो जीवन उसे मिला उसके सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का उसके मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वह कहता है कि "जिस दिन चंपाबाई के सुपुर्द कर दिया गया, कसाईखाने के कपाट खुल गए। गाली हो गया मैं। हिजड़ा, हिजड़ा, हिजड़ा। गालियों की गाली। किन्नर कह देने भर से नासूर छ्टक जायेंगे देह से।"[2] यह उसके परिवार का वातावरण और उसकी शिक्षा का ही प्रभाव था कि विनोद स्वभाव से यथास्थितिवादी नहीं है। घोर विपरीत परिस्थितियों का सामना कर और भीषण यंत्रणा को सहते हुए भी वह अपने बिरादरी के नियमों और कानूनों को ताक पर रखकर उनके विरुद्ध आचरण करता है।

इसमें कथानायक विनोद उर्फ बिमली उर्फ बिन्नी अपनी माँ को पत्र लिखता है। माँ-बेटे का अटूट बंधन, जिन तंतुओं से मिलकर बनता है, उसका रेशा-रेशा इस उपन्यास में खुलता दिखाई देता है। विनोद को उसकी माँ बचपन से ही बिन्नी नाम से बुलाती है। यही कारण है कि वह अपने प्रत्येक पत्र के अंत में 'तेरा दीकरा उर्फ विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली' लिखता है। यह सूचक है कि तुम्हारा दीकरा जो पहले विनोद और बिन्नी हुआ करता था उसे समाज ने अब बिमली बना दिया है। इतना लंबा समय बीत जाने के बाद भी वह माँ की यादों को भुला क्यों नहीं पा रहा है। अपनी माँ को लिखे पत्र में वह स्वीकार करता है कि "उनके लात, घूंसे, थप्पड और कानों में गर्म तेल-सी टपकती किसी भी संबंध को न बख्शनेवाली अश्लील गालियों के बावजूद न मैं मटक-मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ, न सलमे-सितारेवाली साड़ियाँ लपेट लिपिस्टिक लगा कानों में बंदे लटकाने को।"[3] इसके साथ ही वह यह भी कहता है कि "स्त्रैण लक्षण मुझमें कभी नहीं रहे। अब भी नहीं हैं और जो लक्षण मुझमें नहीं है, उन्हें सिर्फ इसलिए स्वीकारूँ कि मेरी बिरादरी के शेष सभी, उन हाव-भाव को अपना चुके हैं।"[4] वह इस परम्परावादी समाज में जननांग से विकृत होते हुए भी स्वयं को पुरुष मानता है। इग्नू के फार्म में वह मेल के कॉलम में टिक करता है। वह अपने समुदाय और बिरादरी द्वारा दिए गए नाम बिमली को भी नहीं अपनाता है। उसके भीतर इस संपूर्ण व्यवस्था के प्रति विद्रोह भर जाता है। वह कहता है कि "जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इतना बड़ा भी नहीं कि तुम यह मान लो कि तुम धड़ का मात्र वही निचला हिस्सा भर हो । मस्तिष्क नहीं हो, दिल नहीं हो, धड़कन नहीं हो, आँख नहीं हो। तुम्हारे हाथ-पैर नहीं है। हैं, हैं, सब वैसा ही है, जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने-देने से वंचित हो तुम वात्सल्य सुख से नहीं। सोचो।"[5] यह दुर्भाग्य है कि हमारा समाज इस बात को स्वीकार है नहीं करना चाहता है। उसकी सनातन से चली आ रही रूढ़ियाँ संपूर्ण पुरुषत्व की पूजक है। यहाँ भीतर से काला होना दोष नहीं है। छोटा-बड़ा अपराध कर देना भी बहुत बड़ा दोष नहीं है, दोष है तो भीतर से मनुष्यता को जीवित रखते हुए भी बाहर से पुरुषत्वहीन होना।

विनोद के मन में अपने परिवार के प्रति अपार स्नेह है। फिर भी उसे इस बात का मानसिक कष्ट है कि उसके घरवाले समाज में बदनामी से बचने के लिए उसकी दुर्घटना में मृत्यु की कहानी गढ़ लेते हैं और इसी कारण अपना पुराना घर बेचकर नाला सोपारा में घर ले लेते हैं। जब उसे यह पता चलता है कि सबने उसे मरा हुआ मान लिया है, तब वह बहुत निराश होता है और एक बार तो आत्महत्या करने का विचार भी करता है। वह खीझ कर अपनी माँ को लिखता है कि - "शहर में मरूँगा तो लाश किन्नरों के हाथ लगेगी। किन्नरों के विधि-विधान से मौत का निपटारा होगा। किन्नर के रूप में मैं मरना नहीं चाहता। अपनी मर्जी से मर सकता हूँ तो मौत का निपटारा भी मेरी मर्जी से ही होना चाहिये। ऊँचे पहाड़ पर जाकर मरना उचित होगा। हज़ारों फीट गहरी अलंघ्य जटिल घाटी में कौन खोजेगा मेरी लाश को लाश के टुकड़ों से चिपककर तुझे भी छाती कटने का मौका नहीं मिलेगा। यही तो चाहता हूँ मैं।"[6] ऐसा नहीं है कि इस समग्र घटनाक्रम से अकेला विनोद ही प्रभावित होता है, बल्कि उसका परिवार भी इससे बुरी तरह प्रभावित होता है।

भारतीय परिवार भी अपने थर्ड जेण्डर सदस्य के प्रति अमानवीय दृष्टिकोण रखते है जिसका चित्रण चित्रा जी ने

विनोद के बड़े भाई सिद्धार्थ के माध्यम से किया है। बालक बिन्नी को हिजड़ों के हाथों में सौंपने में उसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। यही नहीं अपनी गर्भवती पत्नी का सोनोग्राफी करवाते समय बार-बार डाक्टर से यही सवाल करता है कि कहीं उसके गर्भ में पलनेवाली संतान में लिंग दोष तो नहीं है। अगर ऐसा है तो वह बच्चे को नष्ट करवा देगा पर एक लिंग दोषी बच्चे का पिता नहीं बनेगा। उसके डर के मारे विनोद की माँ विनोद के फोन भी नहीं उठाती थी। वह अपनी माँ को उनके कमरे में टंगे विनोद की तस्वीर को भी हटाने पर मजबूर करता है क्योंकि वह अपने लिंग दोषयुक्तभाई की कोई स्मृति इस घर में नहीं रखना चाहता जिसका बुरा प्रभाव उसकी गर्भवती पत्नी पर पड़े। साथ ही पारिवारिक विघटन व वैश्वीकरण तथा आधुनिकता की चपेट में भारतीय परिवारों की चरमराती अवस्था पर भी दृष्टिपात किया गया है।

उपन्यास में अपने लाडले दीकरे बिन्नी से अलग हुई माँ वन्दना जी का प्रत्येक दिन हताशा और दुख में ही बीतता है। परिवार के अन्य सदस्यों से छिपकर वह पोस्ट ऑफिस से एक पोस्ट बॉक्स ले लेती है कि जिसमें उसका दीकरा पत्र भेज सके। परिवार की सारी ज़िम्मेदारियों को पूरी करती हुई यह माँ अपने बिन्नी को लुक-छिपकर चिट्ठियाँ लिखती रहती है। वह अपने परिवार की सभी बातों से बिन्नी को अवगत कराती है और अपने इस सयाने पुत्र से पारिवारिक समस्याओं पर सलाह मशविरा करती है। जब बिन्नी उसे प्यार भरा ग्रीटिंग कार्ड भेजती है तब स्नेह वत्सल माँ रोकर इस सत्य को भी सह स्वीकृत करती है कि "मेरी मुट्ठी में पूरी ताकत से जकड़ी हुई तेरी बिलखती हुई मुट्ठी को, जो मुझसे अलग न होने के लिए हाथ-पांव पटकती गिड़गिड़ा रही थी, मैं ने ही तो उसे धोखा दिया था। अपनी मुट्ठी को शिथिल कर ... । मेरी पकड़ तेरी मुट्ठी पर ढीली होते ही तेरे मोटे भाई ने तुझे अपने बाजुओं में दबोच फौरन तुझे चंपाबाई के हवाले कर दिया था।"[7]

इस उपन्यास में इस बात को एक मुद्दे की तरह उठाया गया है कि विनोद को बार-बार स्वयं को पुरुष के रूप में स्थापित करना पड़ता है। यह विनोद के भीतर का पुरुष ही है जो वह पूनम जोशी के प्रति आसक्त होता है। वह उससे घोर आत्मिक जुड़ाव महसूस करता है। जब वह आस-पास नहीं होती है तब विनोद को बराबर उसकी कमी खुलती रहती है। उसके भीतर छुपी यह प्रेम भावना कहीं-न-कहीं यह भी संकेत करती है कि सदियों से चली आ रही हमारी सामाजिक संरचना में बदलाव होना चाहिए और इस प्रकार के क्रांतिकारी फैसलों का स्वागत करने के लिए भी उसे तैयार रहना चाहिए। परंपरागत भारतीय समाज इसे अराजकता मानता है। क्योंकि यहाँ संबंधों में नैतिकता, शुद्धता और सुचिता का सिद्धांत लागू होता है।

किन्नर इसी समाज की उपज है किंतु यही समाज इन्हें अपने से अलग कर निर्ममता का परिचय देता है। समाज में यदि स्त्रियों की स्थिति दोयम दर्जे की है वहीं किन्नर समुदाय के लोगों को तो मनुष्य ही नहीं समझा जाता। कोई भी इनसे सामाजिक संपर्क नहीं बनाना चाहता। किसी नवजात शिशु के जन्म पर, शादी विवाह आदि के अवसर पर जाकर नेक मांगना ही इनकी रोजमर्रा की ज़िंदगी है, किंतु वहाँ भी भर्त्ससना के सिवा इनके हाथ कुछ नहीं लगता । कई बार तो यह तथाकथित सभ्य समाज इनके साथ पशुओं से भी बदतर व्यवहार करता है। उपन्यास में किन्नर एक घर में बच्चे के जन्म पर नेक माँगने जाते हैं। मुंहमांगा देने के लिए है वह लोग इन्कार कर देते हैं और मार-पीट शुरू हो जाती है। "चंद्रा की बाहों पर दरिंदगी भरी खरोंचे खून से छलछलाई हुई थी। सोनिया का निचला होंठ कटा हुआ है। पूनम ने पीठ दिखाई। उसकी गोरी पीठ पर नील खुदे हुए थे।"[8] उपन्यास में सभ्य समाज के लोगों के साथ किन्नरों की हुई हाथापाई में किन्नरों को ही दोषी माना जाता है। पुलिस मुखिया सहित अन्य किन्नरों को लेकर जेल में डाल देती है। न्याय नाम की वस्तु इनके लिए बनी ही नहीं है। मानों, ये शोषित होने के लिए इस संसार में आये हैं।

किन्नरों के साथ होनेवाली हिंसक घटनाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही नहीं सभ्य कहे जाने वाले, लोगों की कुटिलता से अनभिज्ञ इन मासूमों के साथ बलात्कार तथा अप्राकृतिक यौन संबंधों जैसी कई घटनाएँ सामने आती रहती है। सभ्य लोगों की पा[illegible]िकता की एक घटना उपन्यास में आई है। फॉर्म हाउस में नृत्य समाप्त होने के बाद पूनम कपडे बदलने के लिए जाती है। तभी वहाँ विधायक का चरित्रहीन भतीजा बिल्लू अपने दोस्तों के साथ मिलकर किन्नर को अपनी हवस का शिकार बनाते हैं, उसका बलात्कार करते हैं। समाज इनकी शारीरिक विकलांगता को इनकी मानसिक विकलांगता समझ लेता है, किंतु वास्तविकता यह है कि इनमें भी सामान्य मनुष्य की भांति सोचने-समझने की शक्ति

होती है। अपने साथ चारों ओर से हो रहे अन्याय पर छटपटाते हैं लेकिन समाज में इनके दुख दर्द को समझने वाला कोई नहीं। जिन्हें लोग हिकारत की नज़रों से देखते हैं उनके अंतर्मन में भी एक पूर्ण व्यक्तिसी संवेदना है।

सामाजिक अधिकारों एवं समस्याओं के विरुद्ध खड़े होने वाले मुद्दों एवं आंदोलनों में राजनीतिज्ञों की प्रमुख भूमिका रहती है। बेशक, राजनीतिज्ञ सामाजिक कल्याण के लिए इन मुद्दों को हवा नहीं देते बल्कि अपना वोट बैलेंस बढ़ाने तथा सत्ता हथियाने के लिए करते हैं। लेखिका राजनीतिज्ञों के कुचक्रों से भी बखूबी परिचित हैं। उपन्यास में विधायक अपनी पार्टी की जीत के लिए किन्नरों को मोहरा बनाने का प्रयास करता है। वह विनोद से झूठी सहानुभूति दिखाकर उसका विश्वास जीतना चाहता है। किन्नरों के लिए आरक्षण हेतु देशव्यापी आंदोलन खड़ा करने का मुद्दा उनके चुनाव का मुख्य आधार है। इसलिए वह अपनी कोठी में रहने के लिए विनोद को कमरा देता है, उसका एन.आई.टी बेसिक कंप्यूटर प्रोग्राम में दाखिला करवाता है। विनोद स्वयं को भाग्यशाली समझता है, क्योंकि उसे लगता है, अब वह अपनी बिरादरी के लोगों को समाज में अधिकार व सम्मान दिला पायेगा। किंतु वह इस बात से अनभिज्ञ है कि विधायक जी एक पहुँचे हुए कूटनीतिज्ञ है। समाज में रहते हुए समाज से बहिष्कृत लोगों का समर्थन प्राप्त कर उन्हें अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किस प्रकार प्रयोग करना है यह वे भली-भाँति जानते है। विधायक का सहयोगी तिवारी विनोद के माध्यम से किन्नरों का समर्थन पाने के लिए वादा करता है कि - "साथ देंगे किन्नर हमारा तो हम उनके आरक्षण की मुहिम चलाएँगे। जोडेंगे उन्हें विकास के समान अवसरों से । शिक्षा, रोज़गार, सम्पत्ति, ऋण, बूढ़ों की पेंशन, बेरोज़गार युवाओं को भत्ता, लेकिन ताली एक हाथ से नहीं बजती।"[9] भारतीय राजनीतिज्ञों का उद्देश्य समाज के उपेक्षित एवं तिरस्कृत वर्ग को समाज में अधिकार और सम्मान दिलाना नहीं होता बल्कि पार्टी की जीत और ऊँचा पद पाना होता है।

किन्नरों के बेहतर भविष्य के लिए विनोद प्रयासरत है। एक राजनैतिक पार्टी का हिस्सा बनने के बाद वह उस मंच का उपयोग किन्नरों के बेहतर भविष्य के लिए करता है। किन्नरों को जागरुक करते हुए तथा समाज के लोगों को चेतावनी देते हुए वह कहता है कि - "किन्नरों के धड़ के नीचे लिंग न सही धड़ के उपर मस्तिष्क भी नहीं है, यह कैसे सोच लिया आपने।"[10] यह वक्तव्य दर्शाता है कि किन्नर भी हमारी तरह इंसान है। उनके अंदर भी भावनाएँ हैं। वे सभ्य जीवन जीना चाहते हैं। मन-मस्तिष्क से सुसज्जित ऐसे प्राणी को लिंगविहीन होने पर हाशिए पर नहीं खड़ा किया जा सकता।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विनोद की दुर्दशा संपूर्ण किन्नर समान की दुर्दशा है। विनोद की आवाज़ और उसकी भावनाएँ किन्नर समाज का हिस्सा बनना चाहिए। यह तभी संभव है, जब समाज जागरूक होगा और किन्नर को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करेगा।

उपन्यास की भाषा में वार्तालाप की शैली का अनूठा रूप अपनाया गया है। पत्रों के माध्यम से माँ-बेटे की बातचीत को साकार किया गया है। समाज में अत्यंत बहिष्कृत व निकृष्टतम परिस्थितियों में संघर्षरत किन्नरों की जीवन-चर्या पर आधारित होने पर भी लेखिका ने गाली-गलौच का सीमित प्रयोग किया है। इसमें पत्र-लेखन की बहुत पुरानी शैली को आजमाया गया है। पत्र शैली में लिखे जाने के कारण कथा के विस्तार और व्यापक आयाम को सही से नहीं समेटा जा सका है। यह उपन्यास एक गुजराती परिवार की कथा कहता है, यथास्थान पर गुजराती शब्दों का प्रयोग, गुजराती लोरी की पंक्तियाँ, गुजराती संस्कृति के कई तत्व यहाँ देखे जा सकते हैं। इस उपन्यास को गुजराती परिवेश देने में पूरी तरह सक्षम है। किन्नर के जीवन को एक नयी दृष्टि से समझने व जानने के साथ-साथ उनके जीवन में संवारने के बेहतर विकल्प की आशा और विश्वास से भरा हुआ अनूठा उपन्यास है।

संदर्भ

1. महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा, अमन प्रकाशन, कानपूर, 2020, पृ. 45.
2. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016. पृ 42.
3. वहीं, पृ. 9
4. वही, पृ. 10
5. वहीं, पृ. 50
6. वही, पृ. 33
7. वहीं, पृ. 21
8. वहीं, पृ. 51
9. वही, पृ. 6
10. वही, पृ. 193

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
के एस एम देवस्वम बोर्ड कॉलेज, शास्तांकोट्टा

डिजिटल शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य और भविष्य

रतिराम गढ़ेवाल

शोध-सार: "जो शिक्षा मानवता का मार्ग दिखाये मन, वचन, कर्म में शुचिता, समता लाए।/तन, मन, आत्मा को विमल-बलिष्ठ बनाए, विज्ञान, ज्ञान का मार्ग, महत्व बताए।।"[1]

डिजिटल शिक्षा सभी संवर्गों के लिये शिक्षा का एक आनंददायक साधन है। विशेष रूप से बच्चों के सीखने के लिये यह बहुत प्रभावी माध्यम साबित हो रहा है क्योंकि मौलिक ऑडियो-वीडियो सुविधा बच्चे के मस्तिष्क में संज्ञानात्मक तत्त्वों में वृद्धि करती है, बच्चों में जागरूकता, विषय के प्रति रोचकता, उत्साह और मनोरंजन की भावना बनी रहती है। वे सामान्य की अपेक्षा अधिक तेज़ी से सीखते हैं।

डिजिटल लर्निंग में शामिल INFO-TAINMENT संयोजन इसे हमारे जीवन एवं परिवेश के लिये और अधिक व्यावहारिक एवं स्वीकार्य बनाता है।

डिजिटल लर्निंग को छात्र एक लचीले विकल्प के रूप में देखते हैं जो उन्हें अपने समय और गति के अनुसार अध्ययन करने की अनुमति देता है। शिक्षकों को भी तकनीकी के सहयोग से अपनी अध्यापन योजना को बेहतर बनाने में सुविधा होती है, साथ ही नवाचार एवं नए विचारों के समावेशन से वे छात्रों को और अधिक प्रभावी ढंग से प्रशिक्षित भी कर पाते हैं।

शिक्षण में तकनीकी के प्रवेश से यह एनीमेशन, गैमिफिकेशन और विस्तृत ऑडियो-विजुअल प्रभावों के मिश्रण के साथ और अधिक प्रभावी एवं तेज़ी से ग्रहण करने योग्य हो जाता है।

बीज शब्द : भूमंडलीकरण, डिजिटल, सामाजिक, समावेश, शिक्षण, ऑनलाइन, उपकरण

प्रस्तावना - आज के तकनीकी युग में शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन एक अपरिहार्य प्रवृत्ति बन रही है। आधुनिक तकनीकी संसाधनों का अनुप्रयोग न केवल शिक्षण गतिविधियों को अनुकूलित करता है बल्कि शिक्षकों, छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों को व्यावहारिक लाभ भी पहुँचाता है। पूर्व में कोठरी आयोग ने कक्षा के अतिरिक्तपक्षों का महत्व नहीं दिया था। उन्होंने कहा था कि "भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है।"[2] लेकिन कोविड 19 के दौरान डिजिटल शिक्षा का उपयोग भारत में तेजी से विकास में आया। इस शोध पत्र के माध्यम से शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए अवधारणा, लाभ, वर्तमान स्थिति और समाधानों पर गहराई से विश्लेषण किया गया है।

शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन : शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन शिक्षण, सीखने और शैक्षिक प्रबंधन गतिविधियों में डिजिटल तकनीकों को लागू करने की प्रक्रिया है। इसमें शिक्षण विधियों में सुधार, सीखने के सहायक उपकरणों को उन्नत करना और छात्रों के सीखने के अनुभवों को बढ़ाना, साथ ही प्रशिक्षण में शामिल लोगों को भी शामिल करना शामिल है।

डिजिटल परिवर्तन केवल शिक्षण सामग्री को डिजिटल बनाने या ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर सामग्री अपलोड करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह शिक्षा में नए दृष्टिकोण भी बनाता है। यह व्यक्तिगत शिक्षण पथ को सक्षम बनाता है, शिक्षकों और छात्रों के बीच बातचीत को बढ़ाता है, और स्कूल प्रबंधन की दक्षता को बढ़ाता है। यह एक लचीला, सुविधाजनक शिक्षण वातावरण बनाने में मदद करता है जहाँ छात्र कभी भी, कहीं भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा (ई-लर्निंग): कोर्सेरा, यूडेमी और एडएक्स जैसे प्लेटफॉर्म शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन के प्रमुख उदाहरण हैं। छात्र पारंपरिक कक्षाओं में भाग लेने की आवश्यकता के बिना लचीले तरीके से कभी भी, कहीं भी पाठ्यक्रम ले सकते हैं। ये प्लेटफॉर्म वीडियो व्याख्यान, असाइनमेंट और ऑनलाइन आकलन सहित सीखने के संसाधनों की एक पूरी श्रृंखला प्रदान करते हैं, जिससे शिक्षार्थी अपने अध्ययन के समय और स्थानों को लचीले

ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं और साथ ही अपने ज्ञान अवशोषण प्रक्रिया को अनुकूलित कर सकते हैं।

लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएमएस): गूगल क्लासरूम, मूडल, कैनवस और टीमहब एलएमएस जैसी प्रणालियां शिक्षकों को व्याख्यानों का प्रबंधन करने, छात्रों की प्रगति पर नज़र रखने और असाइनमेंट को प्रभावी ढंग से ऑनलाइन देने और ग्रेड देने की अनुमति देती हैं।

राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 'सभी चरणों में, प्रायोगिक आधारित अधिगम को अपनाया जाएगा, जिसमें अन्य चीज़ों के अलावा स्वयं करके सीखना और प्रत्येक विषय में कला और खेल को एकीकृत किया जाएगा, और कहानी-आधारित शिक्षण-शास्त्र को प्रत्येक विषय में एक मानक शिक्षण-शास्त्र के तौर पर देखा जाएगा। साथ ही विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज को प्रोत्साहित किया जाएगा। वर्तमान अधिगम प्रतिमान (लर्निंग आउटकम) और वांछनीय अधिगम परिणामों के बीच खाई को पाटने के लिए कुछ विषयों में कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में परिवर्तन होंगे, जहाँ भी उचित होगा वहाँ इन्हें दक्षता-आधारित अधिगम और शिक्षा की ओर उन्मुख किया जाएगा।"[3]

ई-पाठ्यपुस्तकें और डिजिटाइज्ड सामग्रीः पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों के बजाय, कई स्कूलों ने शिक्षण सामग्री को डिजिटाइज्ड किया है और उन्हें इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराया है। उदाहरणों में अमेज़ॅन किंडल और गूगल बुक्स शामिल हैं, जहाँ छात्र ऑनलाइन पढ़ सकते हैं या अध्ययन सामग्री डाउनलोड कर सकते हैं। इससे लागत बचती है और नई सामग्री को अपडेट करना आसान हो जाता है।

सीखने में सहायता करने वाले ऐपः क्विज़लेट और डुओलिंगो जैसे ऐप सीखने को ज़्यादा मज़ेदार और प्रभावी बनाने के लिए गेमिफिकेशन और ऑनलाइन अभ्यास का उपयोग करते हैं। ये ऐप, प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति के आधार पर वैयक्तिकृत करने की अपनी क्षमता के कारण, सीखने की प्रक्रिया को अनुकूलित करते हैं और निरंतर अभ्यास को प्रोत्साहित करते हैं।

ऑनलाइन बातचीत और सहयोग उपकरणः Google Classroom, Microsoft Teams और Zoom जैसे ऐप्स ने शिक्षकों और छात्रों के संवाद करने के तरीके को बदल दिया है, जिससे लचीले शिक्षण स्थान और आसान बातचीत का निर्माण हुआ है। ये उपकरण दस्तावेज़ साझा करने, ऑनलाइन पाठ और समूह चर्चा का समर्थन करते हैं, जिससे छात्रों को अलग-अलग स्थानों पर होने के बावजूद अधिक जुड़ा हुआ महसूस करने में मदद मिलती है।

आभासी वास्तविकता (वीआर) और संवर्धित वास्तविकता (एआर): इन प्रौद्योगिकियों को शिक्षण में एकीकृत किया गया है ताकि छात्रों को कठिन अवधारणाओं को अधिक स्पष्ट और सहज तरीके से समझने में मदद मिल सके।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंगः इन तकनीकों का उपयोग सीखने के डेटा का विश्लेषण करने, सीखने के रास्तों को निजीकृत करने और शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए किया जाता है। AI प्रत्येक छात्र के स्तर के आधार पर सीखने की सामग्री को समायोजित कर सकता है, उपयुक्तपाठ प्रदान कर सकता है और सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए अभ्यास सुझा सकता है।

ये उदाहरण दर्शाते हैं कि शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन न केवल शिक्षण विधियों को बेहतर बनाता है, बल्कि छात्रों के लिए अधिक लचीला और प्रभावी शिक्षण अनुभव भी प्रदान करता है।

शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन के लाभ : शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन से कई स्पष्ट लाभ मिलते हैं, शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता में वृद्धि होती है और साथ ही शैक्षिक प्रबंधन दक्षता में सुधार होता है। शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन के मुख्य लाभ नीचे दिए गए हैं:

शिक्षण और सीखने की दक्षता बढ़ानाः ई-लर्निंग, एआई और डिजिटल लर्निंग संसाधनों जैसे तकनीकी उपकरणों के उद्‌भव से शिक्षकों और छात्रों दोनों को आसानी से शिक्षण सामग्री तक पहुँचने में मदद मिलती है। इससे बातचीत बढ़ती है और शिक्षार्थियों की स्व-अध्ययन क्षमताओं को बढ़ावा मिलता है।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधारः डिजिटल परिवर्तन एक अधिक संवादात्मक, आकर्षक और प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाता है। यह शिक्षकों को नवीन और व्यक्तिगत शिक्षण विधियों का उपयोग करने में भी मदद करता है।

शिक्षा तक पहुँच का विस्तारः डिजिटल परिवर्तन छात्रों को ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म के माध्यम से कभी भी, कहीं भी ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। शिक्षार्थी अब भूगोल या समय तक सीमित नहीं हैं, खासकर दूरदराज के क्षेत्रों में या पारंपरिक स्कूली शिक्षा तक पहुँच के बिना। इससे शिक्षा तक पहुँच में समानता पैदा होती है, जिससे कई लोग बिना किसी व्यवधान के सीखना जारी रख पाते हैं।

सीखने के अनुभव को निजीकृत करनाः शिक्षा में प्रौद्योगिकी प्रत्येक शिक्षार्थी की ज़रूरतों और स्तरों के अनुरूप सीखने के कार्यक्रम बनाने की अनुमति देती है। स्मार्ट लर्निंग प्लेटफॉर्म और AI की बदौलत, शिक्षक छात्रों की सीखने की प्रगति की निगरानी कर सकते हैं और उसके अनुसार अध्ययन सामग्री को समायोजित कर सकते हैं। प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी गति से अध्ययन कर सकता है और उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है जिनमें उन्हें सुधार करने की आवश्यकता है, जिससे सीखने की प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

शैक्षिक लागत और संसाधनों का अनुकूलनः डिजिटल परिवर्तन मुद्रण, शिक्षण सामग्री और सुविधाओं से संबंधित लागतों को कम करता है। भौतिक दस्तावेजों को प्रिंट करने के बजाय, सभी व्याख्यान, पाठ्यपुस्तकें और असाइनमेंट ऑनलाइन साझा किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त शैक्षिक प्रबंधन सॉफ़्टवेयर ग्रेड, छात्र जानकारी और संबंधित प्रक्रियाओं के प्रबंधन जैसे कई प्रशासनिक कार्यों को स्वचालित करता है, जिससे समय और मानव संसाधनों की बचत होती है।

शिक्षण और सीखने में अन्तरक्रियाशीलता बढ़ानाः डिजिटल शिक्षण उपकरण अन्तरक्रियाशीलता के नए तरीके प्रदान करते हैं, जैसे वीडियो के माध्यम से सीखना, ऑनलाइन चर्चाएँ, या आभासी कक्षाओं में भाग लेना। ये तरीके न केवल सीखने को अधिक आनंददायक और गतिशील बनाते हैं बल्कि छात्रों की सक्रिय भागीदारी को भी प्रोत्साहित करते हैं। स्वचालित परीक्षण और मूल्यांकन का समर्थन करने वाला शिक्षण सॉफ़्टवेयर छात्रों को समय पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने में भी मदद करता है।

शिक्षकों और छात्रों के लिए डिजिटल कौशल में सुधारः डिजिटल परिवर्तन के दौरान, शिक्षक और छात्र दोनों डिजिटल उपकरणों से परिचित हो जाते हैं और उनका उपयोग करते हैं, जिससे डिजिटल युग के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल विकसित होते हैं। ये कौशल न केवल उन्हें बेहतर ढंग से पढ़ाने और सीखने में मदद करते हैं बल्कि भविष्य के काम और जीवन के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा में सहयोग और कनेक्शन को बढ़ानाः शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के बीच आसान कनेक्शन की सुविधा प्रदान करता है। Google Classroom, Microsoft Teams या LMS प्लेटफॉर्म जैसे ऑनलाइन सहयोग उपकरण किसी भी समय, कहीं भी जानकारी, दस्तावेज़ और बातचीत साझा करने की अनुमति देते हैं। यह एक खुला और सहायक शिक्षण वातावरण बनाने में मदद करता है।

शिक्षण और शैक्षिक प्रबंधन की गुणवत्ता में सुधारः शैक्षिक प्रबंधन में डेटा का उपयोग स्कूलों को सीखने के प्रदर्शन, सामान्य मुद्दों और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों का अवलोकन देता है। डेटा विश्लेषण तकनीकें पाठ्यक्रम को समायोजित करने और सटीक और प्रभावी तरीके से शिक्षण गुणवत्ता में सुधार करने के लिए समाधान प्रदान करती हैं।

डिजिटल शिक्षा में अवसर और संभावनाएं : शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन न केवल अल्पकालिक लाभ प्रदान करता है, बल्कि भविष्य के लिए कई अवसर और मजबूत विकास क्षमता भी खोलता है। तकनीकी रुझान और आधुनिक समाज की ज़रूरतें शिक्षा के डिजिटलीकरण को गति दे रही हैं, जिससे शैक्षणिक संस्थानों और तकनीकी कंपनियों के लिए लाभ उठाने के महत्वपूर्ण अवसर पैदा हो रहे हैं।

डिजिटल परिवर्तन एक मजबूत तकनीकी बुनियादी ढांचे के बिना नहीं हो सकता। डिजिटल प्लेटफॉर्म और इंटरनेट का विकास ऑनलाइन शिक्षा के विस्तार के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करता है। शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी बुनियादी ढांचे में निवेश और विकास करना महत्वपूर्ण है।

शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन के सबसे बड़े अवसरों में से एक सभी समूहों के लिए प्रौद्योगिकी तक पहुँच प्रदान करने की क्षमता है। न केवल शहरी छात्र बल्कि वंचित और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले छात्र भी सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से उन्नत तकनीकों तक पहुँच सकते हैं। स्मार्ट लर्निंग डिवाइस के साथ-साथ शिक्षकों और छात्रों के लिए डिजिटल कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना भौगोलिक और आर्थिक अंतर को पाटते हुए शिक्षण और सीखने की प्रभावशीलता को अधिकतम करने में मदद करता है।

डिजिटल सामग्री का विकास : शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन प्रक्रिया में शिक्षण सामग्री का डिजिटलीकरण एक आवश्यक प्रवृत्ति है। पारंपरिक मुद्रित पाठ्यपुस्तकों के बजाय, शिक्षण सामग्री को डिजिटल प्रारूपों में परिवर्तित किया जाता है जो छात्रों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए आसानी से सुलभ और अनुकूलन योग्य होते हैं। अवसर एक समृद्ध और विविध डिजिटल शिक्षण सामग्री भंडार विकसित करने में निहित है, जिससे छात्र कभी भी, कहीं भी अध्ययन कर सकें और शिक्षक प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पाठों को समायोजित कर सकें।

ऑनलाइन शिक्षण प्रणालियों का विकास : ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOC) तेज़ी से बढ़ रहे हैं। इससे लाखों छात्रों को भौगोलिक स्थान, अध्ययन समय या आर्थिक स्थितियों की बाध्यता के बिना उच्च-गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँचने के अवसर मिलते हैं। ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली न केवल छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती है बल्कि स्व-अध्ययन कौशल, स्वतंत्र सोच और ऑनलाइन टीमवर्क भी विकसित करती है।

नए शैक्षिक मॉडल बनाना : शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन से नए शैक्षिक मॉडल विकसित करने की संभावना खुलती है, जैसे कि मिश्रित शिक्षा, व्यक्तिगत शिक्षा या परियोजना-आधारित शिक्षा। ये मॉडल न केवल सामान्य शिक्षा के लिए बल्कि उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए भी लागू होते हैं, जो शिक्षण विधियों में नवाचार को बढ़ावा देते हैं।

डिजिटल शिक्षण प्रक्रियाओं में प्रौद्योगिकी : शिक्षण प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने से न केवल समय की बचत होती है, बल्कि शिक्षकों और छात्रों के बीच बातचीत भी बढ़ती है। इंटरैक्टिव स्मार्टबोर्ड, मल्टीमीडिया लर्निंग सॉफ्टवेयर और मोबाइल ऐप जैसे उपकरण आकर्षक, इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभव बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) शिक्षकों को छात्रों के सीखने की प्रगति को आसानी से ट्रैक करने और उसके अनुसार पाठ सामग्री को समायोजित करने में मदद करते हैं।

डिजिटल शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का प्रयोग : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वैश्विक स्तर पर शिक्षा में क्रांति लाने वाली तकनीकों में से एक है। AI प्रत्येक छात्र के सीखने के डेटा का विश्लेषण करके और उनकी क्षमताओं से मेल खाने वाले सीखने के रास्तों की सिफारिश करके सीखने को वैयक्तिकृत करता है। AI-संचालित स्वचालित शिक्षण सहायता प्रणालियाँ छात्रों के सवालों का जवाब दे सकती हैं, अगले पाठ सुझा सकती हैं और यहाँ तक कि सीखने की प्रगति का आकलन भी कर सकती हैं। AI न केवल सीखने के अनुभव को बढ़ाता है बल्कि कक्षाओं के प्रबंधन में शिक्षकों पर बोझ भी कम करता है।

हितधारकों के बीच सहयोग :

शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन हितधारकों के बीच सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकता। स्कूलों, व्यवसायों, गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) और सरकारों को संसाधनों को एकत्रित करने, अनुभवों को साझा करने और उचित तकनीकी समाधानों को लागू करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। यह सहयोग न केवल डिजिटल परिवर्तन प्रक्रिया को गति देता है बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि इसका लाभ सभी को मिले।

शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना

एच.जी. बारनेट का मानना है कि, "नवाचार एक विचार व्यवहार अथवा वस्तु है, जो नवीन है और स्थापित स्वरूप से, गुणात्मक रूप से भिन्न है।"[4] डिजिटल युग की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले उन्नत शिक्षण विधियों को विकसित करने के लिए अनुसंधान और नवाचार महत्वपूर्ण हैं। डिजिटल शिक्षा से संबंधित अनुसंधान को प्रोत्साहित करना, शिक्षण और सीखने का समर्थन करने के लिए उपकरण विकसित करना, साथ ही स्कूल प्रबंधन विधियों में नवाचार, शिक्षा प्रणाली को अधिक लचीला, उन्नत और सामाजिक परिवर्तनों के अनुकूल बनाता है।

सरकार और संगठनों से समर्थन और निवेश

आधुनिक समय के सर्वोदयी विचारक श्रीमन्नारायण ने इस संबंध में कही है, "भारत की शिक्षा की पुनर्रचना जैसे महत्वपूर्ण कार्य में प्रत्येक स्तर पर अभिभावकों द्वारा सक्रिय रूप से भाग लेना एक आवश्यक कदम समझा जा रहा है। प्रारंभिक स्तर से ही माता-पिता को अपने बच्चों की उन्नति हेतु उचित ध्यान देना चाहिए। इसके लिए अध्यापक और अभिभावक में घनिष्ठ संबंध होना आवश्यक है। शैक्षिक संस्थाओं के प्रधानों को छात्रों के व्यवहार और अनुशासन के निर्माण के लिए अभिभावकों की सहायता लेनी चाहिए।"[5] डिजिटल परिवर्तन प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में सरकार और शैक्षिक संगठनों का मजबूत समर्थन एक महत्वपूर्ण कारक है। सरकार न केवल डिजिटल शिक्षा के विकास को प्रोत्साहित करने वाली नीतियां जारी करती है बल्कि तकनीकी बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी और मानव संसाधन प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण निवेश भी करती है। गैर-लाभकारी संगठन और प्रौद्योगिकी कंपनियां भी शैक्षणिक संस्थानों के लिए तकनीकी समाधान, वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करके योगदान देती हैं, जिससे शिक्षा में व्यापक डिजिटल परिवर्तन के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनती हैं।

डिजिटल शिक्षा में चुनौतियाँ और बाधाएँ

डिजिटल परिवर्तन से शिक्षा को मिलने वाले अनेक अवसरों और लाभों के बावजूद, कई चुनौतियाँ और बाधाएँ इसके पूर्ण कार्यान्वयन में बाधा डालती हैं। इस प्रक्रिया में बाधा डालने वाले प्रमुख कारक इस प्रकार हैं:

1. तकनीकी बुनियादी ढांचे में सीमाएँ
2. शिक्षकों और छात्रों में डिजिटल कौशल की कमी
3. परिवर्तन और अनुकूलन के प्रति अनिच्छा
4. उच्च प्रारंभिक निवेश लागत
5. डेटा सुरक्षा और गोपनीयता संबंधी चिंताएँ
6. डिजिटल शिक्षा तक असमान पहुँच
7. डिजिटल शिक्षण सामग्री की असंगत गुणवत्ता और सामग्री

डिजिटल शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना

मौलिक और सबसे महत्वपूर्ण समाधानों में से एक है शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन की भूमिका और महत्व के बारे में समाज में, खासकर शिक्षकों, छात्रों और शैक्षिक प्रशासकों के बीच जागरूकता बढ़ाना। यह डिजिटल उपकरणों को समझने से परे शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने में डिजिटल परिवर्तन द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों को पहचानने तक जाता है।

डिजिटल युग में शिक्षा में होने वाले बदलावों को उजागर करने के लिए मीडिया कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण सत्र व्यापक रूप से आयोजित किए जाने चाहिए। बेहतर शिक्षण प्रभावशीलता, अनुकूलित शैक्षिक प्रबंधन और दूरस्थ शिक्षा तक पहुँचने की क्षमता जैसे ठोस लाभों पर जोर देने से व्यक्तियों और संगठनों को अपने शिक्षण और पठन-पाठने की प्रक्रियाओं में प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

डिजिटल बुनियादी ढांचे का उन्नयन और विस्तार

शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन की सफलता के लिए डिजिटल बुनियादी ढांचा एक महत्वपूर्ण आधार है। निर्बाध शिक्षण और सीखने को सुनिश्चित करने के लिए हाई-स्पीड इंटरनेट नेटवर्क को अपग्रेड करने और कंप्यूटर और ऑनलाइन शिक्षण उपकरण प्रदान करने सहित डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश आवश्यक है।

स्कूलों, खास तौर पर दूरदराज के इलाकों में स्थित स्कूलों को डिजिटल उपकरणों से पूरी तरह लैस करने की जरूरत है ताकि छात्र और शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रमों में भाग ले सकें। सरकार और शैक्षिक संगठनों को वंचित क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विस्तार को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट नीतियों को लागू करना चाहिए, ताकि सभी क्षेत्रों में समान सीखने के अवसर सुनिश्चित हो सकें।

उच्च गुणवत्ता वाली डिजिटल सामग्री विकसित करना

ऑनलाइन शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता के लिए महत्वपूर्ण है। आधुनिक शिक्षण-आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण सामग्री को विकसित करने और डिजिटल बनाने में निवेश की आवश्यकता है। डिजिटल शिक्षण सामग्री विविध, समृद्ध और विभिन्न छात्र समूहों के अनुरूप होनी चाहिए। सीखने को अधिक आकर्षक और समझने में आसान बनाने के लिए वीडियो व्याख्यान, ऑनलाइन अभ्यास और इंटरैक्टिव सिमुलेशन जैसे संसाधनों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।

कानूनी ढांचे में सुधार और ऑनलाइन शिक्षण और शिक्षा प्रबंधन प्लेटफॉर्म विकसित करना

शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन के सुचारू और प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक मजबूत कानूनी ढांचा महत्वपूर्ण है। इस प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए, शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को नियंत्रित करने वाली नीतियों और विनियमों को विकसित और बेहतर बनाने की आवश्यकता है। अधिकारियों को सभी प्रतिभागियों के लिए निष्पक्षता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए छात्र डेटा उपयोग, व्यक्तिगत सूचना सुरक्षा और ऑनलाइन शिक्षण पर विनियमों पर विस्तृत दिशानिर्देश जारी करने चाहिए।

इसके अतिरिक्त शिक्षण और प्रबंधन प्रक्रियाओं को स्वचालित करने के लिए स्कूलों में शिक्षा प्रबंधन सॉफ्टवेयर का व्यापक रूप से उपयोग किया जाना चाहिए। ये सॉफ़्टवेयर सिस्टम छात्र डेटा को संग्रहीत और विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे शैक्षिक प्रबंधकों को सटीक और प्रभावी निर्णय लेने में मदद मिलती है। कानूनी ढांचे में सुधार और प्रबंधन सॉफ्टवेयर को लागू करने से एक पेशेवर, आधुनिक शैक्षिक वातावरण बनेगा, जो शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन का समर्थन करेगा।

ये समाधान एक लचीले और व्यापक शिक्षण वातावरण का निर्माण करने में मदद करते हैं जो डिजिटल युग में शिक्षण और सीखने का समर्थन करता है, साथ ही यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को आर्थिक या भौगोलिक परिस्थितियों की परवाह किए बिना डिजिटल शिक्षा तक पहुंच प्राप्त हो।

स्कूलों और शैक्षिक प्रबंधन संगठनों के लिए डिजिटल परिवर्तन के अनुप्रयोग

डिजिटल परिवर्तन केवल दस्तावेजों और वर्कफ्लो का डिजिटलीकरण नहीं है; यह शैक्षणिक संस्थानों और व्यवसायों के संचालन और प्रबंधन के तरीकों में भी गहरा बदलाव लाता है।

1. स्कूलों में आवेदन 2.शैक्षिक प्रबंधन संगठनों में अनुप्रयोग 3.ऑनलाइन लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएमएस) का उपयोग करना 4.शिक्षण के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग 5.डिजिटल सामग्री का विकास 6. शिक्षकों को प्रशिक्षण एवं सहायता प्रदान करना 7.डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित करना 8.सूचना सुरक्षा सुनिश्चित करना 9.कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग छात्रों की सीखने की प्रगति का विश्लेषण करने, प्रत्येक व्यक्तिकी ताकत और कमजोरियों का सटीक आकलन करने के लिए किया जा सकता है। इससे शिक्षकों को व्यक्तिगत प्रतिक्रिया देने और प्रत्येक छात्र के लिए अनुकूलित सीखने की योजनाएँ विकसित करने की सुविधा मिलती है।

प्रबंधन स्तर पर, एआई और बड़ा डेटा छात्रों के सीखने के रुझान की भविष्यवाणी करने में मदद कर सकता है, डेटा-संचालित और वैज्ञानिक शैक्षिक निर्णयों का समर्थन कर सकता है। शैक्षिक प्रशासक डेटा अंतर्दृष्टि के आधार पर संसाधन आवंटन को अनुकूलित कर सकते हैं और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं।

डिजिटल शिक्षण उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए शिक्षकों को पर्याप्त तकनीकी कौशल से लैस होना चाहिए। निरंतर प्रशिक्षण और सहायता से उन्हें नई शिक्षण विधियों में महारत हासिल करने में मदद मिलेगी, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा।

शिक्षा प्रबंधन प्रणाली को; शैक्षिक प्रबंधन को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करने में प्रशासनिक कर्मचारियों को प्रशिक्षित और सहायता भी करनी चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि प्रशासक डेटा-संचालित निर्णय ले सकें और संसाधनों का अनुकूलन कर सकें।

छात्रों और शिक्षकों को डिजिटल प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक सामग्री और ऑनलाइन संसाधनों का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करके एक आधुनिक शिक्षण वातावरण का निर्माण करने से ज्ञान तक पहुंच बढ़ती है और शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार होता है।

शैक्षिक प्रशासकों के लिए डिजिटल कौशल प्रशिक्षण को मजबूत करने से उनकी प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग से लागू करने और डेटा प्रबंधित करने की क्षमता भी बढ़ेगी, जिससे डिजिटल परिवर्तन के संदर्भ में कुशल शैक्षिक प्रबंधन सुनिश्चित होगा।

सूचना सुरक्षा उपायों की पहचान करना और उन्हें लागू करना सीखने के डेटा की सुरक्षा और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। साइबर सुरक्षा खतरों को रोकने के लिए डिजिटल लर्निंग सिस्टम फायरवॉल, डेटा एन्क्रिप्शन और दो-कारक प्रमाणीकरण समाधानों से लैस हैं।

सूचना सुरक्षा जागरूकता पर प्रशासकों और शिक्षकों को प्रशिक्षित करना, जिसमें संभावित जोखिमों का पता लगाना और उनका जवाब देना भी शामिल है, एक सुरक्षित और प्रभावी डिजिटल शिक्षा प्रणाली को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष : शिक्षण और अधिगम के ऑनलाइन उपाय निश्चित तौर पर प्रशंसा के पात्र हैं, लेकिन ऐसा तभी हो सकता है जब उन्हें उचित माध्यम से स्थापित किया जाए, स्पष्ट रूप से इन उपायों को फेस-टू-फेस शिक्षा की पद्धतियों के पूरक, समर्थन और प्रवर्धन के रूप में स्वीकार्य बनाया जाने पर बल दिया जाना चाहिये। निश्चित रूप से इस संदर्भ में शिक्षक-कक्षा आधारित शिक्षण से डिजिटल-शिक्षा तक के सफर में समय के साथ बहु-आयामी प्रयासों को संलग्नित किये जाने की आवश्यकता है।

शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन प्रबंधन प्रक्रियाओं को अनुकूलित करने और सूचना सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने में एक मुख्य कारक है। एलएमएस, एआई और डिजिटल सामग्री जैसी उन्नत तकनीकों का अनुप्रयोग न केवल एक लचीला और अत्यधिक इंटरैक्टिव शिक्षण वातावरण बनाता है, बल्कि डिजिटल युग में शैक्षिक प्रबंधन की दक्षता भी बढ़ाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शैक्षिक उन्मेश, के.हि.सं., आगरा, अंक 4 जुलाई-सितम्बर-2018, पृष्ठ 62
2. पाठक पी.डी., भारतीय शिक्षा व उसकी समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण 1991, पृष्ठ 32
3. राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020, प्रकाशक मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ 18
4. HG Barnett (1953) innovation: The basis of cultural change, Hill Book Company, Page 36
5. विश्वनाथ बिहारी लाल एवं त्रिपाठी डॉ. नरेश, शिक्षा में नवाचार-विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,पृष्ठ 63

शोध निर्देशक : डॉ रेशमा अंसारी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़

शोधार्थी, मैट्स विश्वविद्यालय , रायपुर छत्तीसगढ़
Mobile no. 9329826874
email: ratiramgarhewal@gmail.com

'कविता सबसे पहले और अंत में शब्द है' - अज्ञेय

पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच का द्वन्द्व

अच्चाम्मा अब्राहम

"उन सब किताबों को हम काबिले जब्ती समझते हैं कि जिन्हे पढ़कर बेटे बाप को खब्ती समझते हैं।"

(अकबर इलाहाबादी)

भारत के प्राचीन इतिहास में बुज़ुर्गों का सम्मान संस्कृति और परंपरा का एक खास आयाम होता था; जिसपर हर भारतीयों को गर्व होता था। प्राचीन समय में बुजुर्गो का आदर सम्मान उस समय की जीवन शैली की एक स्वाभाविक प्रक्रिया था। जिसे उस समय के हर युवा वर्ग बड़ी आसानी से अपनाता था और बुजुर्गो की सेवा का सौभाग्य मिलना भी वह अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता था। पूर्वजो द्वारा अर्जित उनके संपूर्ण जीवन का निचोड़ या उनका जो भी अच्छा या बुरा अनुभव होता है वह उनकी असली संपत्ति होती है। जो कि वह अपने बेटे और पोत्ते पोत्तियों को समर्पित करते थे। ताकि आने वाली पीढ़ी इस परंपरा को आगे बढ़ाये और उनके अंतिम समय में वे अपने आने वाली पीढ़ियों को इस ज्ञान को समर्पित करे। और ये परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी यूं ही चलती रहे। लेकिन वर्तमान समय में आधुनिकीकरण में हुए बदलाव ने संपूर्ण मानव जाति को हिला के रख दिया है। आधुनिकता में नये जमाने के अनुरूप चलने की होड़ है और जो इस तेज रफ्तार की जिंदगी में पीछे रह जाता है और उसे आगे आने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है।

प्राचीन सभ्यता और आधुनिक सभ्यता में उन्नति की प्रक्रिया में परंपरा और आधुनिकता का द्वन्द समान रू प से उपलब्ध हैं। जबकि यह जानते हुए भी कि परंपरा, सभ्यता के इतिहास की जीवन संपदा है, उस पर भावुक दृष्टि से रीझने की कोई आवश्यकता नहीं है। बल्कि अपनी बुद्धिमत्ता का प्रमाण देते हुए हमें उसे मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। वृद्ध हमारे समाज के लिए परंपरा का प्रतीक है। तो युवावर्ग आधुनिकता का प्रतीक है। परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व सामाजिक प्रक्रिया तो है और साथ ही साथ व्यक्तिगत प्रक्रिया भी है।

संपूर्ण विश्व में वृद्धों का वर्चस्व : हिन्दी साहित्य में ही नही और न ही भारतीय भाषाओ में अपितु संपूर्ण विश्व साहित्य का एक बहुत बड़ा हिस्सा वृद्ध पिता की सत्ता से टकराता जुझता और लड़ता है और कई बार लहूलुहान होता हुआ दिखाई पड़ता है। जिज्ञासा और प्रश्नाकूलता से लबरेज नचिकेता अपने वृद्ध पिता से शापित होता है। पिता वाजश्रवा अपने पुत्र नाचिकेता को शाप देता है - 'जा मैं तुझे यम को देता हूँ' यह सजा थी प्रश्न और शंका करने की। कि स्वतंत्र ढंग से सोचने की बाप से बुर्जुग से अर्थात् वृद्ध से अलग अपना मत रखने की। नाचिकेता जैसे तैसे यम तक पहुँचता है और आत्म जीवन तथा इच्छाओं के बारे में प्रश्न करता है। वृद्ध के सत्ता तंत्र से सीधे सीधे टकराने वाला कदाचित नचिकेता पहला व्यक्ति है। हिन्दी साहित्य के कथा सम्राट के रूप में जाने वाले मुंशी प्रेमचंद की कई रचनाएँ हैं जो कि वर्तमान सत्ता तंत्र से टकराती है। उनकी रचनाओं में वृद्धों के शोषण का चित्रण जिस प्रकार किया है कि वह आज भी हमारे वर्तमान समाज का ज्वलंत उदाहरण है। लेकिन आज का वर्तमान समाज इन बातों से अभी तक नही उभर पाया है। प्रेमचंद की औपन्यासिक रचना 'निर्मला' में वकील साहेब वृद्धावस्था में अपनी पुत्री की वय की लड़की निर्मला से शादी करते हैं। परिणामस्वरूप उसकी दुर्दशा तो होती ही है उनके पहले शादी के पुत्र मांसाराम की मृत्यु भी वकील साहेब की वृद्ध मानसिकता की वजह से होती है। बुढ़ा वकील अपनी शक्की और अड़ियल स्वभाव के कारण अपने बेटे मंसाराम पर संदेह करते हैं। उन्हे अपने बेटे पर संदेह है कि उसका निर्मला के साथ शारीरिक संबंध है। लेकिन बेटे मंसाराम को जब यह पता चलता है कि पिताजी उसपर शक कर रहे हैं कि उनकी नई माँ के साथ संबंध है तो उसका दिल बुरी तरह से टूट कर बिखर जाता है। उसे मानसिक तौर पर बड़ा आघात लगता है जिसे वह बदर्शत नही कर पाता है।

भारतीय लेखको में नागार्जुन और विदेशी लेखको में काफ्का : हिन्दी साहित्य की कहानियों में वृद्ध पितृ - तंत्र से टकराती या वृद्धों के मनमानी वर्चस्व पर कई कहानियाँ हैं। विदेशी लेखको में काफ्का की एक अत्यंत प्रसिद्ध रचना है -'पिता के नाम पर पत्र' जो उनकी मृत्यु के उपरांत

प्रकाशित हुई। ऐसा माना जाता है कि काफ्का की अधिकांश रचनाएँ उनकी निजी जिन्दगी है। उन्हीं के शब्दों में मेरी जिंदगी ही मेरा साहित्य है। 'पिता के नाम पत्र' में वे लिखते हैं - मेरे पालन पोषण पर आपका जो भयानक प्रभावशाली तरीका रहा है उसके प्रभाव ने मुझे एक पल भी चैन से नही रहने दिया। हमेशा गाली गलोच 'प्रताड़ना' तानाशाही ' और जहर उगलने वाली बातें और तिलमिला देने वाली हँसी और इस तरह के खौफनाक व्यवहार के बावजूद भी अगर बच्चा मर नही गया तो ताज्जुब की बात है या फिर यूँ कहिए, आपके दयालूपन का नतीजा है और आपकी दया के कारण ही उसे नया जीवन प्राप्त हुआ है। वरना तो राम नाम सत्य ही समझिए। जहाँ तक मेरे समझ की बात है तो मुझे ऐसा लगता था कि आप इस दुनिया के सर्वशक्तिमान व्यक्ति है जो कि अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए हर रोज कोई न कोई प्रसंग करते रहते हैं। मैं जिस भी दृष्टि से आपको देखता तो आप हमेशा महाविराट, महाबली और किसी भयंकर दैत्यकार से ही लगते थे। और बाद में जिंदगी भर हम सब एकजुट होकर आपके अत्याचार से जूझते रहे और लड़ते रहे। अगर मैं आपसे जान बचाकर घर से भाग गया होता तो मुझे सारा परिवार यहां तक कि माँ को भी छोड़ना पड़ता। मेरा सारा लेखन सिर्फ और सिर्फ आपको ही लेकर है।

नागार्जुन ने भी अपने पिता के चंठ और बदचलन स्वभाव को निर्भय होकर कई जगह पर लिखा है। माँ और चाची के प्यार के कारण वापस घर लौट आते। नागार्जुन ने अपनी वृद्धावस्था में आकर भी वृद्धों की आलोचना की है। उनकी यह आलोचना सड़ी-गली दकियानूसी परंपराएँ और अंधविश्वासी मान्यताएँ आदि वृद्धों के जरिये ही नयी पीढ़ी में छूत की बीमारी की तरह फैलती रहती है। भ्रष्टाचार के दबाव को दूर करने में उन्हें वृद्धों की नहीं, युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण लगती है। इसी शीर्षक से लिखे गए अपने निबंध मे उन्होंने लिखा है -'मेरी तो पक्की धारणा है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन भविष्य में हम नहीं कर पायेंगे जिनकी उम्र पचास पार गई है यानि मुझे स्पष्ट दिखता है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन नयी पीढ़ी ही करेगी।'

पुरानी रूढ़िवादी और दकियानूसी विचारों को प्रोत्साहन देने वाले शिक्षको से नागार्जुन को कोई उम्मीद नहीं है। वे मानते हैं कि नई पीढ़ियों के युवाओं को पुरानी पीढ़ी के शिक्षकों के प्रति न आदर भाव है और न ही सम्मान है। उनके प्रति उनकी श्रद्धा दिन प्रतिदिन कम होती महसूस होती है। परंतु यह नागार्जुन की मनोव्यथा का कारण नही है। नागार्जुन के शब्दों में - ' मैं इसे भावी युग के लिए बहुत बड़ा शुभ मानता हूँ। मेरी यह दृढ़ धारणा है कि युवकों के शिक्षक युवक ही हो सकते है। पुराने दिमाग वाले सिकुड़े हुए दिलवाले वयस्क (बुर्जुग) भला नौजवानों को क्या सिखलायेंगें।'

शिक्षक के बारे में नए विचार की स्थापना करते हुए नागार्जुन 'रहनुमा' शीर्षक निबंध में लिखते हैं - 'युवक छात्र वयोवृद्ध अध्यापक को अपने फेनिल श्रद्धा को ही दे सकेंगे। प्रीतिपूर्ण आंतरिक श्रद्धा तो वह उसी शिक्षक को देगा जो ऊबड़ खाबड़ जमीन में आगे आगे चल सकेगा जो शिब्य का गुरु भी होगा और सखा भी होगा।'जिस समय नागार्जुन गुरु को शिब्य का सखा होने की बात कह रहे थे उस समय में बड़े बड़े विद्वान और शिक्षाविद यह कहने में और अपनाने में संकोच का भाव रखते थे। पर वर्तमान समय में तो यह शिक्षण की नींव ही इसी पर टिकी हुई है। इसके बिना शिक्षण असंभव सा प्रतीत होता है। बुर्जुग और वृद्ध एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए सुप्रसिद्ध रचनाकार खलील जिब्रान कहते है-"तुम उन्हें अपना अनुराग दे सकते हो विचार नहीं/क्योंकि उनके पास उनके अपने विचार है/तुम अपनी काया को आवास दे सकते हो आत्मा को नही /क्योंकि उनकी आत्माएँ भविष्य के भवन में वास करती हैं / जहाँ तुम पहुँच नही सकते स्वप्न में भी नही / तुम उनकी तरह होने का प्रयास कर सकते हो/किन्तु उनको अपने जैसा बनाने का प्रयत्न मत करना /क्योंकि जीवन पीछे नही लौटता न ही अतीत के साथ ठहरता है।"

हिन्दी साहित्य में वृद्धो का विमर्श : साहित्य में वृद्धों का विमर्श एक महत्वपूर्ण शुरुआत है जो कि आने वाले समाज को नई दिशा और राह दिखा सकता है। यह तिरस्कारपूर्ण जीवन को एक नये जीवन देने का कार्य करता है। जो सब अत्याचार को देखकर भी गूंगे बहरे होते है। ऐसे पात्रों को वाणी मिल जाती है। और अपनी दबी हुई भावनाओं को व्यक्तकरने का एक सुनहरा माध्यम मिल जाता है। बुजुर्गो के साथ एक बड़ी विडम्बना यह है कि साहित्य और समाज में कहीं तिरस्कार के पात्र है तो कहीं मुख्य भूमिका के रू प में है। समाज में बदलते परिवर्तन और आर्थिक परिवर्तन

के कारण पारिवारिक रिश्तों में भी परिवर्तन होता है। परिवर्तन की इन मूल्यों को समझने के लिए साहित्य से बेहत्तर कोई दूसरा माध्यम नहीं है।

प्रेमचंद की कहानी 'बूढी काकी' की पात्र रूपा जो कि काकी की बहू है अपने द्वारा किये गये दुर्व्यवहार के लिये अपने मन ही मन शर्मिन्दा और ग्लानि से भर उठती है। भारत की आजादी के बाद हमारे समाज में उत्पन्न आर्थिक बदलाव और सामाजिक बदलाव के एक प्रमुख उदहारण है ' चीफ की दावत' कहानी में शामनाथ अपनी वृद्ध माँ के साथ तिरस्कृत व्यवहार करने के बाद भी रत्ती भर भी शर्मिन्दा महसूस नही करता है। हमारे भारतीय समाज में हर घर परिवार में समय के साथ यह रवैया बढ़ा है। मानवीय मूल्यों के गिरने के इस दौर में सेवा भाव, आत्म सम्मान, बुजुर्गो का आदर करना, उन्हें स्नेह करना जैसे महत्वपूर्ण मूल्य जो कि पारिवारिक जीवन के लिये महत्वपूर्ण है लुप्त होते जा रहे है।

समकालीन दौर में मूल्यों का अभाव : वर्तमान दौर में हमारे भारतीय समाज में मूल्यों का हनन तो हुआ है और साथ ही साथ कई प्रकार के मानसिक संघर्ष के कारण हम सब भी मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं। ऐसे में सहज है कि निजी सेवाओ में कार्य कर रहे युवा वर्ग भी तनाव मुक्त नही रह सकता ऐसे परिवेश में वह घर आकर शांति और सुकून चाहता है। पर ऐसी स्थिति में माता पिता अपने पुत्र की जो कि सुबह से गया हुआ है और शाम होने को आई है वे अपने पुत्र के आने की जिज्ञासा में अपना समय व्यतीत करते हैं और उसकी राह देखते रहते हैं। उनकी राह देखने की प्रक्रिया को और उनके स्नेह को पुत्र उनकी निजी जिंदगी में जबरदस्ती का दखलंदाज़ी समझते है। वे अपने माता पिता के स्नेह को उबाउ और हमेशा उनके कार्य में दखल देना समझते हैं। वे अपने माता पिता के प्यार को समझ ही नही लेते हैं। और यहीं से उनके विचारो और व्यवहारो का मतभेद शुरू हो जाता है। दोनों पीढियों का मूल्य और संघर्ष मे बड़ा अंतर होता है। पुरानी पीढ़ी के पास इतने सालों का अनुभवों का तर्जुबा होता है जिसके कारण वे अपनी नई पीढ़ी को उन अनुभवों को समझाकर उन्हें आगे बढने में मदद करना चाहते हैं। क्योंकि उनके समय में उनकी किसी ने भी मदद नहीं की जिससे उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा वह चाहता है कि आने वाली पीढी उन अनुभवों का लाभ पाकर अपने जीवन में उतारे ताकि उनको जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ा था वह इन नई पीढ़ियों को उन मुसीबतों का सामना न करना पड़े परंतु नई पीढ़ी उनके इस निःस्वार्थ स्नेह को दखलअंदाज़ी, अड़ियल और पुराने विचार वाले मानकर चलते है। यही बहस का कारण बनता है। समय कभी भी किसी भी पीढ़ी के लिये एक जैसा नही रहता है। इसमें हमेशा बदलाव आता है और बदलाव आता रहेगा।

निष्कर्ष : हमारी परंपरा को कायम रखते हुए और नई पीढी के अच्छे और मजबूत भविष्य के लिए यह बेहद जरूरी है कि वे एक दूसरे का सम्मन करते हुए अपनी आपसी समझदारी से किसी भी प्रकार के टकराव की स्थिति उत्पन्न न होने दे। और अगर टकराव हुई तो आपसी समझदारी से उसका हल निकालने का प्रयास करे। इसलिए नई पीढ़ी के लोगो का दायित्व है कि वे वृद्धों का आदर सम्मान करें क्योंकि उनके ही छात्र छाया में युवाओं का जीवन अच्छे आचरण एवं अनुशासित होता है। वृद्धों की वजह से ही हम अपनी संस्कृतियों और परंपराओ को समझ पाते है। अगर ये ही नही होंगे तो हमें हमारी परंपरा और संस्कृति से कौन अवगत करायेगा। हम अपने खुद के परिवार और बच्चों को कैसे अनुशासन एवं नियम पढ़ायेंगे या सिखा पायेंगे, इसलिए नई पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह वृद्धों का सम्मान करें और उनकी छात्र छाया में अपने आचरण और प्रतिभा को विकसित करें। वृद्धहीन समाज पूर्णरूप से असंतुलित और भंयकर होगा जो कि आने वाली पीढ़ी के लिए घातक साबित हो सकता है।

निशा माथुर की कविता इस संदर्भ में एक बेहतरीन कविता है -"चढता दरिया बनकर और उफन के गर पाना चाहे मंझिल कोई/देकर मशविरा तहजीब का,/ एक तर्जुबा बन जाते है हमारे बुजुर्ग/जब ये एहतराम होता है कि/कोई हमारा साथी रहनुमा भी नही /खुशियों की जिन्दगी में तब फलसफे बन जाते है हमारे बुर्जुग।"

संदर्भ ग्रन्थ

1. वृद्ध विमर्श : कथा आलोचना - डॉ शगुफ्ता नियाज
2. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्धावस्था का यथार्थ - डॉ अंकिता शर्मा
3. सोशल मिडिया

शोधार्थी, युनिवर्सिटी कॉलेज , तिरुवनन्तपुरम

भाषागत विशेषताएँ : कामतानाथ के कथा साहित्य के विशेष संदर्भ में

लक्ष्मी एस

भाषा विचारों का आदान - प्रदान करने का एक माध्यम है। यह एक संचार प्रणाली है। डॉ. श्याम सुन्दर दास के अनुसार - "भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली - भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है।"[1] भाषा जगत् के व्यवहार का मूल है। साहित्य के क्षेत्र में भी सफलता उसकी भाषा शैली पर आधारित है। कामतानाथ के कथा साहित्य में विभिन्न प्रकार की भाषा शैली दृष्टिगत होती है।

कामतानाथ समांतर कहानी आन्दोलन के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनका जन्म सन् 1934 को लखनउ के एक मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ। कहानी , उपन्यास , नाटक आदि साहित्य के विविध विधाओं में आप तूलिका चलाते हैं। उनके नौ कहानी संग्रह तथा छह उपन्यास हैं। पहल सम्मान, यशपाल सम्मान, महात्मा गाँधी सम्मान, आदि अनेक पुरस्कार प्राप्त हैं। कामतानाथ के कथा साहित्य में भाषा संप्रेषणीयता की दृष्टि से सरल, सहज और श्रेष्ठता सहित है। उनकी भाषा प्रवाहपूर्ण है। कामतानाथ के कथा साहित्य की भाषा आम आदमी की बोलचाल की भाषा है। जिसका प्रारंभ हिन्दी में प्रेमचद , कमलेश्वर , राजेंद्र यादव , भीष्मसाहनी और अमरकांत की भाषाओं से संबध है। उनके कथा साहित्य संबंधी भाषा की विशेषतायें निम्न प्रकार हैं -

प्रसंगानुकूल भाषा: प्रसंग के अनुसार भाषा का प्रयोग प्रसंगानुकूल भाषा में प्रमुख है। 'समुद्र तट पर खुलनेवाली खिड़की' उपन्यास में कामतानाथ ने संयत, सरल एंव प्रवाहपूर्ण भाषा के द्वारा प्रसंगानुकूल भाषा को इस उदाहरण से व्यक्त किया है - "सुबह अंधेरा रहते ही मेरी आँख खुल गयी। मैंने खिड़की से बाहर देखा। समुद्र तट पर सफेद घोडे दौड़ रहे थे। अनेक काली - काली मानव आकृतियाँ बीच पर इधर - उधर चलती - फिरती दिखायी दे रही थी। कौन लोग है, मुझे आशचर्य हुआ। तभी गैर से देखने पर समझ में आया। वे मल्लाह थे जो सुबह होने से पहले ही अपनी नावें लेकर समुद्र में मछलियाँ पकड़ने जा रहे थे। बल्लियों में नावों को फँसाकर, वे उन्हें कंधों पर उठाकर समुद्र तक ले जाते, तब उन्हें पानी में ठेलने का प्रयत्न करते। अंधेरे में उनकी काली आकृतियाँ भूत जैसी लग रही थी।"[2]

'ताश का खेल' कहानी की बातचीत इस प्रकार है जिनसे कामतानाथ की भाषा का यथार्थ प्रकट होता है। "मेरे यार इतना आसान नहीं है। परंतू मैं कामयाब हूँगा ज़रूर। अब कल मिलूँगा तो देखूँगा क्या हाल है। नींद तो साली को नहीं ही आएगी रातभर, बहुत सीरियस था मैं। कहा, आज आखिरी फैसला करना है। ग्यारह पैंतीस पर झाँसी मेल छूटती है। उस वक्तका समय है। मैं स्टेशन पर इंतज़ार करूँगा।"[3] इस प्रकार कामतानाथ के कथा साहित्य की भाषा पात्रों के अनुकूल है। पात्रों के संवादों में वाक्य सीधे सरल और गंभीर है।

चित्रात्मक भाषा : चित्रात्मक भाषा का अर्थ है किसी भी रचना पढ़ते समय उसमें घटित घटना का चित्र ऑखों के सामने उपस्थित हो जाना। कामतानाथ की भाषा के मुख्य गुण चित्रात्मकता है। कामतानाथ की कहानी और उपन्यास सभी रचनाओं में चित्रात्मकता गुण देख सकते हैं। जैसे : - 'समुद्र तट पर खुलनेवाली खिड़की' उपन्यास में नायक का दोस्त दीक्षित लीड़ा के साथ पर्यटन स्थल की सैर करने कोणार्क, सुवर्ण मंदिर जाते हैं। तब उनका वर्णन इस प्रकार करता है जिसे पढ़ते समय पाठकों के आँखों के सामने वैसा ही दृश्य उपस्थित होता है। - "मंदिर काफी बड़ा और सुंदर था। उसकी बाहरी दीवारों पर अच्छी नक्काशी की गयी थी। मिथुन मूर्तियों की भी कमी नहीं थी। छोटे - छोटे कई और मंदिर भी अंदर बने थे। जिनके अंदर भी देवी - देवताओं की प्रतिमाएँ थीं। आश्चर्य होता था कि इतनी ऊँचाई तक किस प्रकार यह मूर्तियाँ बनायी गयी होंगी। हाथ में शीश लिये श्रृंगार करते हुए यौवना की मूर्ति भी, जिसके अनेक चित्र अनेक स्थानों पर बने हुए थे। ताज्जुब की बात यह थी कि इन मूर्तियों पर समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। ऐसा लगता था जैसे यह अभी कुछ दिन पूर्व ही बनाई गयी हो।"[4]

'पिघलेगी बर्फ ' उपन्यास में तिब्बत देश के निसर्ग -

सौदर्य का वर्णन इस प्रकार है - ' पिछले तीन - चार दिनों ओर की वर्षा हुई थी। रुक - रुककर। दिन में भी और रात में भी। बादलों को यह आलम था कि दिन में भी अंधेरा बना रहता। लेकिन आज आकाश बिलकुल साफ था। आसमान, जितना वह हमें दिखाई दे रहा था, क्योंकि चारों ओर ऊँची - ऊँची पहाडियाँ और घने जंगल थे, तारों से भरा था। कृष्ण पक्ष की पूर्णिमा के दो - एक दिन पहले की रात थी। चाँद आकाश में बहुत साफ दिखाई दे रहा था । चारों और झींगुरों का तेज कर्कश स्वर गूँज रहा था।"[5] इसलिए वातावरण और पात्रों के एक से एक सशक्त चित्रों के उदाहरण होकर भाषा की चित्रात्मकता ने पात्र और परिवेश को जीवंत करने में सार्थक भूमिका निभाई है। पाठकों के मन में और लेखन कार्य के क्षेत्र में कामतानाथ की चित्रात्मक भाषा पूर्ण रूप से कामयाबी है।

शैली: शिल्प विधान में शैली को महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्यकार शैली के माध्यम से अपनी रचना को प्रभावशाली एंव आकर्षक बनाता है। भाषा भावाभिव्यक्ति का माध्यम है। उपन्यास की रचना में शैली का प्रयोग प्रमुख है। उपन्यास की शैली सरल होनी चाहिए। कामतानाथ के उपन्यास में शैली के विविध रूप शामिल हैं। आपके कथा साहित्य में रचना की विविध शैलियाँ दार्शनिय हैं। यथा : पूर्वदीप्ति शैली, संवाद शैली, और आत्मकथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली।

पूर्वदीप्ती शैली या फ्लैशबैक शैली उपन्यासों में बहुचर्चित रही है। 'फ्लैश' का अर्थ है प्रकाश और 'बैक' का अर्थ है पीछे अर्थात् पिछले जीवन को प्रकाशित करना है। पात्र की याद में बीते हुए घटनाओं को उभारकर उसे कथानक का रूप है। उसका रूपायण करते हैं कामतानाथ का उपन्यास 'पिघलेगी बर्फ' में नायक ने अपने परिवार के बारे में कहते वक्त पूर्वदीप्ति शैली स्वीकार की है - "बात बहुत पुरानी है। आज से लगभग साठ - आठ साल पहले की है। उस समय मेरी उम्र अठारह - उन्नीस साल की रही होगी। हम पंजाब के शहर लाहौर के एक पुराने मुहल्ले में रहते थे। मेरा बाप ज़रूर पंजाबी था लेकिन मेरी माँ पहाड़ी थी। उत्तर प्रदेश की तराई के पहाड़ों की नहीं बल्कि आसाम की पहाड़ियों में बसी खासिया जनजाति की। आप जानते होंगे कि खासिया और जयंतियाँ वहाँ की महत्वपूर्ण जनजातियाँ हैं। इन जातियों की औरतें बहुत खुबसूरत होती हैं। मेरी माँ भी बेइंतहा खुबसूरत थी। मेरे बाप को वहाँ कहाँ मिली या कैसे उनकी शादी हुई इस बारे में कुछ अधिकारपूर्वक कह पाना मेरे लिए है।"[6]

'वे दिन' कहानी में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है - "वे भी क्या दिन थे। सोचती हूँ , तो कलेजा मुँह को आता है। दुख क्या होता है, फिक्र किस चीज का नाम है , उस वक्त हमें पता भी ना था। ऊँची - ऊँची चहारवारियों से घिरा हुआ हमारा स्कूल था, जिसके हर कोने से रूमाल की बू आती थी। यूक्लिपटस के बड़े - बड़े पेड़ , अंगूर की बेल, फूलों की क्यारियाँ, नर्गिस और लिलि की कलियाँ, गुलाब के झाड और बड़ी - बड़ी मखमल जैसी घास । स्कूल क्या था , पूरा मुगल गार्डन्स का नमूना था।"[7] इस प्रकार कामतानाथ के उपन्यास और कहानियों में पूर्वदीप्ति या फ्लैशबैक शैली का ज़्यादातर प्रयोग हुए है।

संवाद शैली : साहित्य विधा में संवाद अत्यंत प्रधान है। संवाद के ज़रिए कथावस्तु का विकास , पात्रों का चरित्र - चित्रण, कथा - प्रवाह एवं रोचकता आदि व्यक्तकिए जाते हैं। कथा पात्रों के आधार पर भाषा और भावों की अभिव्यक्ति संवाद कहलाता है। छोटे - बड़े संवादों के माध्यम से कथा पात्र अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है।

'समुद्र तट पर खुलनेवाली खिड़की' उपन्यास में दीक्षित, पीटर और लीड़ा के बीच चल रहा संवाद जिसमें सूर्य मंदिर में बने रथ के पहिए को लेकर जीवन का मर्म स्पष्ट हुआ है - "रथ का पहिया, तुम जानती हो, दीक्षित से उसने कहा , जीवन को सिम्बेलाइज करता है। जैसे पहिया चलता रहता है, वैसे ही जीवन भी चलता रहता है। पहिया कितने ही जाने - अनजाने रास्तों से गुजरता है। वैसे ही जीवन भी।"[8] कामतानाथ के कथा साहित्य में संवादों के द्वारा पात्रों के चरित्र को प्रकाशित करने में पूरी सफलता प्राप्त है।

आत्मकथात्मक शैली : प्रथम पुरुष के रूप में कथावस्तु को आश्रय देकर उसी के द्वारा जब रचना को पूर्णता प्रदान जाती है तब प्रयुक्त शैली आत्म कथात्मक शैली कहलाती है। यह शैली डायरी शैली पर आधारित है। इस शैली में पात्र स्वयं 'मैं ' के रूप में उपस्थित होता है। अनुभूति की तीर्वता इस शैली में प्रमुख है। इनमें से प्रयुक्त कुछ उदाहरण इस प्रकार है - 'पिघलेगी बर्फ' उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का उदाहरण - "मैं पूरी तरह अपनी माँ पर गया था। मेरा मतलब देखने - सुनने में। इसलिए अक्सर ही लोग मुझे 'पहाड़ी' या 'नेपाली' कहकर बुलाते। बल्कि चिढ़ाते। मुझे

ऐसा लगता है कि मेरे बाप को भी इस बात में संदेह था कि मैं उसी का बेटा हूँ या नहीं। शायद वह ऐसा समझता था कि मेरी माँ की उसकी देशवाला कोई प्रेमी था जो चोरी - छिपे पंजाब आकर मेरी माँ से मिलता रहा होगा और मैं उसी की संतान हूँ। यह मेरा भ्रम भी हो सकता है। बहरहाल , इतना सच है कि मेरे बाप को मेरी माँ के प्रति कभी भी वह प्रेम नहीं जो साधारणतयः पति - पत्नी के बीच होता है बल्कि इसके विपरीत यह अक्सर ही उसे मारा पीटा करता।"[9] इसके अलावा 'बुजदिल' कहानी के यह उदाहरण - "मैं उन दिनों लखीमपुर में था। मेरे पिता वहाँ जेलर थे। जेल से ही मिला हुआ हमारा बंगला था। जिसमें हम सपरिवार रहते थे और कितने ही कैदी हमारे यहाँ - दिन - रात काम किया करते थे। जेल के पास का इलाका होने के कारण तथा मेरे पिता जेलर होने के कारण वहाँ मेरा अच्छा खासा रोब रहा करता था।"[10]

इसलिए कामतानाथ के कथा साहित्य में ज्यादातार आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है जो सूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्तिके लिए प्रयुक्तशैली प्रवाह पुर्ण है।

वर्णनात्मक शैली : वर्णनात्मक शैली में साहित्यकार कथा के सर्वमान्य रूप में वर्णन करता है। इस शैली कथा साहित्य में प्रयोग हो रहा है। विचारों की अभिव्यक्तिऔर क्रम व गति के मिश्रण इस शैली में अनिवार्य है। 'सुबह होने तक' उपन्यास में नायक भाई के तिलक का वर्णन वर्णनात्मक शैली द्वारा प्रस्तुत किया है -' तिलक में लगभग सारे मुहल्ले को आंमत्रित किया गया। पाँच तरह की मिठाई बनी। मकान को बिजली की झालरों से सजाया गया। सामने पार्क में शामियाना लगा। कुर्सी - मेज किराये पर मंगायी गयी। सुबह से ही लाउडस्पीकर पर फिल्मी गाने बजने लगे। कोई तीन - चार सौ आदमियों ने भोजन किया। घर के मेहमान तो खैर कई दिन पहले - से आ गये थे। गनीमत यह थी कि जाड़ा शुरू हो गया था। सब घर के अंतर कोने में इधर - उधर सिकुड - सिमटकर रह लेते। नहीं तो यदि गर्मी के दिन रहते तो घर में इतने लोगों के रहने की गुंजाइश भी नहीं थी।"[11] इससे स्पष्ट है कि कामतानाथ ने अपनी बात को अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

शब्द प्रयोग : भाषा की लघुतम इकाई शब्द है। शब्दों के योग से पद और पदों के योग से वाक्य बनते हैं। इसमें किसी सार्थक अर्थ की अभिव्यक्ति है। तत्सम, तद्भव, युग्मक, अरबी - फारसी - उर्दु, अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग और कहावतों का प्रयोग उनकी रचनाओं की मुख मुद्रा है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कामतानाथ के कथा साहित्य में भाषा सरल, सशक्त एवं शक्तिशाली है। खड़ीबोली के साथ - साथ अरबी, फारसी, उर्दू, और अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग, सहज भाषा का प्रयोग उन्होंने किया है। प्रसंगानुकूल भाषा और चित्रात्मक भाषा उनके साहित्य में है। विभिन्न प्रकार की शैली के प्रयोग से कामतानाथ साहित्य के क्षेत्र में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। भाषा की सहायता से उन्होंने पात्रों की मनःस्थिति की अभिव्यक्ति सफल ढंग से किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. 'रामदरर्श मिश्र के उपन्यास में सांसकृतिक चेतना', डॉ. गीता यादव, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2011, पृ. 20
2. 'समुद्र तट पर खुलनेवाली खिड़की', कामतानाथ, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ. 206
3. 'संपूर्ण कहानियाँ', कामतानाथ, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009. पृ.395
4. 'समुद्र तट पर खुलनेवाली खिड़की', कामतानाथ, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ. 150
5. 'पिघलेगी बर्फ', कामतानाथ, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2016, पृ. 9
6. 'संपूर्ण कहानियाँ', कामतानाथ, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009 पृ. 113
7. 'समुद्र तट पर खुलनेवाली खिड़की', कामतानाथ, भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण. 2015 पृ.207
8. 'पिघलेगी बर्फ', कामतानाथ, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्करण. 2016 पृ. 11
9. 'संपूर्ण कहानियाँ', कामतानाथ, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009 पृ.417
10. 'सुबह होने तक', कामतानाथ, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण. 2014. पृ. 250
11. वही. पृ.251

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
यूनीवर्सिटी कॉलेज
तिरुवनतपुरम

सोशल मीडिया पर हिंदी की संपर्क भाषा के रूप में भूमिका

रषीदा एन

(हिंदी पखवाडा समारोह 2025 के सिलसिले में Trivandrum TOLIC की ओर से आयोजित हिंदी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम श्रेणी पुरस्कार प्राप्त आलेख)

आज के समय में सोशल मीडिया हमारे दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। हम इसका उपयोग जानकारी प्राप्त करने, विचार साझा करने, मनोरंजन करने और दूसरों से जुड़ने के लिए करते हैं। इस डिजिटल दुनिया में भाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि भाषा ही संचार का मुख्य माध्यम है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जो विभिन्न भाषाओं के लोगों को जोड़ सके। हिंदी इस भूमिका को काफी हद तक निभाती है। सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी ने लोगों को जोड़ने, जानकारी फैलाने और सांस्कृतिक संवाद को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ भाषाई विविधता बहुत अधिक है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। अलग-अलग राज्यों में अलग भाषाएँ होने के कारण कभी-कभी संवाद स्थापित करना कठिन हो सकता है। ऐसे में हिंदी एक सेतु भाषा के रूप में सामने आती है जिसे देश के अधिकांश लोग समझते हैं और जिसके माध्यम से संवाद करना आसान हो जाता है।

सोशल मीडिया के विकास ने इस प्रक्रिया को और भी तेज़ कर दिया है। आज फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और अन्य प्लेटफर्मों पर हिंदी में बड़ी मात्रा में सामग्री उपलब्ध है। इससे लोग अपनी भाषा में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और अपने विचार आसानी से व्यक्तकर सकते हैं। इस प्रकार हिंदी डिजिटल युग में एक प्रभावी संपर्क भाषा बनती जा रही है।

संपर्क भाषा का अर्थ है, ऐसी भाषा जिसका उपयोग अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले लोग आपस में संवाद करने के लिए करते हैं। यह भाषा लोगों के बीच एक पुल की तरह काम करती है। भारत में हिंदी को इस प्रकार की भाषा के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि यह कई राज्यों में समझी जाती है और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने में सहायक होती है।

सोशल मीडिया के माध्यम से यह संपर्क और भी मजबूत हो गया है। अलग-अलग राज्यों के लोग हिंदी में पोस्ट लिखते हैं, वीडियो बनाते हैं और टिप्पणियाँ करते हैं। इससे विचारों का आदान-प्रदान आसान हो जाता है और लोग एक-दूसरे की संस्कृति और दृष्टिकोण को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में इंटरनेट और स्मार्टफोन के उपयोग में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। आज लगभग हर व्यक्तिके पास मोबाइल फोन है और वह सोशल मीडिया का उपयोग करता है। इसी कारण सोशल मीडिया संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है, जहाँ लोग तुरंत अपनी बात साझा कर सकते हैं।

इस डिजिटल विस्तार के साथ हिंदी सामग्री की मात्रा भी बढ़ी है। पहले सोशल मीडिया पर अधिकतर सामग्री अंग्रेजी में होती थी, लेकिन अब हिंदी में ब्लॉग, वीडियो और पोस्ट की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी डिजिटल दुनिया में अपनी मजबूत पहचान बना रही है।

सोशल मीडिया पर हिंदी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब देश के अलग-अलग राज्यों के लोग हिंदी में संवाद करते हैं, तो वे एक-दूसरे के विचारों और भावनाओं को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। इससे देश के विभिन्न हिस्सों के बीच संबंध मजबूत होते हैं।

किसी राष्ट्रीय घटना या संकट के समय हिंदी में दी गई जानकारी अधिक लोगों तक जल्दी पहुँचती है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक आपदा या महामारी के समय हिंदी में साझा की गई जानकारी लोगों को सतर्क और जागरूक बनाती

है। इस प्रकार हिंदी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है।

सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करने का माध्यम बनती है। लोग अलग-अलग राज्यों के त्योहारों, परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों को हिंदी में साझा करते हैं। इससे अन्य क्षेत्रों के लोग भी इन संस्कृतियों के बारे में जान पाते हैं और उनमें रुचि विकसित करते हैं।

इसके अलावा हिंदी कविता, शायरी और साहित्य सोशल मीडिया पर बहुत लोकप्रिय हैं। कई युवा लेखक और कलाकार अपनी रचनाएँ हिंदी में साझा करते हैं। इससे भारतीय संस्कृति और साहित्य को नया मंच मिलता है और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है।

आज सोशल मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कई शैक्षिक चैनल और शिक्षक हिंदी में वीडियो और सामग्री उपलब्ध कराते हैं। इससे उन छात्रों को विशेष लाभ मिलता है जो अंग्रेजी में सहज नहीं हैं या हिंदी माध्यम में पढ़ाई करते हैं। ग्रामीण और छोटे शहरों के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ है। वे अपने मोबाइल फोन के माध्यम से शिक्षा से जुड सकते हैं और नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार हिंदी शिक्षा को अधिक सुलभ और समावेशी बनाती है।

आज का युवा सोशल मीडिया पर बेहद सक्रिय है और वह अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए हिंदी का उपयोग करता है। ट्विटर, ब्लॉग, कमेंट और मीम्स के माध्यम से युवा अपनी रचनात्मकता दिखाते हैं और दूसरों के साथ जुड़ते हैं।

इसके साथ ही युवा लोग हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रण यानी हिंग्लिश का भी उपयोग करते हैं। इससे भाषा अधिक सहज और आधुनिक बन जाती है। इस प्रकार हिंदी युवाओं के लिए अपनी पहचान और विचारों को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है।

सोशल मीडिया का उपयोग अब व्यापार और विज्ञापन के लिए भी किया जा रहा है। कई छोटे व्यवसाय अपने उत्पार्दो और सेवाओं का प्रचार हिंदी में करते हैं ताकि वे अधिक लोगों तक पहुँच सकें। हिंदी में किया गया प्रचार अधिक प्रभावी होता है क्योंकि इसे अधिक लोग समझते हैं।

इसके अलावा डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट राइटिंग और सोशल मीडिया मैनेजमेंट जैसे क्षेत्रों में हिंदी जानने वाले लोगों की मांग बढ़ रही है। इससे रोजगार के नए अवसर भी पैदा हो रहे हैं और स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा मिल रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी पहुँचाने का महत्वपूर्ण साधन बन गया है। किसान कृषि से संबंधित नई तकनीकों, मौसम की जानकारी और सरकारी योजनाओं के बारे में हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इसके साथ ही रोजगार और शिक्षा से संबंधित जानकारी भी हिंदी के माध्यम से आसानी से पहुँचती है। इससे ग्रामीण समाज डिजिटल दुनिया से जुड़ रहा है और उनके जीवन स्तर में सुधार की संभावना बढ़ रही है।

सोशल मीडिया पर हिंदी सामाजिक आंदोलनों और जागरूकता अभियानों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब किसी सामाजिक मुद्दे पर हिंदी में अभियान चलाया जाता है, तो वह अधिक लोगों तक पहुँचता है और लोगों को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है।

उदाहरण के लिए, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और शिक्षा से संबंधित कई अभियान हिंदी में चलाए जाते हैं। इससे समाज में जागरूकता बढ़ती है और लोग सकारात्मक बदलाव के लिए प्रेरित होते हैं।

सोशल मीडिया ने लोकतंत्र को एक नया आयाम दिया है। अब हर व्यक्ति अपनी राय व्यक्त कर सकता है और सामाजिक या राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा कर सकता है। डिजिटल माध्यम से यह प्रक्रिया और भी व्यापक हो जाती है क्योंकि अधिक लोग इसमें भाग ले सकते हैं।

जब लोग अपनी भाषा में विचार व्यक्त करते हैं, तो वे अधिक आत्मविश्वास से संवाद करते हैं। इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया मजबूत होती है और समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज़ सामने आती है।

हालाँकि सोशल मीडिया पर हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण

है, लेकिन इसके कुछ चुनौतियाँ भी हैं। फेक न्यूज़ और भ्रामक जानकारी का प्रसार एक बड़ी समस्या है। कई बार लोग बिना सत्यापन के जानकारी साझा कर देते हैं, जिससे समाज में भ्रम पैदा हो सकता है।

इसके अलावा कभी-कभी भाषा की शुद्धता और मर्यादा का भी ध्यान नहीं रखा जाता। इसलिए सोशल मीडिया पर हिंदी का उपयोग करते समय जिम्मेदारी और सावधानी बरतना आवश्यक है। सही और विश्वसनीय जानकारी साझा करना बहुत महत्वपूर्ण है।

भविष्य में हिंदी की भूमिका और अधिक मजबूत हो सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि सोशल मीडिया पर अधिक गुणवत्तापूर्ण और ज्ञानवर्धक हिंदी सामग्री उपलब्ध कराई जाए। शैक्षिक संस्थानों और सरकारी संगठनों को भी हिंदी में डिजिटल सामग्री को बढ़ावा देना चाहिए।

इसके अलावा हमें हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का सम्मान बनाए रखना चाहिए। तकनीकी विकास, जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अनुवाद तकनीक, हिंदी को वैश्विक मंच पर और अधिक लोकप्रिय बना सकते हैं। इस प्रकार सही प्रयासों से हिंदी को एक सशक्त वैश्विक भाषा बनाया जा सकता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया के युग में हिंदी एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा के रूप में उभरकर सामने आई है। यह भाषा लोगों को जोड़ती है, जानकारी के प्रचार में मदद करती है और सांस्कृतिक संवाद को मजबूत बनाती है। यदि हम सोशल मीडिया पर हिंदी का सही और रचनात्मक उपयोग करें तथा गुणवत्तापूर्ण सामग्री साझा करें, तो हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो सकती है।

इस प्रकार हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक महत्वपूर्ण डिजिटल भाषा बन सकती है।

शिक्षक-छात्रा, बी.एड प्रशिक्षण केंद्र,
केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम

सृजन स्मरण

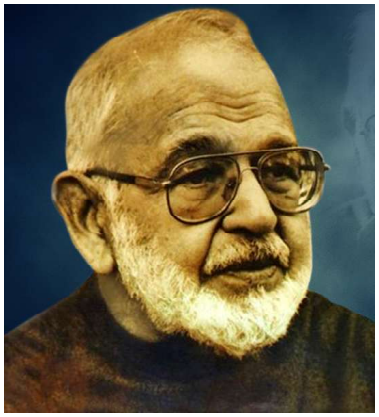

वाङ्मय महर्षि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(07/03/1911 - 04/04/1987)

श्रद्धांजलि

प्रोफ के तंकप्पन नायर

18/05/1935 - 04/03/2026

कथोलिकेट कॉलेज, पत्तनंतिट्टा के हिंदी विभाग और कोट्टयम के बसेलियस कॉलेज के हिंदी विभाग में पूर्व विभागाध्यक्ष रहे थे। तिरुवनंतपुरम शहर में तंपानूर के निवासी थे।

भारतीय नाटक और रंगमंच के लिए समर्पित एक व्यक्तित्व : प्रशांत नारायण

डॉ पी जे शिवकुमार

भारत के विभिन्न राज्यों में प्रतिभा संपन्न अनेक कलाकार हैं जो निःस्वार्थ भाव से नाटक और रंगमंच के विकास में कर्मशील हैं।सिनेमा की चकाचौंध में भी नाटक की अपनी निजी अस्मिता है।नाट्यकला को प्राणों से भी अधिक प्यार करनेवाले ,अपने कर्म के रूप में स्वीकार वाले कलाकार ही वास्तव में नाटक को जीवित रखते हैं। ऐसे कलाकारों में केरल के श्री प्रशांत नारायणन का महत्वपूर्ण स्थान है।करीब तीन दशकों के अपने नाट्य जीवन में उन्होंने साठ से अधिक नाटकों का निर्देशन किया एवं करीब पच्चीस पटकथा भी लिखी थी ।

कथकली कलाकार वेल्लायनी नारायणन नायर और शांता कुमारी अम्मा के पुत्र के रूप में सन् 1972 में उनका जन्म हुआ था। स्कूल की पढ़ाई के समय से ही उन्होंने नाटकों की रचना की एवं अभिनय का कार्य शुरू किया था।अपने पिताजी की मृत्यु के वार्षिक में प्रस्तुत करने के लिए 17 वर्ष की आयु में 'भारतांतं' नामक आट्टक्कथा लिखकर प्रस्तुत किया गया जिसमें पिता को नष्ट होनेवाले अश्वत्थामा को केंद्र पात्र बनाया गया। बाद में यूनिवर्सिटी कालेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। नाटक के प्रति विशेष रुचि के कारण स्कूल आफ ड्रामा की प्रवेश परीक्षा दी। उसमें प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रशांत को अपना कोर्स पूरा करने से ही पहले संस्था से बाहर जाना पड़ा। इसका कारण भी विचित्र था।मुख्य अध्यापकों में से एक द्वारा रचित किसी पुराण नाटक के विषय की आलोचना करना पहला कारण था और नाटककार के रूप में नाम कमाने में अध्यापकों की जो असहिष्णुता थी, वह दूसरा कारण बना।इन्हीं कारणों के फलस्वरूप उनकी यह अवस्था हुई थी। लेकिन 2003 में 'छायामुखी' नाटक की रचना के लिए संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार स्वीकार करके वे स्कूल ऑफ ड्रामा में चले गये। पहले जिस संस्था से निकाल दिया गया था, उसी संस्था में पूर्व छात्र को बड़ा सम्मान मिला। पुराने दुरनुभवों को, उन्हीं अध्यापकों के सामने खुलकर बताने वाले प्रशांत वहाँ पढ़ाने की इच्छा प्रकट करके ही चला गया था। बाद में उनकी यह इच्छा भी पूरी हुई है।

छायामुखी, मणिकर्णिका, तोप्पिक्कारन, अरच चरितम्, बलूणुकल्, जनालक्कप्पुरम्, वज्रमुखन, मकरध्वजन, चित्रलेखा, करा आदि करीब तीस नाटकों की उन्होंने रचना की थी। इसके साथ साथ करीब साठ नाटकों का निर्देशन भी किया। कर्नाटक सरकार के अनुरोध पर संस्कृत नाटककार भास कृत 'स्वप्नवासवदत्तम' नाटक का निर्देशन किया जो बहुत सफल रहा और नाट्य प्रेमियों की प्रशंसा प्राप्त की।सन् 2015 में तिरुवनंतपुरम में 'कळम्' नामक जिस नाटक संस्था की स्थापना हुई, वे उसके अध्यक्ष बने।

मलयालम के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता एम .टी .वासुदेवन नायर की नवति के आदर स्वरूप मलयाला मनोरमा द्वारा 22.12.23 में ऑनलाइन में कोच्चि में आयोजित 'एम. टी. कालं- नवति वंदनं' नामक कार्यक्रम में उनके साहित्य के कथापात्रों को पिरोकर प्रशांतजी ने 'महासागरम्' नामक कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। एम टी के नालुकेट्टु, इरट्टिन्टे आत्मावु, कुट्येडत्ति, वलर्तु मृगंगळ्, कालम्, मंजु, गोपुरा नडयिल, दया, रंडामूषम, वडक्कन वीरगाथा, निर्माल्यम्, असुरवित्तु आदि रचनाओं

के पात्रों को जुड़ाकर एम. टी. के लिए श्रद्धांजलि के रूप में इसे सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया।

एम. टी. वासुदेवन नायर के जीवन और कृतियों को जोड़कर उन्होंने देशाभिमानी नामक समाचार पत्र के लिए भी 'महासागरं' नामक कार्यक्रम का निर्देशन भी किया था। नाटकों में नए नए प्रयोगों पर उन्होंने हमेशा ध्यान रखा। पौराणिक कथाओं पर उनकी विशेष रु चि थी और इसी कारण से उनके अधिकांश नाटक पुराण कथाओं पर आधारित है।

मलयालम के सुप्रसिद्ध अभिनेत्ता मोहन लाल द्वारा भीम और दूसरे फिल्मी अभिनेता मुकेश द्वारा कीचक को प्रस्तुत करने वाले 'छायामुखी' नाटक बहुत प्रसिद्ध हुआ था। 'छायामुखी' महाभारत के भीम और कीचक की पौराणिक कथा पर आधारित है।महान अभिनेता मोहनलाल और मुकेश ने दोनों पात्रों की भूमिका बड़ी खूबी के साथ निभाई थी ।इसका संगीत और गीत की रचना भी प्रशांत ने खुद किया था।मलयालम सिनेमा के हास्य अभिनेता जगति श्रीकुमार को केंद्र में रखकर 'देवयानम' नामक पौराणिक नाटक की भी उन्होंने रचना की थी, पर उसका मंचन नहीं हो पाया। स्तंभलेखक, अध्यापक, पत्रकार, अभिनेता, नाटक रचयिता, निर्देशक आदि विभिन्न प्रकार से उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। रवीन्द्रनाथ टैगोर कृत 'तपालफीस' (डाक घर) शेक्सपीयर कृत हामलेट ,संस्कृत नाटककार भास कृत ऊरु भंगम, दूतघडोल्कचम, स्वप्नवासवदत्तम् आदि का निर्देशन उन्होंने किया। इनमें से 'स्वप्नवासवदत्तम्' कर्नाटक सरकार के निमंत्रण पर धारवाड के 'रंगाायणा' केलिए निर्देशन किया था ।

अपनी नाट्य प्रतिभा के अंगीकार के रूप में 2004 में उनको केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। इसके अलावा 2011 में दुर्गा दत्त पुरस्कार, 2015 में ए .पी .कलैकाट पुरस्कार, 2016 में अबुदाबी शक्तिपुरस्कार आदि भी प्राप्त हुए। अपने इक्यावन साल की अवस्था में 28.12.23 गुरुवार को फेफडों से सम्बंधित बीमारियों के कारण अचानक उनका निधन हो गया। पिछले तीन दशकों से भारतीय रंगमंच पर अपनी अमिट छाप छोड़कर उन्होंने हम से विदा ली। भारत भर के नाटक प्रेमियों ने और अन्य अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने इस प्रतिभावान कलाकार के निधन पर श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

डॉ .पी.जे.शिवकुमार
प्राचार्य, पी जी अध्ययन केंद्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा,केरल।

'हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारतमाता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।'
(डॉ ज़ाकिर हुसैन)

'अपनी अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिंदी को सामान्य भाषा के रूप में जानकर हम प्रांतीय भेदभाव नष्ट कर सकते हैं।'
(महायोगी अरविंद)

याखानविवरण

मानस कैलास

अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर

मूल : मंजु वेल्लायणि

अनुवाद : डॉ.रंजीत रविशैलम

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

डोलमा दर्रा के ऊपर बहुत ही कम समय ही यात्रीगण बिता पाते हैं। गाइड़ लोग इस संबंधी कडा निदेश बीच बीच में देते हैं। ज़्यादा देर तक वहाँ बैठने पर साँस लेने में भी दिक्कत होती है। रक्तचाप बढ़ने की संभावना भी रहती है। परिस्थिति प्रतिपल परिवर्तित होती रहती है। डोलमा दर्रा का ऊपरी भाग विशालकाय मैदान की तरह होता है। मध्यम भाग में पत्थरों का ढेर है और दर्रा के सामने के गिरिश्रृंग कैलास को ढक कर खडे हैं। कुछ जगहों पर खडे होने पर कैलास दृश्यगत होता है।

सूर्याश्व के खुरचाप लगते हिमश्रृंग, ऐरावत नाम्नी हाथी एवं चंद्र विहार करते श्रृंग। वर्षा से कालीन बिछाते सैकत।

हिमालय को प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न प्रकार से ही देखता है। घुसपैठिए एवं आतंकवादी जिस तरह देखते है उसी प्रकार योगी एवं संन्यासी गण नहीं देखते। बुद्धभिक्षुओं एवं विश्वासियों का यहाँ बोधप्राप्ति का आलय है। प्रेमविह्वल मनों के लिए यह श्रीपार्वती द्वारा प्रेमपरीक्षा उत्तीर्ण होने की अनुरागगिरि जैसा है। तपस्वियों को यह तपोवन है। यात्रियों के लिए यह है स्वर्ग की प्रतिलिपि। मोक्षार्थियों के लिए यह ध्यान मग्न गिरिमुख है।

कैलास को प्रणाम करने के बाद सूर्य-चंद्र नित्य प्रयाण प्रारंभ करते हैं। जैनों के लिए उनके ऋषभनाथ तीर्थंकर को मोक्ष प्राप्त होने का स्थान है कैलास।

डोलमा दर्रा से नीचे उतरने पर पंचदलपद्म की तरह पाँच ताल नज़र आते हैं। पार्वती के स्नान ताल। इन्हें गौरीकुण्ड कहा जाता है। भूमि की तरह अंडाकृति में है गौरीकुंड। आसमान से नीचे की ओर आ गिरी नीलमणि या सूरज की किरणें लगकर चमकता पुखराज जैसा लगता है। तिबत्त भाषा में गौरीकुंड का नाम तुक्जेसो है। उसका अर्थ करुणा का ताल है।

वात्सल्य सरोवर देखते ही रहने पर शब्द जम जाते हैं। ऐसे मौके पर ही पता चलता है कि साँसों को भूमि व स्वर्ग की भाषा स्वायत्त है। काले व भूरे रंग के पर्वतों की गोद में और सीने पर चिपके रहने पर हिम वश्यता के साथ हँसता और वाचाल भी हो जाता है। वे भाषाएँ मानव से बातें करने के लिए नदी के रूप में बहती हैं। कैलास एवं उपदेवताओं की तरह निकटस्थ पर्वतों का नमन करके किस ओर जाना है ऐसी सोच में पडे मेघ। मेघों के दीवार के उस पार आकाश और इस पार भूमि समझ आते हैं। ऐसा लगता है मानो आसमान की देहरी पर हम खडे हैं।

गौरीकुंड के पाँच तालों के आकार में अंतर है।

रंग में भी अंतर है। माना जाता है कैलास से अंतर्वाहिनी हो गौरीकुंड में तीर्थ आ पहुँचता है। शिवजी ने केवल पार्वती के लिए बनाया हुआ ताल। शिव की अंतरात्मा से झलकते विश्व प्रेम ही नवरत्नों के रंगों को अदला बदली करके धारण करते ताल। प्रेम के तोहफे के रूप में मानसरोवर प्रदान करते महेश्वर ने अपने भद्रपीठ के पास एक और उपहार दिया। मर्त्य हो या देव प्यार की चरमस्थिति में कुछ भी देने से मन नहीं भरता है।

जब प्रकृति ही कहती है भक्ति और प्रेम एक है तब उसकी सौंदर्य लहरी ग्रहण करने के लिए ही ऋषिलोग तपस्या करते हैं - हम ऐसे हम समझ लेते हैं। सर्वभयों के शीर्षमुकुट तहस नहस हो जाते हैं। सारे भुवनों को किसी कौतुक या खिलौने की तरह प्रकृति ने भय प्रदान किया है। ईश्वर सृष्टि में ऐसा कौन-सा है जिसको मृत्युभय छुआ तक नहीं? अग्नि जल से डरती है। विष अमृत से डरता है। ग्रीष्म वर्षा से, कुचिला मिश्री से या अंधेरा रोशनी से डरता है। काल भी ज़राजीर्ण होने लगता है। भविष्य एक ही क्षण में वर्तमान में व अगले ही क्षण में भूत के रूप में भी निपात होता है।

गौरीकुंड का पानी गंगा में अंतर्धारा की तरह जा पहुँचने की संकल्पना है। ऐसा लगता है कि कैलास, मानसरोवर और गौरीकुंड के सृष्टि कर्ता प्रपंच शिल्पि का दंडवत् प्रणाम करें। बौद्ध धर्मानुयायी का विश्वास है कि कैलास से अदृश्य मार्ग से दो हज़ार फुट ऊँचाई से शिवतीर्थ सरोवर में आ गिरता है। प्रथम सरोवर में गिरते पानी का अन्य सरोवरों में जा पहुँचने के भी गुप्त रास्ते हैं।

डोलमा दर्रे से उतरने पर शिखरों से पानी प्रवाह दिखने का नज़ारा हममें विस्मय भर देता है। पहली बार देखने पर पर्वतों के पार्श्व में पड़ते प्रकाश बिखरने जैसा ही लगेगा। शारीरिक थकावट एवं दीनता ग्रसित यात्रियों को ओजस्विता प्रदान करती दवा की तरह विभिन्न अद्‌भुत दृश्य प्रकृति ने तैयार कर रखी है। भूख, प्यास, समय सब कोई भूल जाता है। गाँव में होते तो इसके दस में एक प्रतिशत भी थकावट एवं भूख नहीं सहते।

दुग्धसागर में ऊँची लहरों की तरह हिमाच्छादित गिरिशृंग, धवल मेघ। वे भी कुछ गुफ्तगू कर हँस रहे हैं या संयुक्त रूप से ओंकार मंत्र का जाप कर रहे हैं?

देहाभिमान व मिथ्याभिमान को दूर हटाते कदम, उतार-चढाव, फेफडे व हृदय उसाँसें लेकर थकावट मिटाते वे लंबे घंटे, स्वयं के पाँवों पर अनुताप होने लगता है। पत्थर, काँटे एवं गंदगी पर रखे चरणाघात से दर्द लगे एवं अशुद्‌ध हुए पाँव जलते रेत में और अंगारे समेटे राख में अनजाने में ही ठोकर खाते तिलमिलाते पाँव, बद्रीनारायण के नमन करने हेतु नग्नपाद- से खडे होकर, उसमें ठडक एवं आग की असह्यता है, ऐसा अनुभव प्राप्त उस दर्शन की लंबी कतार। एक पल के स्पर्श से हिमयुग को अनुभूत कराती गोमुख की हिमशिलाएँ।

नंगे, निश्चल पाँव मानो केवल बिना पंख की पक्षी है। उसे चलनात्मक बनाती हैं इच्छाशक्ति, प्राणशक्ति एवं क्रिया शक्ति। इन शक्तियों का लालन-पालन करती पराशक्ति के आगे आँखें मूँदकर नमन करके खड़ा था। पलकों व रीढ को एक समान प्राण एवं त्राण प्रदान करती शिवशक्ति चेतना के बारे में सोचकर रोंगटे खडे हो जाए।

(क्रमशः)

आत्मकथा

देवयानम्

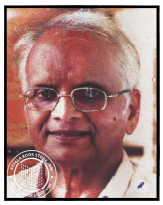

अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना

मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा

अठारहवाँ देवपद - अर्द्धविराम

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

1996 में केंद्र संगीत नाटक अकादमी के तत्वावधान में काशी में रस सिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र के बारे में सात दिन का एक गंभीर समारोह संगठित किया गया था। भारत के विविध विश्वविद्यालयों के बड़े महत्वपूर्ण पंडितों एवं व्यक्तित्वों ने उसमें भाग लेकर उसे गौरवान्वित कर दिया था। मुझे भी उस महत्वपूर्ण सम्मेलन के भाग बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। रस सिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र जैसे विषयों पर प्राचीन काल से ही विद्वानों के बीच में मत-भेद तथा चर्चाएँ होती थीं। स्वाभाविक ही है कि इस गोष्ठी में भी आचार्यों के बीच में गंभीर चर्चाएँ हुई थीं और उनके प्रबंध भी प्रस्तुत किए गए थे। संस्कृत के महान पंडित श्री भोजदेव के 'शृंगार प्रकाशं' शीर्षक ग्रंथ पर आधारित एक प्रबंध मैंने प्रस्तुत किया था। विश्वविद्यालयों के आचार्यों के सिवा केंद्र संगीत नाटक अकादमी से डॉ कपिला वात्स्यायन और डॉ प्रेमलता शर्मा भी इस सम्मेलन में उपस्थित थीं।

समारोह के लिए काशी जैसे पुण्य नगर में जाकर मुझे अपना कुछ वैयक्तिक लाभ भी हुआ था। मैंने पापनाशक पवित्र गंगा नदी के प्रवाह में स्नान कर अपने शरीर एवं मन को शांति प्रदान की थी; नदी-किनारे हिरण्य श्राद्ध कर अपने स्वर्गीय पूर्वजों का ऋण चुकाया था। भगवान काशी विश्वनाथ का दर्शन भी मैं ने ज़रूर किया था। सुप्रसिद्ध बनारस हिंदू विश्वविद्यालय जैसे सरस्वति मंदिर और भगवान बुद्ध की ज़िंदगी से जुड़े हुए पवित्र सारनाथ का भी दर्शन मैंने किया था। इन सभी अमूल्य एवं पावन अनुभूतियों को अपनी स्मृतियों के संपुट में मैंने सुरक्षित रखा है। विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के अध्यापक श्री के शशिकुमार की सहायता से ही मुझे ये सब सौभाग्य प्राप्त हुआ था। काशी के दूकानों में से कुछ बहुमूल्य पुस्तक, बनारसी साड़ियाँ और दुशाले भी मैंने खरीद लिए थे।

2003 मार्च के अंतिम दिनों में दिल्ली के हाबिटाट सेंटर में एक अंतर्देशीय सम्मेलन हुआ था। सात दिन के इस समारोह में भारतीय दर्शन, विज्ञान एवं संस्कृति पर आधृत चर्चाएँ हुई थीं; पाण्डित्यपूर्ण भाषण हुए थे। देश-विदेश के अतुलनीय आचार्यों एवं पंडितों का एक अपूर्व संगम था वह समारोह। इस सभा में केरल की वैदिक परंपरा के बारे में मैंने भाषण दिया था। इस समारोह का उद्घाटन केंद्र सरकार के मंत्री डॉ एम मुरली मनोहर जोशी ने किया था।

अपने वैयक्तिक तथा साहित्यिक जीवन की और एक प्रमुख घटना भी मेरे मन में हमेशा सजग है। वह इस प्रकार है - श्री पुरुषोत्तमानंद स्वामी के शिष्य थे श्री शांतानंदपुरी स्वामी। वे तो विख्यात थे। स्वामी जी के स्वर्गवासी हो जाने पर उनके शिष्यों ने मुझसे स्वामीजी के भागवत-संबंधी किसी ग्रंथ के अनुवाद करने का अनुरोध किया था। मैंने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली थी और वह ग्रंथ प्रकाशित भी हो गया था। श्री शांतानंदपुरि स्वामी अपने 'चातुर्मास्यव्रत' (चार महीने का व्रत) के लिए जब तिरुवण्णामलै (तमिल नाडु) के श्री रमणाश्रम में पधारे थे तब उन्होंने उस अनूदित पुस्तक का प्रकाशन किया था। उस प्रकाशन-कर्म में भाग लेने के लिए मैं भी आमंत्रित किया गया था। उस समय स्वामीजी ने अपने हाथों रेशमी कपड़ा पहना कर मेरा आदर किया था। यह अमूल्य उपहार और आदर मैं कभी न भूल सकता हूँ।

(क्रमशः)

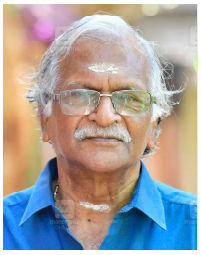

आत्मकथा

ज़िंदगी : एक लोलक

मूल : श्रीकुमारन तंपी

अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

शंकुच्चार तोनयक्काट्टु पहुँचा। कलरिक्कल घर में घुसे बिना बाहर इंतज़ार करके पिताजी से बात की। एक बार ही सही, हरिप्पाट्टु तक दोनों आ जाओ। फिर तो सबकुछ ठीक हो जायेंगे।

माँ का कभी न अंत होनेवाला दुख देखकर पिताजी भी एक रास्ते की ताक में थे। पिताजी ने अपने चाचाजी से कहा : भवानी को मण्णारशाला में एक चढ़ावा है। हम वहाँ जाकर आयेंगे।

तू पत्नी के सिरहाने का मंत्र सुनकर जाते हो तो जा। लेकिन बंटवारे का हिस्सा माँग कर इस ओर आना मत। पिताजी ने विनीत होकर कहा : मैं आऊँगा। अगर ऐसा है तो तू यहाँ और वह वहाँ।

इस तरह मां-बाप घर आए। माँ ने बिलकुल कहा : मेरे पति को मेरे साथ इधर रहना चाहिए। मेरी माँ की देखभाल के लिए सिर्फ मैं ही हूँ। दादी माँ ने पिताजी से कहा : उसका जीवन गुज़ारने की संपत्ति यहाँ है। कृष्ण पिल्लै को उनका देखभाल करके चलाना काफी है।

पिताजी ने कुछ समय के लिए उसका पालन किया। माँ गर्भवती हो गई। इसकी सूचना देने के लिए पिताजी अपने घर गए। चाचाजी से झगड़ा किया। फिर पिताजी शराब पीकर ही घर आए। माँ और दादी माँ की दुनिया अंधकारपूर्ण बन गया। मेरी माँ की दुनिया से इस अंधकार के दूर होने के लिए वर्षों की आवश्यकता थी। गणित का अध्ययन करते समय समांतर रेखाएँ अनंतता में ही मिल जायेंगी, यह सत्य मैं ने जाना।

सच है! करिंपालेत्तु भवानिक्कुट्टि तंकच्ची और कलरिक्कल कृष्णन 'ताउंकल्' रूपी कृष्णपिल्लै समांतर रेखाएँ थीं।

पाप नाशिनी

शादी के बाद करीब दो सालों के बाद ही भवानीकुट्टी तंकच्ची ने गर्भ धारण किया था।

क्यों रे , किट्टा, तेरी पत्नी अभी तक गर्भवती नहीं हुई क्या? ऐसा बडे चाचा पूछेंगे। पिताजी ने यह माता जी से बताया। माँ को प्राप्त यह दूसरा बड़ा आघात था।

चाचाओं से झगडा करते वक्त पिताजी शराब पीने में ही तसल्ली लेते थे। शराब पीना अत्यंत बुरा माननेवाले एक परिवार में जन्म लेकर पली एक स्त्री को शराब की गंध से युक्त एक पुरुष के साथ लेटने की स्थिति उत्पन्न होना कितना भयानक और दुखदायक होता है? यह अनुभव अपनी माँ और रिश्तेदानों से छुपाए रखने के लिए मेरी माँ ने पहले तो बहुत कठिनाई का सहन किया। लेकिन शराब का नशा नामक अवस्था तो छिपाकर रख पानेवाला नहीं है। हमेशा दूसरों को

जानकारी देना ही उसे आता है। इस तरह पिताजी के शराब पीने के बारे में सारे रिश्तेदार समझ गए। विषहारी चाचाजी पिताजी से बात ही न करते थे। मद्य-माँस तो दूर प्याज़ तक न खानेवाले थे वे। प्याज़ तो वनसंपत्तियों में माँस के समान है। यही विश्वास था।

अपना कोई आमदनी नहीं था, पिताजी की सारी जायदाद एक साथ पडने के कारण पैसे की रखवाली और खर्च पिताजी के बडे चाचा ही करते थे। वे तो अधिकार छोडने के लिए तैयार भी नहीं थे। बिना किसी चारा के होने की स्थिति में अपना अधिकार का प्रयोग पिताजी भी जताने लगे। दूर स्थित अहातों के नारियल के पेड़ों से पिताजी नारियल तुडवाते थे। विभिन्न वृक्षों में पसरे काली मिर्च की लताओं से पके हुए काली मिर्च तोड लेते। सारी कहानी जानने वाले पडोसी परिवार उसे कम दाम में खरीद कर बाज़ार में ले जाकर अधिक दाम पर बेचेंगे। पिताजी के बड़े भाई अच्युतन पिल्लै तो किसी में भी दाखिल न होकर जो खाने के लिए मिलता है, उसे खाकर कहीं भी सुकुडकर बैठ जाते थे। जैसे वे गुण के लिए भी नहीं और दोष के लिए नहीं। खाँसी ही उनको कभी न छोडनेवाला मित्र है। अधिक विशद जाँच करने या इलाज करने में ध्यान न देकर कलरिक्कल घर के सामने के एक ही कमरे के चावडी में वे अकेले रहे। आवश्यकता से अधिक धन होते हुए भी अच्छे कार्यों के लिए उसका उपयोग न करके इकट्टा करने का मनोविज्ञान क्या है? पिताजी के घरवालों के जीवन दर्शन क्या थे, यह मैं समझ न सका।

दादी माँ कुंञ्ञुकुट्टि तंकच्ची सारे मंदिरों में चढ़ावे अर्पित करती थीं। बेटी को माँ बननी चाहिए। दामाद का शराब पीना समाप्त होना चाहिए। यही दादी माँ की प्रार्थना थी। पिताजी बडे चाचा के विरोधों का तिरस्कार करके बीच बीच में हरिप्पाट्टु आते-जाते थे। चाचाजी की जानकारी के बिना अहातों से चुराकर लेनेवाली आमदनी से उन्होंने अपना खर्च चलाया। कभी माँ और दादी माँ के लिए कपडे खरीदते थे। गर्भवती हो जाने पर सातवें महीने में 'पुलिकुड़ि अड़ियंतिरं' (विशेष भोज) नामक एक रिवाज़ संपन्न करने की प्रथा उस समय थी। पति के रिश्तेदार गर्भवती को देने के लिए सोने के कंगना लायेंगे। इस मामले में पतिगृह की स्त्रियों को ही अग्रिम कदम उठाना है।

पुरुषाधिपत्य के चलते कलरिक्कल घर की स्त्रियाँ उसके बारे में सोची नहीं थीं। ज्येष्ठ बहन को ही इस कार्य में पहल लेनी चाहिए। पति विरह ने तो उनको एक मिनमिलिया प्रकृति (मूक प्राणी) बना दी गई। उनकी बेटी राजम्मा तब अठारह की उम्र पार कर चुकी थी। उनकी शादी भी हो चुकी थी। उनके पति पल्लिक्कल निवासी थे। वे भी कलरिक्कल घर में ही रहते है। बड़े चाचा को धिक्कारते हुए। मेरे पिताजी द्वारा किया जानेवाला हस्तक्षेप खोज निकालना, सही ढंग से उसे केंद्र में सूचना देना आदि ही पत्नी के घर में रहनेवाले नए दामाद के काम थे।

करिंबालेत्तु घर में पति के घरवालों के सहयोग के बिना ही भवानिक्कुट्टि तंकच्ची का विशेष भोज संपन्न हो गया। अपराध बोध से ही हो सकता है इस कर्म में भाग लेने को पिताजी भी नहीं आए।

(क्रमशः)

'मेरे लिए हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है'

- महात्मागाँधी

प्रश्नोत्तरी

डॉ. रंजीत रविशैलम

1. 'जीते जी इलाहाबाद' किसकी संस्मरणात्मक रचना है?
2. 'वर्ण रत्नाकर' के रचयिता कौन है?
3. रोटी जो मेरी जुबान पर है/यकीन मानिए महज मेरे झूठ की कमाई है - किसकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं?
4. 'गीले पंख' किसका काव्य संग्रह है?
5. रामेश्वर प्रसाद नारायण सिंह द्वारा रचित 'अंबपाली' किस धर्म से संबंधित प्रबंध काव्य है?
6. 'आचार्य राजशेखर कृत काव्यमीमांसा का आलोचनात्मक अध्ययन' किसकी कृति है?
7. 'मेपल' किसका काव्य संग्रह है?
8. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना किसने की?
9. 'चमचा पुराण' व्यंग्य रचना के रचनाकार कौन है?
10. 'कामधेनु' किसका निबंध संग्रह है?
11. 'स्वाधीनता के पथ पर' उपन्यास के रचयिता कौन है?
12. "द्विवेदी युग में हिंदी एकांकी के स्वरूप पर पाश्चात्य एकांकी का भी प्रभाव पड़ने लगा" - किसका वक्तव्य है?
13. 'बिशप्स केण्डिलस्टिकस' एकांकी का अनुवाद 'पुजारी' नाम से किसने किया?
14. 'शून्य जीवन के अकेले पृष्ट पर/ विरह अहद, कराहते इस शब्द को' - किसकी पंक्तियाँ है?
15. मानसिंह राही किस काव्यधारा के कवि थे?
16. 'संत सिपाही' किस सिख गुरु पर आधृत रचना है?
17. 'साहित्य सर्जना' किसका निबंध संग्रह है?
18. 'बगैर तराशे हुए' किस महिला रचनाकार का कहानी संग्रह है?
19. बेगाने रास्तों के मोड पर जब/ बिना बात के खोजने लगे मन - किसकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं?
20. 'चाँदनी का व्यापार' किसकी कविता है?

उत्तर

1. ममता कालिया
2. ज्योतिरीश्वर ठाकुर
3. गोविंद उपाध्याय
4. रामानंद दोषी
5. बौद्ध धर्म
6. श्रीमती किरण श्रीवास्तव
7. प्रभाकर माचवे
8. लार्ड मार्क्विस वेलेज़ली
9. डॉ हरिश्चंद्र वर्मा
10. कुबेरनाथ राय
11. गुरुदत्त
12. गणपति चंद्रगुप्त
13. श्री कामेश्वर नाथ भार्गव
14. सुमित्रानंदन पंत
15. प्रगतिशील
16. गुरु गोविंद सिंह
17. इलाचंद्र जोशी
18. सुधा अरोड़ा
19. राजेश्वरी पाँडे
20. केशवचंद्र वर्मा

केरल हिंदी प्रचार सभा के वार्षिक आम-सभा-सम्मेलन में मंत्री अधिवक्ता डॉ.मधु बी मुख्य भाषण दे रहे हैं।
(चिरयिनकीळु में स्थित श्रीचित्रा पब्लिक् स्कूल के सभागार में संपन्न)

सभागार में उपस्थित प्रचारक गण

आचार्य (बी.एड) प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षक छात्रों द्वारा आयोजित रंगारंग कार्यक्रम

RNI No. 7942/1966
Date of Publication :15-04-2026
Date of posting : 20th of Every month

KERAL JYOTI

APRIL 2026

Vol. No. 63, Issue No.01
Regn. No. KL/TV(S) 381/2025-2027
Price Rs. 40/-

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha approved for School Libraries by the Education Dept., Govt. of Kerala as per notification No. B-3 / 4036/83 SIE dated 20-9-1985
Approved by University of Kerala as per order No. Ac. A II / 1 / 31965 / Std. Journals/2013 / dtd : 27-6-2013

रंगारंग कार्यक्रम के विविध दृश्य

केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 के लिए मंत्री अ.व.डॉ.मधु बी द्वारा प्रकाशित, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 में मुद्रित डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन व डॉ.रंजीत रविशैलम द्वारा संपादित

Published by the Secretary, Adv. Dr. B. Madhu for Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014
Printed at Rashtravani Mudranalaya, Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014 & edited by Dr.M.S.Vinayachandran and Dr.Renjith Ravisailam